● वर्ष-3
● अंक-83
रायपुर, मंगलवार
14 नवंबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› घर की छत पर भूलकर भी न...

मुंगेली में पीएम का दावा, तीन दिसंबर को बन रही है छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार

कांग्रेस ने सिर्फ धोखा देने का काम किया है : पीएम मोदी

मुंगेली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कहा कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार के जाने की उलटी गिनती शुरू हो चुकी है। उन्होंने छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री पद के लिए ढाई-ढाई वर्ष के कांग्रेस के कथित फॉर्मूले को लेकर कहा कि जब ये लोग पार्टी के पुराने नेताओं से वादाखिलाफी कर सकते हैं तब इनका जनता से वादाखिलाफी करना तय है। प्रधानमंत्री छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले में एक चुनावी रैली को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने राज्य की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा और कहा कि इस चुनाव में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी हार रहे हैं। मोदी ने कहा, कांग्रेस में पुराने समर्पित लोग आज किनारे पर बैठे हैं। उनमें बहुत गुस्सा है। उनको लगता है कि उनके साथ धोखा हुआ है। जब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनी थी तब मुख्यमंत्री पद के लिए ढाई-ढाई साल का समझौता हुआ था..लेकिन पहले ढाई साल में ही मुख्यमंत्री जी ने इतना लूटा, इतना भ्रष्टाचार किया तथा लूट के पैसे का अंबार जमा कर दिया। जब ढाई साल पूरे होने का समय आया तब तिजोरी दिल्ली वालों के लिए खोल दी गई।

दिल्ली के नेताओं को खरीद लिया गया और समझौता धरा का धरा रह गया। उन्होंने कहा, आज कांग्रेस के पुराने लोगों में गुस्सा है और छत्तीसगढ़ का हर नागरिक मानता है कि पार्टी के भीतर इतना बड़ा धोखा हो सकता है, वादाखिलाफी हो सकती है तो

जनता के साथ वादाखिलाफी होना तय है। छत्तीसगढ़ में चर्चा थी कि कांग्रेस ने 2018 में सरकार बनने के दौरान मुख्यमंत्री पद के लिए भूपेश बघेल और वरिष्ठ नेता टीएस सिंहदेव के बीच ढाई-ढाई का फॉर्मूला तय किया था।

हालांकि, इस फॉर्मूले की कांग्रेस के किसी भी नेता ने पुष्टि नहीं की है। प्रधानमंत्री ने कहा, यहां के मुख्यमंत्री के 'सुपर सीएम' और उसके चहेते अफसरों ने जो जुल्म किया है उससे भी लोगों में नाराजगी है। उनके (मुख्यमंत्री के) बेटे ने 'सुपर सीएम' बनकर जो कारोबार चलाया है उसके कारण यह नौबत आ गई है कि यहां के मुख्यमंत्री का अब एमएलए बनना भी मुश्किल हो गया है।'' उन्होंने कहा कि पहले चरण के मतदान ने स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस का छत्तीसगढ़ से सफाया हो जाएगा। हर जगह यही गूंज सुनाई दे रही है कि तीन दिसंबर को भाजपा आने वाली है।

मोदी ने कहा, छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सत्ता से बाहर होने की उलटी गिनती शुरू हो गई है। पांच साल तक जनता को लूटने वाले कांग्रेस नेताओं की विदाई का समय आ गया है।'' उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेताओं को लोगों को बताना चाहिए कि महादेव सट्टेबाजी ऐप घोटाले से उन्हें कितना पैसा मिला। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस मोदी से इतनी नफरत करती है कि वह मोदी के नाम पर पूरे ओबीसी समुदाय को गाली देती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस वोट बैंक और तुष्टीकरण के लालच में कुछ भी कर सकती है।

मोदी ने कहा, ''कांग्रेस को मोदी से नफरत है। उन्हें मोदी की जाति से भी नफरत होने लगी है। पिछले कई महीनों से कांग्रेस मोदी के नाम पर पूरे ओबीसी समुदाय को गाली दे रही है। अदालत के निर्देश के बाद भी उसने माफी मांगने से इनकार कर दिया है। यह इस बात का उदाहरण है कि उनके मन में ओबीसी समुदाय के प्रति कितनी नफरत है।'' उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने बाबा साहेब अंबेडकर का अपमान किया और उनकी राजनीति को नष्ट करने की कोशिश की। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'अपराध मुक्त छत्तीसगढ़, दंगा मुक्त और अत्याचार मुक्त छत्तीसगढ़' भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की गारंटी है। मुंगेली उन 70 विधानसभा क्षेत्रों में शामिल है जहां 17 नवंबर को दूसरे चरण का मतदान होगा। 20 सीट पर पहले चरण का मतदान सात नवंबर को हुआ था। पीएम मोदी ने डबल इंजन की सरकार पर जोर दिया। जो वादे भाजपा ने अपने घोषणा पत्र में किए हैं। सरकार बनते ही उनको पूरा किया जाएगा। मोदी की गारंटी का मतलब है, गारंटी का पूरा होना। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज जब मैं मुंगेली आया हूं। महामाया माई की इस धरती पर आया हूं। तो पूरे छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के कुशासन की समाप्ति का जयघोष हो रहा है। ये जयघोष है पहले चरण में कांग्रेस पस्त, दूसरे चरण में कांग्रेस अस्त। प्रथम चरण के मतदान से ये स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस छत्तीसगढ़ से जा रही है।

भाजपा का आना और 30 टका वाले कक्का का जाना तय

महासमुंद/ रायपुर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को महासमुंद में विशाल आमसभा को संबोधित करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार का आना और 30 टका वाले कक्का का जाना तय है। कांग्रेस ने ढाई ढाई साल का एग्रीमेंट किया था। भूपेश बघेल ने लूट के पैसों से आलाकमान से सौदा कर ढाई साल और खरीद लिया।प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भूपेश बघेल के नाते रिश्तेदार ने सुपर सीएम बनकर छत्तीसगढ़ को बर्बाद कर दिया। छत्तीसगढ़ के लोग ऐसे भ्रष्टाचारियों को सबक सिखाएंगे।

गरीबों का आवास छीन लिया

प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीब विरोधी कांग्रेस सरकार ने गरीबों का पक्का मकान छीन लिया। भाजपा ने देश के गरीबों को 4 करोड़ मकान दिए। कांग्रेस की सरकार ने छत्तीसगढ़ के गरीबों को मकान नहीं मिलने दिए। उन्होंने कहा कि भ्रष्ट कांग्रेस सरकार के भ्रष्टाचारी अफ़सर जेल में बंद हैं और उन्हें जमानत तक नहीं मिल रही है। ये सिर्फ भ्रष्टाचार का मामला नहीं है। बहुत बड़ा अपराध है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यहां मौजूद लोगों से कहना चाहूंगा कि 508 करोड़ टाइप कीजिए महादेव सट्टा एप दिख जाएगा।पूरी दुनिया आज जान चुकी हैं। इन्होंने छत्तीसगढ़ को बदनाम कर दिया। 17 तारीख को कमल फूल पर बटन दबाकर भाजपा की सरकार बनाएं और भ्रष्टाचारियों की सरकार को उखाड़ कर फेंक दें। आप सभी को भाजपा सरकार के शपथ ग्रहण समारोह का न्यौता देने आया हूं।

पीएम मोदी ने भारत-चीन सीमा पर सैनिकों के साथ मनाई दिवाली

पीएम मोदी ने एक्स पर जवानों के साथ अपनी तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा, अपने बहादुर सुरक्षा बलों के साथ दिवाली मनाने के लिए हिमाचल प्रदेश के लेप्चा पहुंचे।जैतूनी हरे रंग की पोशाक पहने प्रधानमंत्री ने सैनिकों से बातचीत की।

2014 से पीएम मोदी जवानों के साथ दिवाली मनाने की अपनी परंपरा को निभाते आ रहे हैं.

मोदी के डर से भूपेश घोषणा घोटाला कर रहे हैं: प्रधान

रायपुर। केन्द्रीय शिक्षा और कौशल विकास मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने सोमवार को भाजपा कार्यालय एकात्म परिसर में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि अब तक घोटालों का रिकॉर्ड बना रहे भूपेश बघेल अब मोदी गारंटी से डर कर घोषणा घोटाला कर रहे हैं। महिलाओं का हर महीने पांच सौ रुपये खा जाने वाले अब रंग बदल रहे हैं। जब से देश में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है, लगातार नारी सशक्तिकरण के कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि करोड़ों शौचालय बनाकर मोदी सरकार ने नारी को सम्मान से जीने का अवसर प्रदान किया। मुस्लिम बहनों को तीन तलाक से मुक्ति दिलाई। संसद में 33 प्रतिशत नारी वंदन अधिनियम पारित कराकर उन्हें नेतृत्व का अवसर प्रदान किया।

केन्द्रीय मंत्री श्री प्रधान ने कहा कि छत्तीसगढ़ में भी भारतीय जनता पार्टी ने नारी को स्वावलंबी बनाने के लिए महतारी वंदन योजना का वादा अपने घोषणा पत्र में किया है। इसके तहत प्रत्येक विवाहित महिला को 12 हजार रुपए प्रति वर्ष प्रदान किए जाएंगे। किसी

भी घर में हर विवाहित महिला को इस योजना का लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए लगातार कार्य कर रही है।

भाजपा सरकार महतारी वंदन योजना में 5 वर्ष में लगभग 42000 करोड़ रुपए महिलाओं के खाते में डालेंगी। केन्द्रीय मंत्री श्री प्रधान ने कहा कि इस योजना को छत्तीसगढ़ की बेटियों का जबरदस्त प्रतिसाद मिल रहा है। वे लगातार ऑफलाइन और ऑनलाइन फॉर्म भरकर भारतीय जनता पार्टी कार्यालय में जमा कर रही हैं। कांग्रेस इससे घबरा गई है। उसके सारे नेता और प्रवक्ता मैदान में उतरकर इस योजना का विरोध कर रहे हैं। वह नहीं चाहते कि छत्तीसगढ़ की नारी मजबूत बने। उन्होंने कहा कि 3 दिन पहले कांग्रेस घोषणा पत्र समिति के संयोजक मोहम्मद अकबर ने पत्रकार वार्ता लेकर कहा कि ऐसी कोई योजना नहीं आने वाली। फिर कल मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने हड़बड़ाहट में बिना अपने नेताओं को विश्वास में लिए हमारी योजना की नकल करने की घोषणा की है। केन्द्रीय मंत्री श्री प्रधान ने कहा कि महिला स्वसहायता समूह के कर्ज माफ करने का वादा करने वाली कांग्रेस सरकार रेड्डी टू ईट का काम करने वाली बहनों से रोजगार छीनकर उन्हें आर्थिक रूप से कमजोर करके यह कार्य अपने चहेते ठेकेदार को दे दिया। केन्द्रीय मंत्री श्री प्रधान ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल मेरे कुछ प्रश्नों का उत्तर दें- 0 कांग्रेस ने 2018 के घोषणा पत्र में महिलाओं को 500 रुपए प्रतिमाह देने का वादा किया था उसे पूरा क्यों नहीं किया।

प्रमुख समाचार

सरकार और भाजपा युवाओं के सपनों को कुचल रही हैं: खरगे

नईदिल्ली। खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, जब प्रधानमंत्री तेलंगाना में (जनसभा में) बोल रहे थे, तो उस समय एक बहुत ही परेशान करने वाला दृश्य सामने आया। एक लड़की देश के सामने मौजूद

वास्तविक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए बिजली के खंभे पर चढ़ गई। उन्होंने दावा किया, युवा भारत मोदी सरकार के विश्वासघात से तंग आ चुका है। उन्होंने नौकरियों की आकांक्षा की, लेकिन बदले में उन्हें 45 साल की सबसे ऊंची बेरोजगारी दर मिली। वे आर्थिक सशक्तीकरण चाहते थे, लेकिन बदले में भाजपा ने कमरतोड़ महंगाई दी, जिससे उनकी बचत 47 साल के निचले स्तर पर आ गई है। खरगे ने कहा, युवा सामाजिक और आर्थिक न्याय के लिए उम्मीद कर रहे थे, लेकिन बदले में मोदी सरकार ने उन्हें लगातार बढ़ती आर्थिक असमानता दी। सबसे अमीर पांच प्रतिशत भारतीय नागरिकों के पास भारत की 60 प्रतिशत से अधिक संपत्ति है, जबकि मध्यम वर्ग और गरीब पीड़ित हैं। उन्होंने दावा किया कि मोदी सरकार में महिलाओं, बच्चों, दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के खिलाफ अपराध कई गुना बढ़ गए हैं।

सरकार बनी तो अयोध्या यात्रा की व्यवस्था करेंगे : अमित शाह

भोपाल। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को कहा कि अगर भाजपा मध्य प्रदेश में सत्ता बरकरार रखती है तो उनकी सरकार राज्य के

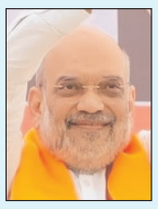

लोगों के लिए अयोध्या में राम मंदिर में दर्शन की व्यवस्था करेगी। विदिशा जिले की सिरोंज विधानसभा सीट पर एक रैली को संबोधित करते हुए शाह ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता अपने बेटे-बेटियों के कल्याण के लिए राजनीति में हैं। शाह ने कहा कि जब वह भाजपा अध्यक्ष थे तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी राम मंदिर निर्माण की तारीख पूछते थे। उन्होंने कहा, ''मैं कह रहा हूं कि 22 जनवरी 2024 को अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी।'' वरिष्ठ भाजपा नेता ने रैली में एकत्र लोगों से पूछा कि क्या वे भगवान राम के नवनिर्मित मंदिर में पूजा करने के वास्ते अयोध्या जाने के लिए पैसे खर्च करेंगे? उन्होंने कहा ''इसके लिए पैसे खर्च मत करो। यदि मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी तो वह धीरे-धीरे प्रदेश की जनता के लिए अयोध्या में भगवान राम के दर्शन की व्यवस्था करेगी।''उन्होंने कहा कि यह बात उनकी पार्टी के घोषणा पत्र में भी शामिल है।

गाजियाबाद की बैंक खाते में पाक हैंडलर ने भेजे 70 लाख

नईदिल्ली। बिहार के इजहार उल हुसैन कॉलिंग ऐप के जरिए पाकिस्तानी एजेंट के साथ संपर्क साधता था। खाते में जो रकम आई है उसे कई अन्य बैंक खातों में ट्रांसफर किया गया है जिसके बाद पुलिस इन एकाउंट्स की भी जांच में जुटी हुई है। वही इज़हारुल और रियाजुद्दीन दोनों यूपी एटीएस की गिरफ्त से बाहर है जिनकी तलाश में टीम में जुटी हुई है।उत्तर प्रदेश में आतंकी घटनाओं को रोकने के संबंध में एक बड़ा खुलासा हुआ है। पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान से राज्य में जमकर फंडिंग की जा रही है। उत्तर प्रदेश एटीएस ने इस संबंध में पुख्ता सबूत जमा किए हैं। उत्तर प्रदेश एटीएस ने एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश करते हुए यह भी पता किया है कि संदिग्ध आतंकियों को पाकिस्तान मुल्क से जबरदस्त फंडिंग की जा रही थी। इस बैंक अकाउंट में 1 महीने में 70 लाख रुपए की विदेशी फंडिंग हुई है। मार्च 2022 से अप्रैल 2022 के बीच 70 लाख रुपए ट्रांसफर किए गए थे। यूपी एटीएस को जांच पड़ताल में पता चला है कि केनरा बैंक का यह अकाउंट गाजियाबाद के रहने वाले रियाजुद्दीन के नाम पर है। इस अकाउंट का मोबाइल नंबर बिहार के चंपारण के रहने वाले इज़हारुल हुसैन के नंबर से लिंक है।

तृणमूल कांग्रेस के नेता की गोली मारकर हत्या

नईदिल्ली। पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले के जॉयनगर इलाके में सोमवार को

सुबह तृणमूल कांग्रेस के एक नेता की गोली मारकर हत्या कर दी गई, जिसके बाद भीड़ ने एक कथित हमलावर को पीट-पीटकर मार डाला। पुलिस ने यह जानकारी दी। उसने बताया कि गोली लगने के बाद लस्कर को नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद लस्कर के समर्थकों ने कथित हमलावरों में से एक को पकड़ लिया और पीट-पीटकर उसे मार डाला। मौके पर पहुंची पुलिस ने एक अन्य कथित हमलावर को बचा लिया और उसे गिरफ्तार कर लिया।लस्कर की पत्नी पंचायत प्रधान हैं। घटना के बाद इलाके में भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है। स्थानीय विधायक विश्वनाथ दास ने दावा किया कि हत्या के पीछे मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) समर्थित गुंडों का हाथ है। प्रत्यक्षदर्शियों और पुलिस ने कहा कि घटना के बाद पड़ोसी दलुआखाली गांव में कई घरों में तोड़फोड़ और लूटपाट की गई।

मणिपुर में पीएलए समेत कई पर लगाया 5 साल का बैन

नईदिल्ली। मणिपुर में काफी समय से जारी तनाव के बीच केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सोमवार को मैतेई चरमपंथी संगठनों पीपुल्स लिबरेशन आर्मी और इसकी राजनीतिक शाखा, रिवोल्यूशनरी पीपुल्स फ्रंट , यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रंट और इसकी आर्म विंग मणिपुर पीपुल्स आर्मी समेत कई को पांच साल की अवधि के लिए गैरकानूनी संगठन घोषित करते हुए बैन लगा दिया है.मणिपुर उस समय हिंसा की आग में जल उठा जब 3 मई को कुकी और मैतेई समुदाय के लोग आमने-सामने आ गए. हिंसा में अब तक 150 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है जबकि सैकड़ों की संख्या में लोग घायल हुए हैं.पीएलए, यूएनएलएफ, पीआरईपीएके, केसीपी, केवाइकेएल को कई साल पहले गैरकानूनी गतिविधियां अधिनियम 1967 के तहत गृह मंत्रालय की ओर से प्रतिबंधित घोषित किया गया था, जिसके बाद सरकार ने कार्रवाई करते हुए प्रतिबंध को पांच साल तक के लिए आगे बढ़ा दिया है. अपनी अधिसूचना में गृह मंत्रालय ने कहा है कि केंद्र सरकार की राय है कि यदि मैतेई चरमपंथी संगठनों पर तत्काल अंकुश नहीं लगाया गया तो वे अपने अलगाववादी, विध्वंसक, आतंकवादी और हिंसक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए अपने कैडरों को संगठित करने का अवसर तलाश सकते हैं.

संकट में अर्थव्यवस्था

सरकारी निवेश बनाम निजी निवेश और निर्यात

पी. चिदंबरम

हमारे यहां एक से एक अर्थशास्त्री हैं। बैंकों से जुड़े अर्थशास्त्री भी हैं। अगर इनमें से कुछ अर्थशास्त्रियों पर आप भरोसा करें, तो भारतीय अर्थव्यवस्था और इसके प्रबंधन में कुछ भी गलत नहीं है, बल्कि कभी भी गलत नहीं हो सकता। अगर आप बैंकों से जुड़े अर्थशास्त्रियों पर यकीन करें, तो भारतीय अर्थव्यवस्था शिखर पर है और सब कुछ ठीक है (जब तक कि रिजर्व बैंक इसके विपरीत कोई संकेत न दे)। काश, वे उतने ही सच्चे होते, जितने कि वे निष्ठावान हैं।

विगत एक अक्तूबर को हम इस सरकार के कार्यकाल के आखिरी छह महीने में पहुंच गए, जो 30 मई को केंद्र की सत्ता में अपने दस साल पूरे करेगी। आगामी अप्रैल और मई प्रशासनिक मोर्चे पर इस सरकार के लिए छुट्टियों की तरह होंगे। ऐसे में, देश की अर्थव्यवस्था की समीक्षा करने का यह एक अच्छा अवसर है।

भारत जैसे विकासशील देशों में दूसरे मानकों की तुलना में जीडीपी की वृद्धि दर देश के आर्थिक स्वास्थ्य को जांचने का सबसे बढ़िया पैमाना है। इसलिए मैं भाजपा के कार्यकाल के 10 साल की आर्थिक विकास दर से अपनी बात शुरू करता हूं। एनएसओ के आंकड़े के मुताबिक, इस सरकार के शुरुआती नौ साल में औसत आर्थिक विकास दर 5.7 फीसदी रही। वर्ष 2023-24 में सरकार का आकलन 6.5 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर का है, लिहाजा सरकार के दस काल की औसत आर्थिक विकास दर 5.8 फीसदी ठहरती है। इस वृद्धि दर की तुलना यूपीए-1 और यूपीए-2 के कार्यकाल में हासिल वृद्धि दर से करें।

यूपीए-1 में औसत आर्थिक विकास दर 8.5 फीसदी थी, जबकि दस साल की औसत विकास दर 7.5 फीसदी थी। कुछ अर्थशास्त्री भाजपा के कार्यकाल के दस साल में औसत आर्थिक विकास दर में 1.8 प्रतिशत की गिरावट को नगण्य बताकर खारिज कर देंगे। लेकिन यह

सरासर गलत होगा। वृद्धि दर में इस गिरावट का राष्ट्रीय सुरक्षा, ढांचागत खर्च, निवेश, रोजगार सृजन, कल्याणकारी कार्यक्रमों, प्रति परिवार उपभोग, बचत, गरीबी उन्मूलन तथा शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्रों में उन्नति के लिए उठाए जाने वाले कदमों पर भीषण असर पड़ता है।

दो मुख्य चिंता

लोगों के लिए जो दो मुख्य चिंताएं हैं, वे हैं महंगाई और बेरोजगारी। बढ़ती महंगाई के कारण देश के 10 फीसदी अमीरों को छोड़कर शेष जनता के लिए घर चलाना बहुत मुश्किल है। अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (नई शृंखला) जो 2013-14 में 112 थी, दिसंबर, 2022 में बढ़कर 174 हो चुकी थी। खाद्य मुद्रास्फीति 10 फीसदी के आसपास है। इसका तात्कालिक नतीजा है घरेलू उपभोग में कटौती। विभिन्न आय वर्गों के लोग या तो अपने खर्च घटा रहे हैं या फिर उनकी बचत में कमी आ रही है। परिवारों की कुल संपत्ति घटकर 5.1 फीसदी की तलहटी पर रह गई है।

एफएमसीजी कंपनियों ने अपनी ब्रांड वैल्यू बरकरार रखने के लिए उत्पादों की कीमत न घटाकर वजन घटा दिए हैं। दोपहियों की बिक्री में कमी सबसे बड़ा उदाहरण है कि महंगाई के कारण लोगों के उपभोग में किस तरह कमी आई है। चिंता का दूसरा कारण है बेरोजगारी। दावों के विपरीत, पिछले दस साल में लाखों रोजगार का सृजन नहीं हुआ है, न ही दो करोड़ नौकरियां देने का वादा पूरा किया गया है (ऐसे में, इसे चुनावी जुमला ही माना गया)।

आंकड़े बताते हैं कि पिछले दस वर्ष के दौरान एक वर्ष को छोड़कर हर साल बेरोजगारी की दर सात प्रतिशत से अधिक रही। स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया, 2023 रिपोर्ट के मुताबिक, स्नातकों में बेरोजगारी की दर 42 फीसदी है। वर्ष 2022 में 15 से 24 साल के युवाओं में बेरोजगारी की दर 23.22 प्रतिशत थी। आज अधिकतर रोजगार स्व-रोजगार (57 फीसदी) है। दैनिक मजदूरी वाले कर्मचारियों का आंकड़ा 24 फीसदी से घटकर 21 प्रतिशत रह गया है। सीएमआईई (सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकनॉमी) का आंकड़ा बताता है कि मौजूदा सरकार के कार्यकाल (2015-23) में सरकारी नौकरियों में 22 फीसदी की कमी आई है।

कांग्रेस सरकार में प्रदेश के 40 लाख लोग गरीबी रेखा से ऊपर : टीएस सिंहदेव

कोरबा। जैसे-जैसे मतदान तिथि नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे भाजपा और कांग्रेस अपना प्रचार अभियान करती जा रही है। दीपावली के दिन भी कांग्रेस का धुआंधार प्रचार अभियान जारी रहा। उपमुख्यमंत्री टीएस सिंह देव, वरिष्ठ कांग्रेस नेता शकील अहमद, हिमाचल प्रदेश की पूर्व शिक्षा मंत्री आशा सिंह देव ने रामानुजगंज विधानसभा के रामचंद्रपुर, चलगली और महाराजगंज में आम सभा को संबोधित किया।

सभा को संबोधित करते हुए टीएस सिंह देव ने कहा कि बीते पांच वर्ष में छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के सरकार की नीति सिद्धांत एवं योजनाओं के चलते नीति आयोग की रिपोर्ट में प्रदेश के 40 लाख लोग गरीबी रेखा के ऊपर उठे। यह पूरे प्रदेश के लिए गौरव की बात है। भूपेश बघेल सरकार के द्वारा समाज के सभी वर्गों के लिए कार्य किया गया है। कांग्रेस पार्टी का घोषणा पत्र समाज के सभी वर्गों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। उन्होंने कांग्रेस के पक्ष में मतदान करने की। दीपावली के अवसर पर उन्होंने महिलाओं के खाते में एकमुश्त 15,000 रुपये दिए जाने की योजना की भी बात कही। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी के द्वारा बहुत सोच समझकर एवं विशेषज्ञों से राय लेकर यह योजना लाई गई है।

कांग्रेस नेता शकील अहमद ने कहा कि कांग्रेस धर्मनिरपेक्ष पार्टी है। इसका मतलब यह नहीं कि हम किसी मजहब को नहीं मानते, हम मजहब को मानते हैं, लेकिन दूसरे के मजहब का सम्मान करते हैं। इस्लाम हमें सिखाता है कि हम जितनी इज्जत अपने धर्मगुरु की करते हैं, उतनी इज्जत दूसरे धर्म के भी गुरु की करनी है। इस्लाम हमें सिखाता है कि यदि आप भोजन कर रहे हैं तो पड़ोसी भूखे नहीं रहना चाहिए। यह नहीं कहता कि पड़ोसी का धर्म क्या है यह सिर्फ हमें मानवता की बात सिखाता है। देश में जब अमन शांति रहेगी तो विकास होगा। अंग्रेजों के द्वारा फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाई गई थी। देश में कुछ ऐसे लोग अंग्रेजों की नीति पर चल रहे हैं।

राजस्व मंत्री और कोरबा से कांग्रेस प्रत्याशी जयसिंह अग्रवाल ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए पार्टी की नीति और मौजूदा कार्यकाल के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सभी वर्ग के लिए सरकार के द्वारा काम किए गए हैं। इस बार पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में ग्रहणियों को 15000 रुपये वार्षिक सहायता देने के बिंदु को भी शामिल किया है। जय सिंह अग्रवाल ने बताया कि 2018 में की गईं 95त्न घोषणाएं पूरी की गई हैं। जबकि इस वर्ष के घोषणा पत्र में शिक्षा चिकित्सा से लेकर कई चीजे शामिल की गई। साथ ही ग्रहणियों को ध्यान में रखते हुए गृह लक्ष्मी योजना लॉन्च की गई है।

जय सिंह अग्रवाल ने बताया की कोरबा क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य पेयजल के लिए आवश्यक काम किए गए हैं और लगातार इनका उन्नयन किया जा रहा है। कोरबा कैसे सुंदर शहर बने इसके लिए आगे काम किया जाएगा। कोरबा में भाजपा ने क्या किया है, यह सब जनता जानती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री वंदन योजना को लेकर जो फार्म भरवाए जा रहे हैं, वह यहां-वहां मिल रहे है, जिससे योजना की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े होते हैं।

बलरामपुर के रामानुजगंज फोरेस्ट रेंज में हाथी के हमले से बुजुर्ग की मौत

बलरामपुर। रामानुजगंज फॉरेस्ट रेंज के गांव में एक परिवार की खुशियां दिवाली पर मातम में बदल गई। सुबह सुबह परिवार के एक बुजुर्ग को हाथी ने कुचल कर बेरहमी से मार डाला। जिससे पूरे इलाके में दहशत का माहौल है।

घटना बलरामपुर जिले के रामानुजगंज फॉरेस्ट रेंज की है। यहां हाथियों के हमले से ग्रामीणों की मौत और फसल नुकसान होना आम बात हो गई हैं। सोमवार को भी वन परिक्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत चाकी के रहने वाले बिफन भुइयां सुबह 5 बजे शौच के लिए निकले थे। वनांचल होने के कारण और छत्तीसगढ़ का न्यूनतम तापमान गिरने के कारण अब इलाके में ठंड पड़ने लगी है। जिससे कोहरा भी छाने लगा है। इसी दौरान एक दंतैल हाथी ने उस पर हमला कर दिया। बुजुर्ग, हाथी के सामने बेबस हो गया और अपनी जान नहीं बचा पाया। हाथी ने बुजुर्ग को पटककर मार डाला।

मृतक का बेटा ने कहा मेरे पिताजी सुबह 5 बजे शौच के लिए बाहर निकले थे। हाथी आया और उनको कुचल दिया। फोन से जानकारी मिलने के बाद हम मौके पर गए। उनको पोस्टमार्टम के लिए रामानुजगंज अस्पताल लेकर आए हैं। एक हाथी था।

घटना की जानकारी मिलने के बाद तुरंत मौके पर पहुंचे। पंचनामा कार्रवाई की गई है। आगे की कार्रवाई जारी है -पन्ना सिंह, फोरेस्ट दरोगा

हाथी के हमले से बुजुर्ग की मौत के बाद गांव में दहशत का माहौल है। इस क्षेत्र में बीते 4 महीने में अब तक तीन लोगों ने अपनी जान गंवा दी है। इससे पहले रामपुर के जंगल में मवेशियों को चराने गए चरवाहे को हाथियों ने कुचल कर मार डाला था। इसके अलावा हाथियों ने एक दूसरे मामले में घर की दीवार को ढहा दिया जिससे मलबे के नीचे दबने से एक व्यक्ति की मौत हो गई।

धनतेरस के दिन मरवाही के उषाढ़ बीट के गांव में हाथी ने किसान दंपती पर हमला कर दिया था। दोनों पति पत्नी धान की कटाई के बाद खलिहान में अपने फसल की देखरेख करने तंबू लगाकर रह रहे थे। इसी दौरान रात को दंतैल हाथी खलिहान में घुसा और उन पर हमला कर दिया। हाथी के हमले से किसान की मौके पर ही मौत हो गई। पत्नी को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया।

सरगुजा में कांग्रेस की 2018 की सीटों के मुकाबले हो सकती गिरावट

सरगुजा। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में सरगुजा प्रशासनिक प्रखंड में कांग्रेस के लिए 2018 का प्रदर्शन दोहराने की राह में आंतरिक कलह और सत्ता विरोधी लहर मुख्य बाधाएं हैं। पार्टी ने छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के बाद 2018 में पहली बार इस क्षेत्र की सभी 14 सीटों पर जीत हासिल की थी। इतनी बड़ी संख्या में सीटों पर जीत मिलने से राज्य में पार्टी द्वारा जीती गई सीटों की संख्या में भारी इजाफा हुआ था। कांग्रेस ने तब 90 में से 68 सीट जीती थीं और 15 वर्ष बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को राज्य की सत्ता से बाहर कर दिया था। एक विश्लेषक का मानना है कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव के बीच प्रतिद्वंद्विता पार्टी की संभावनाओं को नुकसान पहुंचा सकती है। दोनों इसी क्षेत्र से आते हैं।

सरगुजा संभाग में छह जिले- जशपुर, कोरिया, सूरजपुर, सरगुजा, बलरामपुर और नवगठित मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (एमसीबी) शामिल हैं। इन छह जिलों में जशपुर जिले में

कुनकुरी, पत्थलगांव और जशपुर, सरगुजा जिले में अंबिकापुर, लुंड्रा और सीतापुर, बलरामपुर जिले में प्रतापपुर, रामानुगंज और सामरी, सूरजपुर जिले में प्रेमनगर और भटगांव, कोरिया जिले में बैकुंठपुर और एमसीबी जिले में मनेंद्रगढ़ और भरतपुर-सोहनाट सहित कुल 14 विधानसभा सीट मौजूद हैं। इन सभी सीटों पर चुनाव के दूसरे चरण में 17 नवंबर को मतदान होगा।

नौ सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। राज्य के उत्तरी भाग में स्थित सरगुजा घने जंगलों और महत्वपूर्ण खनिज संसाधनों के लिए जाना जाता है। एक वक्त इसे नक्सल प्रभावित इलाका माना जाता था, लेकिन बाद में यहां शांति कायम करने में कामयाबी मिली। इस क्षेत्र की सीमा उत्तर में उत्तर प्रदेश, पश्चिम में मध्य प्रदेश और पूर्व में झारखंड से लगती है। वर्ष 2008 के चुनाव में भाजपा ने क्षेत्र की नौ और कांग्रेस ने पांच सीटें जीती थीं। वहीं, 2013 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और भाजपा को सात-सात सीटों पर जीत हासिल हुई थी। हालांकि, 2018 के चुनाव में भाजपा को सरगुजा संभाग की सभी सीटों पर हार का सामना करना पड़ा था। भूपेश बघेल के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार के तीन मंत्री-टीएस सिंहदेव, अमरजीत भगत और प्रेमसाय सिंह टेकाम सरगुजा संभाग से ताल्लुक रखते थे। टेकाम ने इस वर्ष जुलाई में मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया था। सिंहदेव ने कहा कि कांग्रेस निश्चित रूप से अधिकतर सीटों पर बढ़त बनाएगी। मुझे लगता है कि कांग्रेस को 10-11 से कम सीटें नहीं मिलेंगी। हालांकि, उन्होंने स्वीकार किया कि पार्टी को इस बार कुछ झटका लग सकता है। सिंहदेव ने कहा कि पिछली बार को छोड़कर कभी किसी ने 14 में से 14 सीटें नहीं जीतीं। आप हर वक्त तिहरा शतक नहीं जड़ सकते।

भाजपा पर आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप, कांग्रेस ने की शिकायत

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। कांग्रेस पार्टी की ओर से बीजेपी पर ये आरोप लगा है कि वो चुनाव को प्रभावित कर रही है और आदर्श आचार संहिता का खुलेआम उल्लंघन भी कर रही है। कांग्रेस की ओर से कहा गया कि बीजेपी के कार्यकर्ता कई वार्डों में जाकर महिलाओं से बीजेपी का महतारी वंदन योजना का फार्म भरवा रहे हैं। कांग्रेस का आरोप है कि बिना चुनाव हुए और सरकार बने इस तरह से योजना का फार्म भरवाना मतदाताओं को लुभाने का काम है।

आयोग से एक्शन की मांग- बीजेपी ने हाल ही अपना चुनावी घोषणापत्र जारी किया था। घोषणापत्र में बीजेपी ने ये ऐलान किया था कि जब उनकी सरकार बनेगी तो वो हर महिला को महतारी वंदन योजना के तहत 12 हजार की राशि उसके खाते में जमा कराएगी। अगर किसी घर में दो महिला है तो फिर उसके खाते में 24 हजार की राशि जमा होगी। कांग्रेस ने बीजेपी के फार्म भरवाने पर आपत्ति जताते हुए कहा कि चुनाव आयोग को इस पर कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। नगर पालिका अध्यक्ष प्रभा पटेल ने भी इसे खुलेआम आचार संहिता का उल्लंघन बताते हुए आयोग से एक्शन लेने की मांग की है।

आरोप प्रत्यारोप का दौर जारी- 17 नवंबर को होने वाले मतदान में अभी समय है। हार और जीत तो नतीजों के आने के बाद तय होंगे। जिस तरह से बीजेपी और कांग्रेस के नेता एक दूसरे पर आचार संहिता के उल्लंघन का आरोप प्रत्यारोप लगा रहे हैं वो फिलहाल तो रुकने वाला नहीं है। इतना जरूर है कि केंद्रीय चुनाव आयोग और राज्य निर्वाचन आयोग किसी भी मामले को हल्के में नहीं ले रहा है। बीजेपी पर जो ताजा आरोप लगे हैं अगर आयोग की नजर में सही पाए जाते है तो कार्रवाई जरूर होगी।

पाली-तानाखार से रामदयाल उइके कांग्रेस छोड़ बीजेपी में आए, तो तीसरे नंबर पर खिसके

पाली-तानाखार। अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए आरक्षित पाली-तानाखार सीट पर कांग्रेस वर्ष 2008 से कभी नहीं हारी। पहले दो चुनावों यानी वर्ष 2008 और वर्ष 2013 के विधानसभा चुनाव में रामदयाल उइके ने कांग्रेस के लिए यह सीट जीती। वर्ष 2018 में मोहित राम ने कांग्रेस के टिकट पर विजय पताका लहराया। इस चुनाव में 2,12,279 मतदाता वोटिंग के अधिकारी थे, लेकिन 1,73,560 वोटर्स ने ही अपने मताधिकार का प्रयोग किया। यहां 81.76 फीसदी वोटिंग हुई। इसमें से 38.59 फीसदी वोट पाकर मोहित राम क्षेत्र के विधायक बने। दूसरे नंबर पर जीजीपी के हीरासिंह मरकाम रहे, जिन्हें 33.02 फीसदी वोट मिले। वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में यहां दूसरे चरण में 17 नवंबर को मतदान होगा। इस बार बीजेपी ने एक बार फिर रामदयाल उइके को अपना उम्मीदवार बनाया है, जबकि कांग्रेस पार्टी ने दुलेश्वरी सीदर को उनके मुकाबले मैदान में उतारा है। पाली-तानाखार (एसटी) विधानसभा क्षेत्र पर इस बार 2,28,061 मतदाता पंजीकृत हैं। इनमें से 1,13,307 पुरुष वोटर हैं, जबकि 1,14,746 महिला मतदाता हैं। आठ वोटर थर्ड जेंडर यानी तृतीय लिंग के हैं। 18 से 19 वर्ष की आयु के 7,217 वोटर इस बार जुड़े हैं, जो पहली बार मतदान करेंगे। विधानसभा क्षेत्र में 80 साल से अधिक आयु के 2,584 वोटर हैं, जबकि दिव्यांग मतदाताओं की संख्या 2,029 है। इस विधानसभा क्षेत्र में पुरुष वोटर से ज्यादा महिला वोटर हैं। वोटर रेशियो 1013 है। बता दें कि वर्ष 2018 में जब चुनाव हुए, तो रामदयाल उइके कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हो गए। बीजेपी ने उन्हें टिकट दिया और वह कांग्रेस उम्मीदवार मोहित राम से चुनाव में पराजित हो गए। कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल होने वाले रामदयाल उइके इस बार तीसरे नंबर पर रहे। उन्हें 18.53 फीसदी वोट मिले। क्षेत्र के 2.95 फीसदी मतदाताओं ने नोटा दबाया। वोट की बात करें, तो मोहित राम को 66,971 वोट, हीरासिंह मरकाम को 57,315 और रामदयाल उइके को 32,155 वोट मिले। 5,128 लोगों ने नोटा दबाया।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

पंजीयन के दौरान हुई कार्रवाई, बड़ी संख्या में जब्त किए फॉर्म

कोरबा। भारतीय जनता पार्टी ने हर विवाहित महिला को प्रतिवर्ष 12,000 रुपये का प्रत्यक्ष लाभ देने के लिए प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना की घोषणा की है। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के बीच इसका व्यापक असर हो रहा है। दर्री के नागोईखार इलाके में योजना का पंजीयन किए जाने की खबर मिलने पर इसकी शिकायत कर दी गई। तहसीलदार ने मौके पर पहुंचकर प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना से संबंधित काफी फॉर्म जब्त किए हैं। इस मामले में किस तरह की कार्रवाई की गई है, इसे लेकर आधिकारिक बयान अभी नहीं आया है। विधानसभा चुनाव के मतदान के ठीक पहले अब राजनीतिक दलों के प्रत्याशी और उनके समर्थक एक दूसरे के खिलाफ मोर्चा खोलने में लगे हुए हैं। इसके अंतर्गत हर तरफ अवसर की तलाश की जा रही है। पिछले दिनों भाजपा के द्वारा घोषणा पत्र जारी किया गया, जिसमें कई बिंदु शामिल किए गए इसी में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना भी एक आयाम शामिल किया गया। इसके अंतर्गत हर परिवार की विवाहित महिलाओं को वर्ष में 12,000 रुपये का प्रत्यक्ष लाभ दिया जाना तय किया गया है।

दीवाली के दिन जगदलपुर के कबाड़ डंपयार्ड में भड़की आग

जगदलपुर। दीपावली त्यौहार के दिन जगदलपुर के बीच शहर स्थित कबाड़ डंपयार्ड में अचानक आग लग गई। आग की लपटों ने देखते ही देखते विकराल रूप ले लिया। जिसके बाद आसपास के इलाके में हड़कंप मच गया। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम और स्थानीय पुलिस ने आग पर काबू पाया। जानकारी के अनुसार, आज शाम करीब 5 बजे जगदलपुर के गोदम रोड के टेटरखूटी स्थित कबाड़ डंपयार्ड में आग लग गई। धीरे धीरे आग की लपेटे बढ़ती ही गई। बढ़ते आग को देखकर आसपास के लोगों में हड़कंप मच गया। जिसके बाद लोगों ने आगजनी की जानकारी 112 की टीम को दी। पुलिस भी दमकल की एक गाड़ी के साथ मौके पर पहुंची और आग को बुझाने के काम में जुट गई। लेकिन आग के भयावह रूप लेने के कारण दमकल की गाड़ी का पानी खत्म हो गया। जिसके बाद दमकल टीम दोबारा पानी भरने गई और वापस आकर आग पर काबू पाया। इस दौरान दर्जनों पुलिस कर्मी मौके पर मौजूद रहे।

मोटर गैरेज में आग लगने से दो कारें जलकर हुई खाक

कोरबा। कोरबा के टीपी नगर में कार शोरूम के पास स्थित मोटर गैरेज में आग लग गई। मोटर गैराज से धुआं के साथ आग की लपटें निकलने लगी। मौके पर पहुंची पुलिस ने आग बुझाने का प्रयास शुरू करते हुए दमकल विभाग को सूचना दी। नगरसेना के दमकल कर्मियों ने मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, तब तक मरम्मत के लिए पहुंची दो कार जलकर खाक हो चुकी थी। मामले में पुलिस जांच कर रही है। सीएसईबी पुलिस चौकी अंतर्गत वाल्मिकी अटल आवास में रहने वाले रोशन महंत टाटा कार शोरूम के पास मोटर गैरेज चलाते हैं। इस गैरेज में कार सहित अन्य गाड़ियों में सुधार का काम किया जाता है। रोशन प्रतिदिन की तरह शुक्रवार को पूरे दिन काम करता रहा। इसके बाद वह गैरेज बंद कर घर चला गया। देर रात मार्ग से गुजर रहे लोगों की नजर गैरेज में पड़ी तो उनके होश उड़ गए। दरअसल, गैरेज से धुएं के साथ आग की लपट निकल रही थी। इस आग ने गैरेज में खड़ी चार पहिया वाहनों को चपेट में लेना शुरू कर दिया था।

गौरेला में शराब से फिर बिखरा परिवार

गौरेला पेंड्रा मरवाही। दिवाली वाली रात गौरेला से दिल दहला देने वाली खबर आई है।यहां एक शराबी ने दारू के लिए पैसा नहीं देने पर अपनी ही पत्नी की निर्ममता से हत्या कर दी। पत्नी की मौत हो जाने के बाद आरोपी ने खुद भी धारदार हथियार से अपनी जान लेने की कोशिश की।लेकिन पुलिस ने आरोपी को दबोच लिया।फिलहाल आरोपी पति अस्पताल में भर्ती है। करंगरा गांव में शराबी पति ने पत्नी की जान ले ली। आरोपी भूप सिंह बैगा ने पहले अपनी पत्नी सेम बाई से शराब पीने के लिए पैसा मांगा।लेकिन जब पत्नी ने पैसा नहीं होने की बात कही तो घर पर विवाद शुरु हुआ। बताया जा रहा है कि दीपावली की रात शराबी पति शराब पीकर घर आया। इसके बाद और शराब पीने के लिए पत्नी सेम बाई से पैसा मांगा। लेकिन सेम बाई ने कहा कि घर पर पैसे कम हैं,क्योंकि त्यौहार में सामान लेने की वजह से उसमें खर्च हो गए। इसके बाद पत्नी पैसा देने को मना कर दी फिर क्या था, सेम बाई और उसके पति भूप सिंह का आपस में जमकर विवाद हो गया।

बालोद में घर बैठे मतदान दिव्यांगों ने किया वोटिंग

बालोद। चुनाव आयोग ने इस बार दिव्यांग और 80 प्लस बुजुर्ग मतदाताओं के लिए घर बैठे मतदान की सुविधा दी है। इस बार छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में जो बुजुर्ग घर से बाहर नहीं जा पाते वो और दिव्यांग घर बैठे मताधिकार का प्रयोग कर रहे हैं। इन लोगों के घर जाकर पोलिंग टीम मतदान करवा रही है। इस कड़ी में बालोद में भी बुजुर्ग और दिव्यांगजनों ने घर बैठे मतदान दिया। इस दौरान एक शख्स ने 14 साल बाद अपने मताधिकार का प्रयोग किया। दरअसल बालोद में 17 नवंबर को मतदान है। हालांकि विशेष दिव्यांग और बुजुर्ग मतदाताओं को होम वोटिंग के तहत मतदान कराया जा रहा है। जो लोग ये सोच रहे थे कि वो इस बार वोट नहीं कर पाएंगे, वैसे लोग मतदान के बाद काफी खुश नजर आए। एक शख्स दुर्घटना के कारण 14 सालों से वोट नहीं दे पा रहा था। उस शख्स ने भी घर बैठे मतदान किया। इस बारे में बालोद कलेक्टर कुलदीप शर्मा ने बताया कि, बालोद में घर बैठे वोटिंग के अंतर्गत मतदान प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संपन्न कराने को लेकर सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई थी।

साजा विधानसभा में किन मुद्दों का रहेगा बोलबोला

बेमेतरा। प्रदेश में हाईप्रोफाइल सीट माने जाने वाली साजा विधानसभा सीट छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले के अंतर्गत आती है। वर्तमान में इस सीट से प्रदेश सरकार में कृषि मंत्री रविंद्र चौबे विधायक हैं। जिले की साजा विधानसभा सीट हमेशा से ही कांग्रेस का गढ़ मानी जाती रही है। 2013 के चुनाव में यहां बीजेपी ने अपना परचम लहराया था। लाभचंद बाफना 5000 मतों से रविन्द्र चौबे को मात देकर विधायक बने थे। लेकिन 2018 के विधानसभा चुनाव में जनता ने एक बार फिर रविंद्र चौबे पर विश्वास जताया था। इस बार कांग्रेस ने इस विधानसभा से एक बार फिर रविंद्र चौबे को उम्मीदवार बनाया है।वहीं बीजेपी ने ईश्वर साहू को मैदान में उतारा है।

साजा विधानसभा सीट का गठन सन 1967 में हुआ था। इसके बाद से लेकर 2013 तक लगातार यहां कांग्रेस के ही

विधायक रहे। लेकिन साल 2013 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस का रिकार्ड तोड़ दिया था। बीजेपी के लाभचंद बाफना ने कांग्रेसी प्रत्याशी रविंद्र चौबे को 5 हजार से अधिक मतों से मात दे दी थी। वर्तमान में प्रदेश के कृषि मंत्री रविंद्र चौबे साजा विधानसभा क्षेत्र से लगातार 6 बार और कुल 7 बार विधायक चुने जा चुके हैं। इसके अलावा उनके माता-पिता और भाई इस क्षेत्र से विधायक रह चुके हैं।

साजा की यदि बात की जाए तो आगामी चुनाव में क्षेत्र में बिजली की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, कृषि आधारित उद्योग की मांग, अस्पतालों में डॉक्टरों की कमी जैसे मुद्दे गर्माए रहेंगे। वहीं बिरनपुर हिंसा को लेकर भी प्रत्याशी एक दूसरे पर छींटाकशी कर सकते हैं।

साजा विधानसभा क्षेत्र में 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी रविंद्र चौबे की जीत हुई थी। जो वर्तमान में प्रदेश के कृषि मंत्री हैं। 2018 के चुनाव में कांग्रेस के रविंद्र चौबे को 95 हजार 685 मत मिले थे। वहीं भाजपा के लाभचंद बाफना को 64123 मत मिले थे। जहां कांग्रेस के रविन्द्र चौबे ने 31 हजार 562 मतों चुनाव जीता था।

लोधी मतदाताओं की संख्या सर्वाधिक है। साजा में 65 फीसदी मतदाता अन्य पिछड़ा वर्ग से आते हैं। केवल 10 फीसदी वोटर ही सामान्य श्रेणी के हैं। वहीं 25 फीसदी मतदाता एसटी एसटी वर्ग के हैं।साजा विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत धमधा और थानखम्हरिया तहसील आते है। वहीं परपोड़ी और देवकर नगर पंचायत भी साजा विधानसभा के अधीन है। साजा विधानसभा में कुल 250768 मतदाता हैं। जिसमें 126061 पुरुष मतदाता हैं। वहीं 124704 महिला मतदाता हैं।वहीं 3 थर्ड जेंडर मतदाता हैं।

महिला से अभद्र व्यवहार का वीडियो वायरल होने के बाद कांग्रेस प्रत्याशी का यू टर्न

जशपुर। कुनकुरी विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी यूडी मिंज का वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। वीडियो वायरल होने पर पर विधायक ने इस पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। विधायक ने कहा कि उन्होंने महिला के साथ बदसलूकी नहीं की बल्कि उसे समझा रहे थे। जशपुर विधानसभा में दूसरे चरण में 17 नवंबर को चुनाव है। चुनाव में जीत के लिए भाजपा और कांग्रेस प्रत्याशी लगातार चुनाव प्रचार कर रहे हैं। इसी कड़ी में कुनकुरी विधानसभा से कांग्रेस प्रत्याशी यूडी मिंज भी चुनाव प्रचार कर रहे हैं। इसी दौरान उनका महिला के साथ बात करते हुए उसका मोबाइल छीनने का वीडियो सोशल मीडिया में काफी वायरल हो रहा है। यूडी मिंज ने कहा कि महतारी वंदना योजना भराकर नालियों में फेंके जा रहे हैं। लोग शराब पीकर उन फार्म में चखना रखा हुआ है। इसी दौरान पता चला कि चौक में रहने वाली मंजू भगत भी इस काम को करवा रही थी। इसी सिलसिले में महिला से बात करने गए थे। इसी दौरान वहां मौजूद एक युवक ने कहा कि महिला उनका वीडियो बना रही है। इस पर महिला को बताने लगे कि पास आकर वीडियो बना लें। कांग्रेस प्रत्याशी यूडी मिंज मुझे तकलीफ हुई कि भाजपा किस तरह से भोली भाली महिलाओं को अपने झांसे में लेकर महतारी वंदना योजना का फॉर्म भरवाया जा रहा है। आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन है। मंजू भगत मेरी लाडली बहन है। मेरा सीएम भूपेश बघेल से निवेदन है कि गृहलक्ष्मी योजना के तहत मंजू भगत को सबसे पहले इस योजना का लाभ दें। मिंज ने भाजपा पर भी हमला किया। उन्होंने कहा कि हम सच के साथ चुनावी मैदान में और भाजपा झूठ के साथ भ्रम फैला रही है। भाजपा के पास और कोई मुद्दा नहीं है इससिए भाजपा झूठ फैलाकर जनता को बरगलने की कोशिश कर रही है। इसका कोई फर्क चुनाव में नहीं पड़ेगा।

संक्षिप्त समाचार

सीएम भूपेश बघेल गौरा-गौरी पूजा में हुए शामिल, हाथ पर खाए कोड़े

दुर्ग। छत्तीसगढ़ में दिवाली के एक दिन बाद गौरा-गौरी की पूजा की जाती है। इस दिन खुद मुख्यमंत्री भूपेश बघेल इस रस्म में शामिल होते हैं। सोमवार को गौरा-गौरी की पूजा के लिए दुर्ग जिले के जांजगीर में पहुंचे। वहां उन्होंने पूजन कर प्रदेश वासियों की सुख-समृद्धि की कामना की। फिर अपने हाथों पर कोड़े खाए। दुर्ग के जांजगीर में दिवाली के एक दिन बाद गौरा-गौरी पूजा के दिन एक अनुष्ठान के तहत छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल की बांह पर कोड़े मारे गए। मुख्यमंत्री हर साल इस लोक अनुष्ठान में हिस्सा लेते हैं। ऐसी मान्याता है कि इस पूजा के मौके पर सोंटे के प्रहार से अनिष्ट टलते हैं और खुशहाली आती है। वहीं, सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि पहले प्रधानमंत्री मोदी, रमन सिंह के खिलाफ कार्रवाई कर लें, अजीत पवार के खिलाफ कार्रवाई कर लें, हिमंत बिस्वा सरमा के खिलाफ कार्रवाई कर लें। जो लोग मोदी वाशिंग पाउडर में धुलकर आए हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई करें, उसके बाद बात करें।

महिलाओं को लुभाने कांग्रेस लाई गृहलक्ष्मी योजना

रायपुर। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने चुनावी वादों की झड़ी सी लगा दी है। कांग्रेस का दावा है कि जनता उनकी घोषणाओं पर विश्वास करके ही अपना मतदान करेगी। छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रवक्ता वंदना राजपूत ने एक बयान जारी करके कहा कि गृह लक्ष्मी योजना में 15000 रू. प्रति वर्ष महिलाओं को मिलेगा। इस योजना से महिलायें बहुत खुश है, भूपेश है तो भरोसा है। गृह लक्ष्मी योजना के लाभ पाने के लिये महिलाओं को किसी लाइन में जाकर खड़े होने की जरूरत नहीं और ना ही फार्म भरने की जरूरत है। कांग्रेस पार्टी के बटन दबाओं और 15000 पाओ। कांग्रेस ने जो कहा वो वादा पूरा किया है। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता वंदना राजपूत ने छत्तीसगढ़ गृह लक्ष्मी योजना के लिये सीएम भूपेश बघेल को धन्यवाद देते हुये कहा कि दीपावली के अवसर पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने नारी शक्ति के लिये बहुत बड़ी घोषणा किये है। छत्तीसगढ़ गृह लक्ष्मी योजना में 15000 महिलाओं को मिलेंगे। जिससे महिलायें सशक्त होगी। कांग्रेस पार्टी ही ऐसी पार्टी है जिसमें महिलाओं के आत्मनिर्भर और सशिक्तकरण के लिये काम किये है। हर वर्ग को गृहलक्ष्मी येजना के जरिये से 15000 मिलेंगे।

मतदान दलों का विशेष प्रशिक्षण 15 नवंबर को

रायपुर। मतदान दलों का विशेष प्रशिक्षण 15 नवंबर को होगा। इसमें वे अधिकारी कर्मचारी शामिल होंगे जो 8 और 9 नवंबर में जो अधिकारी एवं कर्मचारी किन्हीं कारणों से उपस्थित नहीं हो सके थे। यह पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी में 9.30 बजे से आयोजित किया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ के चुनाव में कांग्रेस की जातिगत जनगणना कराने का काट बन पाएगा भाजपा का ओबीसी सर्वे!

रायपुर। साल 2023 के विधानसभा चुनाव में छत्तीसगढ़ में जातिगत जनगणना और ओबीसी एक बड़ा मुद्दा बन गया है। लगातार राजनीतिक दल प्रदेश में ओबीसी बाहुल्य क्षेत्रों लोगों को साधने की कवायत कर रहे हैं। चुनाव में ओबीसी वर्ग को टारगेट करते हुए प्रचार प्रसार और भाषण बाजी जमकर की जा रही है। इन सब के पीछे वजह है यह है कि छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है जहां ओबीसी वर्ग लगभग 42 फ़ीसदी संख्या में निवास करता है। यह एक बड़ा जातिगत समीकरण है जो छत्तीसगढ़ के विधानसभा के चुनाव में जीत-हार के फैसले को तय करता है। इसीलिए चाहे कांग्रेस पार्टी हो या भारतीय जनता पार्टी दोनों ही राजनीतिक दल ओबीसी वर्ग को लेकर अपने मंचीय कार्यक्रम से बातें करते हैं।

छत्तीसगढ़ का गांव अंजोरा जो दो विधानसभा सीटों पर चुनता है विधायक

रायपुर। छत्तीसगढ़ का अंजोरा गांव सूबे का ऐसा गांव है जहां दो निर्वाचन क्षेत्र के उम्मीदवार अपने लिए वोट मांगने पहुंच रहे हैं। इस गांव के मतदाता पहले चरण में होने वाले राजनांदगांव सीट और दूसरे चरण में दुर्ग ग्रामीण सीट के लिए मतदान करेंगे। राज्य में 90 विधानसभा सीट के लिए दो चरणों में सात और 17 नवंबर को मतदान होगा। पहले चरण में 20 तथा दूसरे चरण में 70 सीटों पर मतदान होगा। पशु चिकित्सा महाविद्यालय के लिए प्रसिद्ध अंजोरा गांव दुर्ग और राजनांदगांव जिलों की सरहद के बीच है।

यह राज्य का एक ऐसा गांव है जहां के मतदाता दो अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों के लिए मतदान करेंगे। इस गांव का आधा हिस्सा राजनांदगांव विधानसभा सीट के अंतर्गत है जहां पहले चरण में सात नवंबर को मतदान होगा तथा आधा हिस्सा दुर्ग ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत आता है जहां दूसरे चरण में 17 नवंबर को मतदान होगा।

अंजोरा गांव को एक मुख्य सड़क ने दो हिस्सों में बांट दिया है। सड़क के एक ओर दुर्ग ग्रामीण क्षेत्र के निवासी रहते हैं और दूसरी ओर राजनांदगांव क्षेत्र के निवासी। यह गांव दो ग्राम पंचायतों अंजोरा ग्राम पंचायत (राजनांदगांव) और अंजोरा %ख% ग्राम पंचायत (दुर्ग) के अंतर्गत भी आता है। अंजोरा गांव दुर्ग शहर से लगभग 10 किलोमीटर दूर और राजनांदगांव शहर के बीच मुंबई-हावड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग-53 पर स्थित है। गांव की आबादी लगभग पांच हजार है।

अंजोरा पंचायत (राजनांदगांव) की सरपंच अंजू साहू

कहती हैं कि चुनाव के दौरान अक्सर गांव के लोग भ्रमित हो जाते हैं क्योंकि दोनों निर्वाचन क्षेत्रों के उम्मीदवार प्रचार के लिए गांव आते हैं। पूरे गांव में उम्मीदवारों के पोस्टर और बैनर देखे जा सकते हैं, चाहे वे (दोनों में से) किसी भी निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हों। इसलिए यह कहा जाता है कि इस एक गांव से दो विधायक (दो निर्वाचन क्षेत्रों के लिए) चुने जाते हैं।

कांग्रेस नेता अंजू साहू कहती हैं कि यह जरूर है कि एक सड़क ने गांव को विभाजित कर दिया है। चुनाव के दौरान लोग अलग-अलग विधानसभा क्षेत्र के लिए वोट देते हैं लेकिन यहां के लोग शांतिपूर्वक रहते हैं और त्योहारों तथा अन्य समारोहों को एक साथ मनाते हैं। मेरा पैतृक घर अंजोरा %ख% क्षेत्र में है जो दुर्ग ग्रामीण सीट के लिए वोट करता है, जबकि ससुराल राजनांदगांव निर्वाचन क्षेत्र के लिए वोट करती है।

अंजोरा %ख% पंचायत की सरपंच संगीता साहू के पति माखनलाल साहू ने बताया कि राजनांदगांव जिले का गठन 1973 में दुर्ग जिले (तत्कालीन मध्य प्रदेश) से अलग कर किया गया था। तब से गांव दो पंचायतों में विभाजित हो गया। विधानसभा सीटों के लिए परिसीमन भी इस तरह से किया गया था कि गांव का आधा हिस्सा एक निर्वाचन क्षेत्र में तथा आधा हिस्सा अन्य क्षेत्र में पड़े।

अंजू साहू ने बताया कि गांव में ऐसे भी परिवार हैं, जिनके आधे सदस्यों को राजनांदगांव विधानसभा क्षेत्र के लिए और आधे सदस्यों को दुर्ग ग्रामीण के लिए मतदान करना होता है। राजनांदगांव और दुर्ग ग्रामीण राज्य के प्रमुख निर्वाचन क्षेत्रों में से हैं। राजनांदगांव सीट से पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह और दुर्ग ग्रामीण सीट से राज्य के गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू चुनाव मैदान में हैं।

भाजपा ने रमन सिंह को उनकी मौजूदा राजनांदगांव सीट से मैदान में उतारा है, जहां छत्तीसगढ़ राज्य खनिज विकास निगम के मौजूदा अध्यक्ष गिरीश देवांगन कांग्रेस के उम्मीदवार हैं। दुर्ग ग्रामीण सीट पर कांग्रेस ने अपने अहम ओबीसी नेता एवं मंत्री ताम्रध्वज साहू को मैदान में उतारा है जिनका मुकाबला भाजपा के नए चेहरे ललित चंद्राकर से है।

कांग्रेस ने अपनी हार मान ली : अरुण साव

रायपुर। कांग्रेस ने गृह लक्ष्मी योजना के तहत प्रत्येक परिवारों को 15000 सालना देने का ऐलान किया। इसकी घोषणा मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने रविवार को की। कांग्रेस की इस घोषणा पर भाजपा ने पलटवार करना शुरू कर दिया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव का कहना है कि कांग्रेस ने प्रमाणित किया कि उन्होंने हार मान ली है। अरुण साव कहा कि पहले चरण के मतदान के बाद छत्तीसगढ़ के मुखिया की गृह लक्ष्मी योजना की घोषणा बताती है कि भूपेश बघेल ने हार मान ली है। साव ने कहा कि छत्तीसगढ़ की महिलाओं को भूपेश बघेल ने 5 साल सिर्फ ठगने का काम किया है। चाहे शराबबंदी के वादे का हो, महिला स्व-सहायता समूह के कर्ज माफी का वादा का हो या विधवा महिलाओं को धोखा देने का मामला हो। भूपेश बघेल लगातार छत्तीसगढ़ की महतारी को धोखा देने का काम कर रहे हैं। अरुण साव ने कहा प्रथम चरण के मतदान के बाद भूपेश बघेल की घोषणा यह बताता है,भाजपा पर छत्तीसगढ़ की बेटियों के बढ़ते भरोसे से वे घबरा गए हैं, उन्होंने हार स्वीकार कर ली है। हार की हताशा से उन्होंने इस प्रकार की घोषणा की है। जिन्होंने 500 रुपये नहीं दिए वो 15000 रुपये क्या देंगे? महतारी योजना पर गृह लक्ष्मी योजनाः भाजपा ने महतारी वंदन योजना के तहत प्रदेश की हर विवाहित महिला को ?12000 वार्षिक वित्तीय सहायता देने की चुनावी घोषणा की थी। जिसके जवाब में कांग्रेस ने गृह लक्ष्मी योजना की घोषणा की है।

रामानुजगंज में सह प्रदेश प्रभारी नितिन नवीन ने की बैठक

शहरी मतदाता को साधने में लगी भाजपा

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ की महत्वपूर्ण विधानसभा में से एक रामानुजगंज विधानसभा से भाजपा के कद्दावर नेता राम विचार नेताम सातवीं बार चुनाव लड़ रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में भाजपा जहां लगातार सघन जनसंपर्क एवं कार्यक्रम आयोजित कर रही है। वहीं, अब शहरी क्षेत्र के मतदाताओं पर भी अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए आज भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश सह प्रभारी नितिन नवीन अपने अल्प प्रवास पर रामानुजगंज पहुंचे। जिन्होंने नगर पंचायत अध्यक्ष रमन अग्रवाल सहित भाजपा समर्थित पार्षदों एवं भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर चुनाव की रणनीति पर सघन विचार विमर्श किया।

इस अवसर पर नितिन नवीन ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने छत्तीसगढ़ को लूटने का काम किया है। बघेल सरकार समाज के सभी वर्ग आतंकित है। छत्तीसगढ़ को

बनाने का काम भाजपा ने किया था, जिसे डॉ. रमन सिंह के नेतृत्व में 15 साल तक छत्तीसगढ़ को संवारने का कार्य किया। वहीं पांच वर्षों में जिस प्रकार से छत्तीसगढ़ की दुर्गति हुई वह किसी से छुपी नहीं है। छत्तीसगढ़ के सर्वांगीणविकास के लिए ड बल इंजन सरकार की आवश्यकता है। केंद्र की योजनाओं को छत्तीसगढ़ के लोगों तक पहुंचाने में भूपेश बघेल सरकार बाधक बनी हुई है, जिस कारण यहां जमीनी स्तर पर योजनाओं का सही क्रियान्वयन नहीं हो सका। छत्तीसगढ़ के विकास के लिए भाजपा की सरकार बनाना आवश्यक है।

भाजपा नहीं करती महतारियों का सम्मान: धनंजय सिंह

■ कांग्रेस का भाजपा पर कटाक्ष

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दौरान कांग्रेस भाजपा के बीच सियासी तनातनी जारी है। हाल ही में खबरें आई कि भाजपा की महतारी वंदन योजना का फॉर्म कचरे में पड़ा हुआ था। कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने इसपर कटाक्ष किया है। ठाकुर ने बयान जारी करके कहा कि मोदी की गारंटी को भाजपाइयों ने कचरे के ढेर में फेंक दिया है।

कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि अभी मतदान हुआ नहीं है लेकिन भाजपा की धोखा बाजी का चरित्र का पर्दाफाश हो गया है। जैसे 10 साल से मोदी सरकार देश की जनता को धोखा दे रही है 15 साल तक पूर्व रमन सरकार ने छत्तीसगढ़ की जनता को धोखा दिया था। महिलाएं सावधान रहें। भाजपा कभी भी महतारियों का सम्मान नहीं करती है बल्कि उन्हें हमेशा धोखा देती है।

छत्तीसगढ़ कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने आगे कहा कि मोदी की गारंटी के नाम से भाजपाइयों ने माता बहनों से फार्म में उनकी निजी जानकारी मोबाइल नम्बर, आधार कार्ड, कुछ फार्म में उनका एकाउंट नम्बर घर का पता लेकर उसे सड़कों और कचरे के ढेर में फेंककर महिलाओं की निजता का हनन किया है, उनके गृहस्थ जीवन को, मान सम्मान को खतरा में डाला है। महिलाओं के अन्य नम्बर और आधार कार्ड का दुरुपयोग असमाजिक तत्व कर सकते है।म हिलाओं को सावधन रहने की जरूरी है।

कांग्रेस प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी हमेशा वादा खिलाफी करती है, यह वही मोदी है जिन्होंने माता बहनों के खाता में 15-15 लाख रुपए जमा कराने, 100 दिन में महंगाई कम करने, अच्छे दिन आयेंगे, दो करोड़ रोजगार देने सहित अनेक वादा कर पूरा करने की गारंटी दिये थे जो 10 साल में पूरा नहीं हुआ है और अब मोदी की गारंटी के नाम से बीजेपी महिलाओं को ठगने निकले हैं। जिसकी पोल कचरे के देर में पड़ी पीएम,नरेंद्र मोदी की तस्वीर वाली गारंटी आवेदन पत्र ने खोल दिया है।

छत्तीसगढ़ चुनाव के दूसरे चरण की वीआईपी सीटों का हाल

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव का पहले चरण का मतदान पूरा हो चुका है। वहीं दूसरे चरण की 70 सीटों के लिए चुनाव होना है। 17 नवंबर को इन 70 सीटों के लिए मतदान होना है। जिसमें 34 सीटें वीआईपी सीट है। वहीं पहले चरण में 10 वीआईपी सीटों पर मतदान किया गया। कुल मिलाकर छत्तीसगढ़ की 44 सीटें वीआईपी सीटों में शामिल है। जहां पर भाजपा कांग्रेस के बड़े चेहरों का मुकाबला दिलचस्प होने वाला है।

बताते चलें कि पहले चरण के चुनाव में 20 विधानसभा सीटों पर मतदान हुआ है। जिसमें नक्सल प्रभावित संभाग बस्तर की 12 सीटें और दुर्ग संभाग की कवर्धा-खैरागढ़ और राजनांदगांव की 8 सीटें शामिल थी।

पहले चरण में कुल 78 फ़ीसदी वोटिंग हुई है। साल 2018 के मुकाबले इन नक्सल प्रभावित इलाकों में ज्यादा वोटिंग हुई है। बता दें कि छत्तीसगढ़ विधानसभा के दूसरे चरण के चुनाव के बाद 3 दिसंबर को नतीजे घोषित किए जाएंगे। वहीं छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल अभी भी महिला मतदाताओं को साधने की कोशिश में लगे हैं।

दूसरे चरण के वीआईपी सीट

रामानुजगंज सीट- भाजपा प्रत्याशी राम विचार नेताम -कांग्रेस प्रत्याशी अजय तिर्की, भरतपुर-सोनहत सीट- भाजपा प्रत्याशी रेणुका सिंह- कांग्रेस प्रत्याशी गुलाब सिंह कमरो, बिलासपुर सीट भाजपा प्रत्याशी अमर अग्रवाल - कांग्रेस प्रत्याशी शैलेश पांडे, कोटा सीट- भाजपा प्रत्याशी प्रबल प्रताप सिंह जूदेव-कांग्रेस प्रत्याशी अटल श्रीवास्तवझ रेणु जोगी, तखतपुर सीट- भाजपा प्रत्याशी धर्मजीत सिंह - कांग्रेस प्रत्याशी रश्मि सिंह, रायपुर ग्रामीण सीट- भाजपा प्रत्याशी मोतीलाल साहू-कांग्रेस प्रत्याशी पंकज शर्मा, धरसीवां सीट- भाजपा प्रत्याशी अनुज शर्मा -कांग्रेस प्रत्याशी छाया वर्मा, अभनपुर सीट भाजपा प्रत्याशी इंद्र कुमार साहू- कांग्रेस प्रत्याशी धनेंद्र साहू, आरंग सीट बीजेपी प्रत्याशी गुरु खुशवंत सिंह -कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. शिवकुमार डहरिया, राजिम सीट भाजपा प्रत्याशी रोहित साहू -कांग्रेस प्रत्याशी अमितेष शुक्ला, डोंडीलोहारा सीट बीजेपी प्रत्याशी देवलाल हलवा ठाकुर- कांग्रेस प्रत्याशी अनिला भेड़िया, दुर्ग शहर सीट भाजपा प्रत्याशी गजेंद्र यादव - कांग्रेस प्रत्याशी अरुण वोरा, दुर्ग ग्रामीण सीट बीजेपी प्रत्याशी ललित चंद्राकर -कांग्रेस प्रत्याशी ताम्रध्वज साहू, भिलाई नगर सीट भाजपा प्रत्याशी से प्रेम प्रकाश पांडे -कांग्रेस प्रत्याशी देवेंद्र यादव, पाटन सीट बीजेपी प्रत्याशी विजय बघेल-कांग्रेस प्रत्याशी भूपेश बघेल और इसी सीट से जेसीसीजे प्रदेश अध्यक्ष अमित जोगी भी मैदान में हैं। साजा सीट बीजेपी प्रत्याशी ईश्वर साहू -कांग्रेस प्रत्याशी रविंद्र चौबे, नवागढ़ सीट बीजेपी प्रत्याशी दयाल दास बघेल - कांग्रेस प्रत्याशी गुरु रुद्र कुमार, कुरूद सीट भाजपा प्रत्याशी अजय चंद्राकर -कांग्रेस प्रत्याशी तारिणी चंद्राकर, कोरबा सीट- बीजेपी प्रत्याशी लखनलाल देवांगन -कांग्रेस प्रत्याशी जयसिंह अग्रवाल, रामपुर सीट- भाजपा प्रत्याशी ननकी रामकवंर-कांग्रेस प्रत्याशी फूलसिंह रठिया, रायपुर दक्षिण सीट- भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल - कांग्रेस प्रत्याशी महंत रामसुंदर दास, रायपुर पश्चिम सीट- भाजपा प्रत्याशी राजेश मूणत -कांग्रेस प्रत्याशी विकास उपाध्याय, अंबिकापुर सीट-बीजेपी प्रत्याशी राजेश अग्रवाल-कांग्रेस प्रत्याशी त्रिभुनेश्वर शरण सिंहदेव, सीतापुर सीट- बीजेपी प्रत्याशी रामकुमार टोप्पो- कांग्रेस प्रत्याशी अमरजीत भगत मैदान में हैं।

कांग्रेस का मजबूत किला है अंबिकापुर, दांव पर लगी बाबा की प्रतिष्ठा

ललित कुमार सिंह

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के तहत दूसरे चरण में 17 नवंबर को कुल 70 विधानसभा सीटों पर चुनाव कराए जाएंगे। इनमें 34 सीटें वीआईपी हैं। इन वीआईपी सीटों में सबसे महत्वपूर्ण सीट अंबिकापुर है। क्योंकि यहां से कांग्रेस के दिग्गज नेता और वर्तमान डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव (त्रिभुनेश्वर शरण सिंहदेव) चुनाव लड़ रहे हैं। सरगुजा संभाग में कांग्रेस की हार-जीत में राजघराने की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

यहां से उनके सामने बीजेपी प्रत्याशी राजेश अग्रवाल चुनाव मैदान में हैं। यहां पर कांटे की टक्कर देखी जा रही है। दोनों प्रत्याशियों के बीच कड़ा मुकाबला है। सिंहदेव के सामने लगातार चौथी बार विधायक बनने की चुनौती है। सरगुजा संभाग में उनकी प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है। वहीं राजेश अग्रवाल की अग्निपरीक्षा है। वो खुद को बेहतर प्रत्याशी साबित करने में लगे हुए हैं। उन्हें पार्टी और ग्रामीणों पर पूरा भरोसा है।

बात टीएस सिंहदेव की करें तो तो लोग उन्हें प्यार से बाबा कहकर पुकारते हैं। इस बार इस सीट पर बाबा की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है, क्योंकि सामरी से कांग्रेस विधायक चिंतामणि महाराज ने उन्हें %चिंता% में डाल दिया है। पहले से ही अंबिकापुर में राजेश अग्रवाल के साथ बाबा का कड़ा मुकाबला देखा जा रहा था, तो दूसरी ओर हाल ही में टिकट नहीं मिलने पर सामरी से कांग्रेस विधायक चिंतामिण महाराज बागी होकर बीजेपी प्रदेश प्रभारी ओम माथुर के सामने बीजेपी का दामन थाम लिया था। उनके जाने से कांग्रेस को सरगुजा संभाग में बड़ा झटका लगा है। क्योंकि कांग्रेस उन्हें मनाने की हरसंभव कोशिश की थी। खुद बाबा ने कहा था कि चिंतामणि महाराज को कांग्रेस में बने रहना चाहिए क्योंकि बीजेपी से आने के बाद पार्टी ने उन्हें पूरा सम्मान दिया था। चिंतामणि के बीजेपी में प्रवेश होने के पीछे उनके कई सियासी मायने निकाले जा रहे हैं। वो सरगुजा संभाग में कांग्रेस की 6 से 7 सीटें प्रभावित कर सकते हैं। चिंतामणी महाराज छत्तीसगढ़ के संत गहिरा गुरु के बेटे हैं। सरगुजा संभाग में संत समाज के अनुयायी अंबिकापुर, लुंड्रा, सामरी, पत्थलगांव, जशपुर, कुनकुरी और बिलासपुर के रायगढ़, विधानसभा क्षेत्रों में हैं। प्रदेश भर में उनके समाज के अनुयायी हैं। ऐसे में बीजेपी में उनके प्रवेश करने से सरगुजा संभाग की 6 सीटों पर सीधा असर पड़ सकता है। बीजेपी यहां से आगे हो सकती है क्योंकि वर्तमान में संभाग की 14 की 14 सीटों पर कांग्रेस का कब्जा है। उनके इस कदम से कांग्रेस की चिंता बढ़ गई है।

आदिवासी बहुल सरगुजा संभाग में सिंहदेव का वर्चस्व है। सरगुजा संभाग और उसके आस-पास के क्षेत्रों में राज परिवार या सरगुजा रिसासत का सीधा दखल रहता है। आदिवासी बहुल संभाग में दशकों से रियासत परिवार को सम्मान मिलता रहा है। पूर्व पीएम इंदिरा गांधी के समय से ही रिसायसत परिवार को जनप्रतिनिधि के रूप में तवज्जो मिलता रहा है। पूर्व सीएम अजीत जोगी के कार्यकाल को छोड़ दें तो बाकी काल में सिंहदेव परिवार को मौका मिलता रहा है। सिंहदेव की छोटी बहन जहां हिमाचल प्रदेश की राजनीति में सक्रिय हैं तो सिंहदेव प्रदेश में डिप्टी सीएम के रूप में सियासत की बागडोर संभाले हुए हैं। उन्हें भावी सीएम के रूप में भी देखा जा रहा है। वर्ष 2018 के चुनाव में बाबा 15 साल का कांग्रेस का वनवास खत्म कराए थे। 2018 में बीजेपी का सुपड़ा ही साफ हो गया था। टीएस सिंहदेव की वजह से निर्णायक जीत मिली थी क्योंकि वो खुद कांग्रेस का घोषण पत्र तैयार किए थे। संभाग की जनता उन्हें सीएम मानकर चल रही थी। क्योंकि 2018 में प्रदेश में सीएम

का कोई चेहरा घोषित नहीं था। सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ा गया था, लेकिन चुनाव में कांग्रेस को बहुमत मिलने पर तत्कालानी प्रदेश अध्यक्ष भूपेश बघेल को सीएम बना दिया गया। इससे सरगुजावासियों की उम्मीदों पर पानी फिर गया। उस दौरान ढाई-ढाई साल तक के सीएम बनने का मुद्दा भी उठा था। खुद बाबा मीडिया के सामने ये बात उठाते रहे हैं। इसे लेकर सीएम भूपेश बघेल से सियासत में अन-बन किसी से छुपी नहीं है। अप्रत्यक्ष रूप से कई मौकों पर एक दूसरे पर हमला करते नजर आए थे।

छत्तीसगढ़ विधानसभा की 90 सीटों में सरगुजा संभाग की 14 सीटें काफी अहम हैं। यहां की 14 में से 9 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। महज 5 सीट सामान्य वर्ग के लिए है। 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने सरगुजा संभाग की सभी 14 सीटों पर कब्जा किया था। जबकि 2013 के विधानसभा चुनावों में 7 सीटों पर भाजपा का कब्जा था और 7 सीटों पर कांग्रेस थी। यानी 2018 के चुनाव में भाजपा को यहां काफी नुकसान उठाना पड़ा था।

अंबिकापुर सीट से एक बार बीजेपी तो तीन बार कांग्रेस चुनाव जीती है। इसमें तीनों ही बार सिंहदेव ने जीत हासिल की। साल 2003 में हुए विधानसभा के चुनाव में बीजेपी ने कमल भान सिंह को चुनाव मैदान में उतारा तो वहीं कांग्रेस ने मदन गोपाल सिंह को मैदान में उतारा था। इसमें बीजेपी को जीत मिली थी। वहीं साल 2008 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने टीएस सिंहदेव को मैदान उतरा तो भाजपा ने अनुराग सिंहदेव को प्रत्याशी बनाया। जिसमें टीएस सिंहदेव ने बाजी मारी। यही सिलसिला साल 2013 और साल 2018 के चुनाव में बरकरार रहा। तीनों ही बार अनुराग सिंहदेव और टीएस सिंहदेव आमने-सामने दिखे।

सरगुजा रियासत के राजा टीएस सिंहदेव उत्तर प्रदेश में जन्मे, मध्य प्रदेश में पढ़े लिखे और छत्तीसगढ़ की राजनीति में सिर्फ चेहरे के रूप में सामने नजर आए थे। बाद के दौरा में उनका कद बढ़ता चला गया। शुरू से ही टीएस सिंहदेव की राजनीति में खासा रुचि नहीं थी। राजनीति में सक्रिय होने के बाद सिंहदेव पहली बार अंबिकापुर नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष चुने गए। साल 2008, 2013 और साल 2018 में वह लगातार तीन बार विधायक चुने गए। इसके साथ ही साल 2014 में वह नेता प्रतिपक्ष रहे।

भाजपा ने अंबिकापुर से राजेश अग्रवाल को चुनावी मैदान में उतारा है। पार्टी को उम्मीद है कि राजेश अम्बिकापुर के ग्रामीणों का वोट हासिल करने में सफल होंगे। इसी फार्मूले के तहत भाजपा जीत दर्ज करने की कोशिश कर रही है। बीजेपी को उम्मीद है कि पहली बार विधानसभा चुनाव में नए चेहरे के रूप में उतरे राजेश अग्रवाल बाबा को पटखनी देने में कामयाब होंगे। विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्य न के बराबर हुए हैं। इससे ग्रामीणों में काफी नाराजगी देखी जा रही है। ऐसे में बीजेपी को लगता है कि उन्हें जनता का साथ मिल सकता है। कई जगहों पर ग्रामीण बैनर-पोस्टर लगाकर बाबा का विरोध भी जता चुके हैं।

वहीं राजेश अग्रवाल का कहना है कि कोई चुनौती नहीं है। भाजपा को पहले से ही पता था कि टीएस सिंहदेव से सामना होना है। पूरा भाजपा का संगठन मिलकर चुनाव लड़ रहा है। हम सब साथ हैं। अग्रवाल का मानना है कि पिछली बार सिंहदेव विपक्ष में थे, इसलिए जनता का साथ उन्हें मिला। इस बार वो मंत्री हैं और जनता से दूर रहे हैं। उनके पास जो मंत्रालय थे, उनमें भी काम नहीं होने के चलते जनता में घोर निराशा है। उनका मानना है कि इस बार जनता बीजेपी का साथ देगी। मैं ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ा हुआ हूं। खुद भी किसान हूं। सिंचाई परियोजना ठप है। घुनघुट्टा श्याम परियोजना और कुंवरपुर डेम दोनों का पानी टेल तक नही पहुंचता है। 15 साल की रमन सिंह सरकार में बहुत से डैम बनाये गए, जिसका मेंटेनेंस भी इस सरकार में नहीं किया गया।

राजेश अग्रवाल पहले कांग्रेस में थे। वे टीएस सिंहदेव के काफी करीबी रह चुके हैं। लखनपुर क्षेत्र के रहने वाले हैं राजेश लखनपुर नगर पंचायत के अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। अग्रवाल पहली बार विधानसभा चुनाव में उतरे हैं। उनका सीधा मुकाबला 3 बार के विधायक और डिप्टी सीएम टीएस सिंह से होने जा रहा है।

जातीय समीकरण- अंबिकापुर में करीब 50 फीसद आबादी यहां एसटी वर्ग की है। जिनमें उरांव, कंवर और गोंड समाज का क्षेत्र में दबदबा है। साल 2018 में यहां कुल 2 लाख 25 हजार 830 मतदाता थे। जिनमें 1 लाख 13 हजार 61 पुरुष और 1 लाख 12 हजार 744 महिला मतदाताओं की संख्या थी। वहीं अंबिकापुर विधानसभा क्षेत्र भले ही अनारक्षित है, लेकिन आज भी जीत और हार का फैसला ग्रामीण और आदिवासी मतदाता करते हैं। समीकरण के हिसाब से मानें तो गोंड, कंवर, उरांव और रजवार समाज के मतदाता ही जीत और हार में अहम भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा रजवार जाति की भी बहुलता अंबिकापुर विधानसभा क्षेत्र में है।

पाकिस्तान को सता रहा भारत के हमले का डर?

बिक्रम उपाध्याय

भारत में अगले साल आम चुनाव होने वाले हैं। मोदी सरकार घरेलू स्तर पर विरोधियों से चुनावी लड़ाई जीतने की रणनीति बनाने में जुटी है, लेकिन दिल्ली से सैकड़ों मील दूर बैठे पाकिस्तान के हुक्ममरानों के मन में यह आशंका बैठी है कि कहीं फिर से भारत उन पर 2019 की तरह कोई कार्रवाई ना कर दे। हालांकि उनके उस डर का कोई आधार नहीं है, फिर भी वे अपने यहां दहशतगर्दों की बेलगाम कार्रवाइयों से सकते में हैं और यह मानते हैं कि किसी दिन किसी आतंकवादी संगठन द्वारा भारत के खिलाफ कोई ऑपरेशन हुआ तो भारत की गाज पूरे पाकिस्तान पर भी गिर सकती है। इसीलिए वहां के लेखक और एक्सपर्ट पाकिस्तान के मियांवाली वायु सेना बेस पर कुछ दिन पहले हुए हमले को, जिसमें पाकिस्तान के 17 सैनिक मारे गए, रॉ और टीटीपी की कार्यवाई बता रहे हैं। 10 नवंबर को लाहौर से प्रकाशित अख़बार पाकिस्तान टुडे लिखता है कि भारत की रॉ और तहरीक ए तालिबान की भागीदारी की कई मौकों पर पुष्टि की गई है। भारत हमेशा से पाकिस्तान को स्वीकार करने में अनिच्छा दिखाता रहा है और लगातार अस्थिर करने वाली गतिविधियाँ चलाता है। बलूचिस्तान में उग्रवादी समूहों के लिए भारत का हस्तक्षेप और समर्थन जगजाहिर है। जौहर टाउन बम विस्फोट में रॉ की संलिप्तता स्थापित हो चुकी है। ऐसे में पाकिस्तान को डर है कि भारत पाकिस्तान पर सीधा हमला भी कर सकता है। 5 नवंबर को रक्षा एक्सपर्ट एजाज़ हैदर ने डॉन अख़बार में एक लेख के जरिए पाकिस्तान के डर का विस्तृत वर्णन किया है। लेख में कहा गया है कि रूस-यूक्रेन युद्ध और अब गाजा में चल रहे भीषण संघर्ष के कारण दुनिया का ध्यान काफी हद तक दक्षिण एशिया से हट गया है। लेकिन यहां, भारत और पाकिस्तान के बीच किसी भी संवाद के अभाव में इस क्षेत्र को बेहद खतरनाक संकटों के प्रति और संवेदनहीन बना दिया गया है। भारत में घरेलू घटनाक्रमों से स्थिति और भी जटिल हो गई है, जहां पिछले नौ वर्षों से एक दक्षिणपंथी सरकार का शासन है, जिसकी न केवल 2024 के चुनाव जीतने पर नजर है, बल्कि पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामक इरादे के अपने बयानों के साथ रिकॉर्ड पर है। लेख में आगे कहा गया है कि भारत ने, अपनी घोषणाओं के अनुरूप 2016 में पाकिस्तान पर सर्जिकल स्ट्राइक किया और फिर 2019 में पाकिस्तान में एक लक्ष्य पर बमबारी करने के लिए हवाई हमले का इस्तेमाल किया। 2019 में भारतीय हमले के कारण पाकिस्तान की हवाई प्रतिक्रिया हुई, जो 1971 के युद्ध के बाद पहली थी। हवाई लड़ाई में पाकिस्तान वायु सेना (पीएएफ) ने दो भारतीय लड़ाकू विमानों को मार गिराया और एक पायलट को पकड़ लिया। इस घटना के बाद भारत की ओर से तीखी बयानबाजी शुरू हो गई, जिसमें पाकिस्तान में लक्ष्यों पर मिसाइलें दागने की धमकी दी गई। स्थिति तब शांत हुई जब पाकिस्तान ने भारतीय मिग के पायलट को लौटा दिया। तापमान को नीचे लाने में अंतरराष्ट्रीय कूटनीति ने भी भूमिका निभाई। हालाँकि, भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, जो उस समय राष्ट्रीय चुनावों में जा रहे थे, ने इस प्रकरण का उपयोग अपने पूर्ण घरेलू लाभ के लिए किया, बड़ी जीत हासिल की और सत्ता में वापसी की। एजाज हैदर लिखते हैं कि एक बार फिर 2024 में भारत के चुनावों के बीच अलग-अलग कारक एक विशेष रूप से खतरनाक समय की ओर इशारा करते हैं। भारत का अपने परमाणु शस्त्रागार का विकास और आधुनिकीकरण और पाकिस्तान व चीन दोनों के प्रति भाजपा के शत्रुतापूर्ण रवैये को देखते हुए पाकिस्तान की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? हैदर के अनुसार भले ही भारत अपने मिसाइल विकास और आधुनिकीकरण के लिए चीन के खतरे को प्राथमिक कारण बताता रहा है। यह इस तथ्य के बावजूद है कि इसकी अधिकांश सैन्य तैनाती, जिसे ऑर्डर ऑफ बैटल कहा जाता है, पाकिस्तान केंद्रित बनी हुई है।

अयोध्या का पुनर्निमाण

संजय तिवारी

9 नवंबर अयोध्या के इतिहास में एक ऐतिहासिक तिथि बन गयी है। 9 नवंबर 2019 को देश के सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या में रामजन्मभूमि परिसर पर हिन्दुओं का दावा स्वीकार करते हुए उसे हिन्दू पक्ष को देने का फैसला किया था। इसीलिए चार साल बाद जब अयोध्या में रामजन्मभूमि पर रामलला का भव्य मंदिर आकार ले रहा है तब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूरी कैबिनेट के साथ अयोध्या पहुंचकर न केवल रामलला का दर्शन किया बल्कि वहां अपनी कैबिनेट की बैठक भी की।

कैबिनेट की बैठक में अन्य निर्णयों के साथ एक महत्वपूर्ण निर्णय अयोध्या तीर्थ क्षेत्र विकास परिषद के गठन का भी लिया गया। इस तीर्थक्षेत्र विकास परिषद के गठन के साथ न केवल अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण कार्य संपन्न होगा बल्कि पूरे अयोध्या परिक्षेत्र का एक तीर्थक्षेत्र के रूप में विकास होगा। इस मौके पर योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या नये युग की ओर जा रही है। पूरी दुनिया आज रामनगरी की ओर आकर्षित हो रही है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि जब से अयोध्या में रामलला टेंट से बाहर आये हैं वहां जानेवाले दर्शनार्थियों की संख्या भी बढ़ी है। वरना लंबे समय तक अयोध्या एक ऐसे उपेक्षित कस्बे के रूप में ही रहा जहां के मुख्य देवता का मंदिर ही विवादों में बना रहा। वैसे भी अयोध्या कोई बड़ा शहर नहीं बल्कि एक कस्बा है जो फैजाबाद कस्बे से सटा हुआ है। भारत के अन्य तीर्थक्षेत्रों जैसी इसकी महत्ता जरूर है लेकिन आर्थिक रूप से यह एक विपन्न शहर था।

राजनीतिक विवाद और पुलिस प्रशासन की भारी मौजूदगी के कारण लोगों ने अयोध्या जाना लगभग बंद कर दिया था। सिर्फ आसपास के स्थानीय लोग ही हनुमानगढ़ी या फिर सख्त पहरे में टेन्ट में विराजमान रामलला का दर्शन करने आते थे। तीर्थस्थानों की संपन्नता वहां आनेवाले तीर्थयात्रियों पर ही निर्भर करती है। लेकिन जहां तीर्थयात्री ही न आयें, वहां संपन्नता भला कैसे आयेगी?

फिर शासन प्रशासन का भी सारा जोर अयोध्या विवाद के कारण अयोध्या के विकास के बजाय वहां शांति व्यवस्था बनाये रखने पर था। 2017 तक कमोबेश यही स्थिति बनी रही। मानों अयोध्या से राम वनवास पर नहीं गये

बल्कि अयोध्या से वैभव और संपन्नता ने ही वनवास ले लिया था। 2017 में उत्तर प्रदेश में भाजपा की प्रचंड जीत के बाद और कुछ हुआ या न हुआ, एक नगर के रूप में अयोध्या का वनवास खत्म हो गया। योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री बने जिनके दादागुरु महंत दिग्विजय नाथ ने ही 1949 में बाबरी मस्जिद के भीतर रामलला विराजमान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

योगी आदित्यनाथ के लिए अयोध्या का रामजन्मभूमि मंदिर मात्र राजनीतिक या धार्मिक आस्था का ही विषय नहीं था। यह उनके लिए गुरु ऋण उतारने का भी अवसर था इसलिए मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने न केवल सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई में प्रदेश सरकार की ओर से हर प्रकार की मांग को पूरा करवाया बल्कि अयोध्या के विकास पर भी ध्यान दिया। मुख्यमंत्री बनते ही उसी साल अयोध्या में उन्होंने दीपावली से एक दिन पहले भव्य दीपोत्सव की शुरुआत की जो आज अयोध्या का प्रमुख आकर्षण बन गया है। उस समय भी योगी ने कहा था कि उत्तर प्रदेश को देश दुनिया का पर्यटन हब बनाना है और इसकी शुरुआत आज अयोध्या से हो रही है।

इसमें कोई शक नहीं कि घरेलू हों या वैश्विक पर्यटक, सबसे बड़ी संख्या में वो उत्तर प्रदेश ही आते हैं। इसका कारण यहां के धार्मिक स्थल ही हैं जिसमें काशी, प्रयाग और मथुरा वृन्दावन आनेवाले पर्यटक ही प्रमुख हैं। इसके अलावा आगरा का ताजमहल भी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। लेकिन काशी, मथुरा, प्रयागराज आनेवाले पर्यटक शायद ही अयोध्या का प्लान करते थे। इसका कारण उससे जुड़ा राजनीतिक विवाद तो था ही, अयोध्या में पर्यटकों और तीर्थयात्रितों के लिए आधारभूत ढांचे का अभाव भी एक बड़ा कारण था।

राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला भले ही नवंबर 2019 में आया लेकिन अयोध्या शहर के वनवास का खात्मा 2017 में योगी आदित्यनाथ के मुख्यमंत्री बनने के साथ ही हो गया था। 9 नवंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट का रामजन्मभूमि पर फैसला आने के बाद न सिर्फ जन्मभूमि पर रामलला के मंदिर का निर्माण कार्य शुरु हुआ बल्कि समूचे अयोध्या के पुनर्निमाण का खाका खींचा गया।

जब योगी मुख्यमंत्री बने तो उन्होंने अन्य कार्यों के साथ धूल धूसरित अयोध्या को नये सिरे से सजाने संवारने का काम भी शुरु किया। 2017 में दीपोत्सव की शुरुआत ने मानों अयोध्या का वनवास खत्म कर दिया। इसके अगले साल 2018 में न सिर्फ दीपोत्सव हुआ बल्कि राम की पैड़ी के उन मंदिरों का रंग रोगन कराया गया जिन पर दशकों से बदरंग होने की उदासी छायी हुई थी। उसी साल कोरिया की महारानी किम जुंग शुक भी बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुईं जिनके बारे में कहा जाता है कि उस राजघराने की पहली महारानी अयोध्या की राजकुमारी थीं। आज भी कोरिया के लोग इसी वजह से अयोध्या से अपना विशेष लगाव रखते हैं। इस समय अयोध्या में 3,000 करोड़ रुपए की परियोजनाओं पर काम चल रहा है। इसमें नव्य अयोध्या बसाने से लेकर सड़कों और सड़क किनारे बनी दुकानों, मकानों का कायाकल्प किया जा रहा है। अयोध्या कैण्ट (पूर्व में फैजाबाद) से लता मंगेशकर चौक तक के रामपथ को फोर लेन किया जा रहा है और पूरी सड़क की साज सज्जा भी की जा रही है। इसके बाद भक्ति पथ और जन्मभूमि पथ को भी न सिर्फ चौड़ा किया गया है बल्कि उन्हें किसी आधुनिक शहर की तर्ज पर विकसित किया जा रहा है। इन सड़कों के किनारे जो दुकानें या मकान थे उन्हें भी एक मानक डिजाइन पर तैयार करवाया जा रहा है ताकि इन सड़कों से गुजरते हुए व्यक्ति को अयोध्या की अलौकिक आभा के दर्शन हों।

एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, सड़कों और चौक चौराहों को भव्य बनाने के साथ ही राम की पैड़ी को भी नये तरह से सजाया संवारा जा रहा है। जगह जगह पार्किंग का निर्माण, अयोध्या के आसपास की 8 झीलों का सुन्दरीकरण, चौदह कोसी परिक्रमा मार्ग का सुन्दरीकरण, सूर्यकुण्ड के सूर्य मंदिर का विकास, गुप्तार घाट के सौंदर्यकरण के साथ ही अयोध्या के सभी मंदिरों के आसपास यात्री सुविधाओं का विकास और सौंदर्यकरण शामिल है।

इनमें कुछ योजनाएं दीर्घकालीन हैं जैसे नव्य अयोध्या, मंदिर स्थापत्य संग्रहालय, पंच सितारा होटल आदि का विकास लंबी अवधि में होगा। लेकिन 22 जनवरी 2024 को राम मंदिर के प्रथम चरण के पूरा होने के साथ ही सड़कों, चौक चौराहों का काम पूरा कर लिया जाएगा। उम्मीद की जा रही है तब तक न केवल नया अयोध्या स्टेशन भवन संचालित हो जाएगा बल्कि एयरपोर्ट भी चालू कर दिया जाएगा। जबकि बाकी योजनाएं क्रमिक रूप से पूरी की जाती रहेंगी और 2030 तक अयोध्या को एक भव्य तीर्थनगरी के रूप में विकसित कर लिया जाएगा। 22 जनवरी के कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए गुप्तार घाट के पास 75 एकड़ क्षेत्र में एक रामचरितमानस अनुभव केन्द्र विकसित किया जा रहा है जिसमें एक टेन्ट सिटी भी होगी। यह सब लंबे समय तक धूल धूसरित रही अयोध्या के लिए एक कायाकल्प जैसा होगा। अयोध्या में रामलला ही अपने मंदिर में विराजमान नहीं होंगे बल्कि योगी सरकार के प्रयास से अयोध्या का पौराणिक वैभव भी अपने आधुनिक साज सज्जा के साथ वापस लौटेगा। यही अयोध्या के वनवास की समाप्ति भी होगी।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

याेगकुण्डल्युपनिषद्

यह योगपरक उपनिषद् कृष्णयजुर्वेदीय परम्परा से सम्बद्ध है। इसमें कुल तीन अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम वायुजय (प्राणायाम सिद्धि) के तीन उपाय 1. मिताहार 2. आसन एवं 3. शक्तिचालिनी मुद्रा- बताये गये हैं। तदुपरान्त सरस्वती चालन, प्राणायाम के भेद-सूर्यभेदी, उज्जायी, शीतली, भस्त्रिका आदि, तीन बन्ध-मूलबन्ध, उड्डियान बन्ध तथा जालन्धर बन्ध, योगाभ्यास के विघ्न और उनसे बचाव, योगाभ्यास से कुण्डलिनी जागरण, तीन ग्रन्थियों (ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि तथा रुद्रग्रन्थि) का भेदन करके कुण्डलिनी का सहस्रार चक्र में प्रवेश, प्राणादि का शिवतत्त्व में विलीन होना, समाधि अवस्था में सर्वत्र चैतन्य तत्त्व की अनुभूति और समाधियोग जैसे विषयों का विस्तृत विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय का शुभारम्भ खेचरी मुद्रा के विशद विवेचन से हुआ है। जिसमें खेचरी का स्वरूप, उसकी फलश्रुति, मन्त्र जप से खेचरी की सिद्धि, खेचरी का अभ्यास क्रम आदि का विस्तृत वर्णन है। तृतीय अध्याय में खेचरी मेलन (खेचरी सिद्धि) का मन्त्र उल्लिखित हुआ है, तदुपरान्त अमावस्या, प्रतिपदा और पूर्णिमा के दृष्टान्त से साधक की दृष्टि का उल्लेख है। इसके बाद प्राणायाम के अभ्यास से विराट् के रूप की उत्पत्ति (सिद्धि), अभ्यास के बिना आत्मा का प्रकाश असम्भव, सद्गुरु के उपदेश से ब्रह्म का ज्ञान, ब्रह्म के विविध अधिष्ठान (वाक् वृत्ति, विश्वादि प्रपंच) परात्परब्रह्म का स्वरूप, ब्रह्म प्राप्ति का उपाय- ध्यान तथा अन्त में जीवन्मुक्ति एवं विदेहमुक्ति आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है। इस प्रकार योग के सभी प्रमुख विषयों को प्रस्तुत करते हुए उपनिषद् को पूर्णता प्रदान की गई है।

चित्त (की चंचलता) के दो कारण हैं, वासना अर्थात् पूर्वार्जित संस्कार एवं वायु अर्थात् प्राण; इन दोनों में से एक का भी निरोध हो जाने पर दोनों समाप्त (निरुद्ध) हो जाते हैं। दोनों में सबसे पहले वायु अर्थात् प्राण पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। प्राणों पर विजय प्राप्त करने के तीन साधन हैं- 1. मिताहार 2. आसन एवं 3. शक्तिचालिनी मुद्रा का अभ्यास।

हे गौतम! अब तुम्हें इनका (मिताहार का) लक्षण कहता हूँ, सादर (ध्यानपूर्वक) सुनो। सबसे पहले साधक को चाहिए कि वह स्निग्ध एवं मधुर भोजन (आधा पेट) करे, उसका आधा भाग पानी) एवं चौथाई भाग (हवा के लिए) खाली रखे। इस तरह से शिव (कल्याण) के निमित्त भोजन करने को मिताहार कहते हैं।

क्रमशः ...

बाल दिवस तो मना रहे हैं, पर क्या बचपन सुरक्षित रह गया है?

ललित गर्ग

आजाद भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस 14 नवम्बर को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है, हममें से कई लोग सोचते हैं कि बाल दिवस को इतने उत्साह या बड़े स्तर पर मनाने की क्या जरूरत है। परन्तु आज देश का बचपन जिस बड़े पैमाने पर दबाव, हिंसा, शोषण का शिकार है, बाल दिवस मनाते हुए हमें बचपन की विडम्बनाओं एवं विसंगतियों से जुड़ी त्रासदियों को समाप्त करना चाहिए। ऐसा इसलिये भी जरूरी है कि बच्चों को देश का भविष्य माना जाता है। यदि सात दशक तक बाल दिवस मनाते एवं बच्चों के उन्नत भविष्य बनाने का संकल्प दोहराते हुए बीत गया फिर भी बच्चों के खिलाफ होने वाले अत्याचारों और शोषण के विरुद्ध हमने कोई सार्थक वातावरण निर्मित नहीं किया है तो यह विचारणीय स्थिति है। ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं-ना-कहीं हमारे राष्ट्र के पहरूओं ने देश के बाल-निर्माण का सुनहरा भविष्य बुनते हुए कोई-ना-कोई त्रुटि की है। सोचने वाली बात है कि हमने बाल-दिवस को कोरा आयोजनात्मक स्वरूप दिया है, प्रयोजनात्मक नहीं। यही कारण है कि इतने लम्बे सफर के बाद भी कहां फलित हो पाया है हमारी जागती आंखों से देखा बचपन को सुनहरा बनाने का स्वप्न? कहां सुरक्षित एवं संरक्षित हो पाया है हमारा बचपन? कहां अहसास हो सका बाल-चेतना की अस्मिता का? आज भी बाल जीवन न सुखी बना, न सुरक्षित बना और न ही शोषणमुक्त।

बच्चों के प्रति पंडित नेहरू के प्रेम को देखते हुए उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाने का मुख्य उद्देश्य यही था कि सभी भारतीय नागरिकों को बच्चों के प्रति जागरूक करना ताकि सभी नागरिक अपने बच्चों को सही दिशा में सही शिक्षा एवं संस्कार दें, उनको शोषण एवं अपराधमुक्त परिवेश दें, उनकी प्रतिभा को उभारने का अवसर दें ताकि एक सुव्यवस्थित और सम्पन्न राष्ट्र का निर्माण हो सके जोकि बच्चों के अच्छे भविष्य पर ही निर्भर करता है। लेकिन आज का बचपन केवल अपने घर में ही नहीं, बल्कि स्कूली परिवेश एवं समाज में दबाव एवं हिंसा का शिकार है। यह सच है कि इसकी टूटन का परिणाम सिर्फ आज ही नहीं होता, बल्कि युवावस्था तक पहुंचते-पहुंचते यह एक महाबीमारी एवं त्रासदी का रूप ले लेता है। यह केवल भारत की नहीं, बल्कि दुनिया की एक बड़ी समस्या है।

बचपन से जुड़ी समस्याओं एवं त्रासद स्थितियों पर समय-समय पर अनेक शोध हुए हैं, इन शोधकर्ताओं का मानना है कि स्कूल और घर दोनों ही जगह ताकत का खेल चल रहा है। स्कूल का प्रबंधन तो अपना सारा रौबदाब बच्चों को ही दिखाता है। लेकिन घर में बालक माता-पिता के कुल दीपक और बुढ़ापे के सहारे हैं, अत: वे उन्हें सक्षम बनाने एवं दुनिया का अनोखा बालक का दर्जा दिलाने के लिये अपने व्यवहार को ही कटू एवं हिंसक बना देते हैं। यदि माता-पिता किसी ऊंचे पद पर हैं तो बच्चों का चरित्र उनकी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन जाता है। दोनों स्थानों में परिवार और स्कूल में लीक से हटने पर बच्चों के लिये दण्ड की व्यवस्था है। लड़कियों को धमकी दी जाती है कि यदि उन्होंने कोई गलती की तो उसका गंभीर परिणाम भुगतना पड़ेगा। विडम्बना यह है कि भारतीय बालक अपने अधिकारों से अनभिज्ञ हैं। यह काम शिक्षकों और पालकों को करना चाहिए किन्तु वे दोनों ही इनके प्रति उदासीन हैं। वे बाल अधिकार को अपनी सत्ता के लिए धमकी मानते हैं। संविधान में बच्चों के जीवन, विकास और सुरक्षा की व्यवस्था है। दण्ड को बालकों के अधिकारों का अतिक्रमण माना जाता है। लेकिन इन कानूनों के होते हुए भी अज्ञानता के कारण बच्चे उनका लाभ नहीं ले पाते। इस गंभीर होती समस्या से निजात पाने के लिये एक विस्तृत बाल संहिता तैयार की जाए और उसमें बालक के अधिकारों को शामिल किया जाए। हमें इसकी बड़ी जरूरत है। क्योंकि हमारे देश के लोगों के मन में बच्चों को लेकर महत्वाकांक्षाएं बड़ी गहराई से जमी हुई हैं।

भूटान के साथ भारत को निभानी होगी बड़े पड़ोसी की भूमिका

महेंद्र वेद

हिमालयी स्वर्ग माने जाने वाले भूटान की पहुंच दुनिया तक हो रही है और जैसा कि एक बड़े पड़ोसी के रूप में भारत को करना चाहिए, वह अपने छोटे एवं भूमि से घिरे पड़ोसी राष्ट्र की मदद कर रहा है। भूटान के पांचवें नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांग्चुक की भारत यात्रा ने रिश्ते में तेजी से बदलते पैटर्न को रेखांकित किया है, जिसकी अनिवार्यता का राष्ट्रों के निजी हितों के साथ-साथ क्षेत्र की भू-राजनीति द्वारा निर्धारित साझा हितों की रक्षा करते हुए सम्मान करना चाहिए। उनकी यात्रा की समाप्ति के बाद भारत निश्चित रूप से इसका विश्लेषण करेगा कि भूटान नरेश और उनके दल ने तात्कालिक और दीर्घकालिक दृष्टि से भारत की चिंताओं का कितना ध्यान रखा। चूंकि चीन एक अपरिहार्य कारक है, इसलिए भारत को क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर चाहते या न चाहते हुए भी भूटान के भू-राजनीतिक संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका को बदलकर उसके साथ साझेदारी का रिश्ता बनाना होगा।

इसमें भूटान को अपना साझेदार चुनने की इजाजत देना शामिल है और यह अब तक के करीबी और सौहार्दपूर्ण रिश्ते का सबसे जटिल पहलू है। भले ही भारत सोचता है कि चीन नई दिल्ली एवं थिंपू के बीच दरार पैदा कर रहा है, लेकिन अब उसे इस बात के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत है कि थिंपू क्या चाहता है। इसने वर्षों तक दोनों देशों के बीच औपचारिक राजनयिक संबंधों को रोका है। पर दोकलाम सीमा पर सैन्य झड़प होने के बाद भी भारत उस भूटान को सीमा विवाद पर बीजिंग के साथ बैठक करने से नहीं रोक सका, जिसकी रक्षा में वह मदद करता है। भले ही भारत की चिंता बड़ी है, लेकिन भूटान-चीन सीमा विवाद ऐसा है, जिस पर भूटान को भी पूरा ध्यान देना चाहिए। मई, 2023 में %भूटान-चीन सीमा मुद्दे% पर %विशेषज्ञ समूह% की 12वीं बैठक थिंपू में आयोजित की गई थी। उसके तुरंत बाद अगस्त में उसकी 13वीं बैठक बीजिंग में हुई। भूटान-चीन बैठक के हफ्ते भर बाद भूटान नरेश ने भारत का दौरा किया है।

इससे पहले, इसी वर्ष अप्रैल में भूटानी प्रधानमंत्री लोटे शेरिंग ने एक इंटरव्यू दिया था, जिससे भारतीय मीडिया के एक वर्ग में विवाद पैदा हो गया था, जिसमें अटकलें लगाई जा रही थीं कि भूटानी प्रधानमंत्री क्यों भूटानी क्षेत्र पर चीन के कब्जे से इन्कार कर रहे हैं और क्या भूटान ने चीन के साथ कोई क्षेत्रीय समझौता किया है। यह स्पष्ट होने के बाद कि भूटान का इरादा कोई नीतिगत बदलाव करने का नहीं है, भूटान और भारत, दोनों ने इस मुद्दे को शांत करने की कोशिश की। भारत की इस धारणा के मद्देनजर कि चीन उसे पूरे हिंद महासागर क्षेत्र में घेरने की कोशिश कर रहा है, चिंताएं बनी हुई हैं, जो सभवत: कभी भी सामने आ सकती हैं और सीमा पर दिख सकती हैं।

भूटानी शाही दंपति उच्च शिक्षित एवं स्पष्टवादी हैं। भूटान नरेश अनुभवी हैं और उन्होंने बांग्लादेश की शेख हसीना की तरह अपने देश में भारत के खिलाफ सक्रिय आतंकवादियों के शिविर को कई वर्ष पूर्व खत्म कर अपनी साख साबित की है। इसलिए बहुत ज्यादा रक्षात्मक हुए बिना भूटान के उदय में मदद करना भारत के हित में है, क्योंकि दक्षिण एशिया के लिए चीन का रुख प्रतिस्पर्धी है, न कि प्रशंसात्मक और चीन का उद्देश्य भारत को उसके पारंपरिक मैदान में मात देना है। भूटान चीन के साथ सीमा साझा करता है और चीनी प्रभाव एवं दबाव को लेकर ज्यादा संवेदनशील है। दशकों से भारत पर्यटन, व्यापार, कई तरह के निवेश/अनुदान के साथ, जिसमें प्रमुख जलविद्युत परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण एवं जानकारी शामिल है, भूटान का प्रमुख आर्थिक आधार बना हुआ है, जिसके चलते भूटान भारत को अधिशेष बिजली का निर्यात करता है।

भूटान पर्यावरण अनुकूल उद्योगों एवं वाणिज्यिक उद्यमों में भी निवेश करना चाहेगा, इसलिए भूटान नरेश ने पहली बार मुंबई की यात्रा की, जहां उन्होंने संभावित निवेशकों के साथ बातचीत की। वह भूटान की अर्थव्यवस्था से जुड़े मंत्रियों और अधिकारियों के साथ आए। भूटान के गलेफू में एक स्मार्ट सिटी शुरू होने वाला है, जिसमें एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा भारत के रेल मार्ग से जुड़ेगा। थिंपू भी आईटी युग में छलांग लगाना चाहता है और भारत इसमें उसकी सबसे बेहतर मदद कर सकता है।

संयुक्त बयान में कहा गया कि साझेदारी के नए क्षेत्रों के संदर्भ में, जिसमें अब स्टार्ट-अप, अंतरिक्ष और एसटीईएम शिक्षा शामिल है, दोनों पक्षों ने अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग की प्रगति का स्वागत किया, जिसमें भारत और भूटान द्वारा संयुक्त रूप से विकसित पहले उपग्रह का प्रक्षेपण और इस वर्ष थिंपू में उपग्रह के ग्राउंड अर्थ स्टेशन का उद्घाटन शामिल है। भूटान नरेश श्रमिक बन जाने या पलायन करने वाले अपने युवाओं को शिक्षित करना चाहते हैं। भूटान की 7,70,000 की आबादी को बेहतर स्वास्थ्य सेवा की जरूरत है। भारत ने असम के मेडिकल कॉलेजों में तीन सीटें आरक्षित करके अच्छा काम किया है।

संयुक्त बयान में भूटान के भीतर और उसके भारतीय पड़ोस में कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे के विकास पर जोर दिया गया है। भारत भूटान-बांग्लादेश सहयोग की सुविधा भी प्रदान कर रहा है, जो सबके लिए लाभप्रद है। बांग्लादेश भूटान के आयात-निर्यात के लिए समुद्री मार्ग उपलब्ध करा रहा है। दोनों देश बांग्लादेश के साथ भूटान के व्यापार के लिए हल्दीबाड़ी (पश्चिम बंगाल)-चिलाहाटी (बांग्लादेश) रेल मार्ग को एक अतिरिक्त व्यापार मार्ग के रूप में मान्यता देने पर राजी हुए हैं। दोनों देश व्यापारिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर राजी हुए, जिसमें दादगिरी (असम) में मौजूदा भूमि सीमा शुल्क स्टेशन को भारत सरकार के समर्थन से एकीकृत चेक पोस्ट में उन्नयन के साथ-साथ भूटान के गलेफू में सुविधाओं का विकास भी शामिल है।

भारत और भूटान की नियति आपस में जुड़ी हुई है और बिना किसी परेशानी के इसे आगे बढ़ाया जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने भूटान के साथ मित्रता और सहयोग के अनूठे रिश्ते के प्रति भारत की प्रतिबद्धता जताई और भूटान सरकार की प्राथमिकताओं एवं नरेश के दृष्टिकोण के अनुसार भूटान के सामाजिक-आर्थिक विकास में पूर्ण समर्थन का वचन दोहराया।

आज का इतिहास

1985 कोलंबिया में एक ज्वालामुखी विस्फोट ने तीन गांवों के साथ-साथ पूरे शहर को दफन कर दिया। यह बताया गया था कि लगभग 20,000 लोगों की जान चली गई थी।

1991 अमेरिका की मांग है कि लीबिया के नेता कर्नल गद्दाफी को दिसंबर 1988 में पैन एम की उड़ान 103 लॉकरबी पर बमबारी के आरोप में 193 आरोपों में अमेरिका के लीबिया के खुफिया अधिकारियों को सौंप दिया जाए।

1995 न्यूटन गिंगरिच के नेतृत्व में यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेस के अध्यक्ष बिल क्लिंटनैंड के बीच बजट संघर्ष के परिणामस्वरूप, संघीय सरकार को गैर-आवश्यक सेवाओं को बंद करने के लिए मजबूर किया गया था।

2001 अफगानिस्तान में युद्ध- अफगान नॉर्दन एलायंस सेनानियों ने राजधानी काबुल पर कब्ज़ा किया।

2003 खगोलविद माइकल ई। ब्राउन, चाड ट्रूजिलो और डेविड एल.रिनबोविट्ज ने ट्रांस-नेप्टुनियन ऑब्जेक्ट 90377 सेडना की खोज की।

2005 उजबेकिस्तान के लिए राजनयिक प्रतिबंधों को संयुक्त राष्ट्र द्वारा नवीनीकृत किया गया है, जो ब्रिटेन और जर्मनी की सरकारों द्वारा लगातार भंग किए गए थे। ये प्रतिबंध यूरोपीय संघ के अधिकारियों से उज़्बेकिस्तान या इसके विपरीत तोपखाने और यात्राओं की बिक्री पर प्रतिबंध लगाते हैं।

2007 डेनमार्क के प्रधानमंत्री आंद्रे फाग रासमुस्सेन ने लगातार तीसरी बार देश का कार्यभार सम्भाला।

2008 मूल इम्पैक्ट प्रोब चाँद की सतह पर उतरा।

2010 रेड बुल रेसिंग के सेबेस्टियन वेटेल ने ड्राइवर्स काम्पियनशिप जीता, जो सीजन की अंतिम दौड़ जीतने के बाद सबसे अधिक फॉर्मूला वन चैंपियन बने।

2011 2003 में स्टीफन लॉरेंस की हत्या के आरोपी दो लोगों पर लंदन के ओल्ड बेली में मुकदमा चलाया जा रहा है।

2014 विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार पश्चिम अफ्रीका में तीन सबसे बुरी तरह प्रभावित देशों - गिनी, लाइबेरिया और सिएरा लियोन में मृत्यु की संख्या 5,000 से पार हो गई है।

राम की नीति से आज की राजनीति को सीख लेने का समय

उमेश चतुर्वेदी

भारतीय त्योहारों की एक विशेषता है, वे व्यक्तिगत होते हुए भी सामूहिकता का ना सिर्फ बोध कराते हैं, बल्कि वे व्यक्ति को समूह की सामाजिकता से बांध देते हैं। जब त्योहार आते हैं, तो भारतीय समाज का जातिबोध, जातीय श्रेष्ठता बोध अपने-आप जैसे कहीं तिरोहित हो जाता है। लेकिन इस संदर्भ में राजनीति को देखिए, वह अपने हर कदम पर समाज को बांटती ही रहती है, कभी धर्म के नाम पर तो कभी जाति के नाम पर तो कभी आर्थिक हैसियत की बुनियाद पर। जैसे ही त्योहार की हमारी स्मृति धुंधली होती है, राजनीति हमारे मानस पर हावी हो जाती है और फिर हर दीप अकेला होता जाता है। दीपावली राम के अयोध्या आगमन की स्मृति का त्योहार माना जाता है। राम की नीति से आज की राजनीति को सीख लेनी चाहिए। वे अयोध्या के राजकुमार थे, लेकिन वचन के पक्के थे, इसलिए वनवास चले गए। चाहते तो जंगल में भी वे आराम से रह सकते थे। अयोध्या नहीं तो जनकपुर उनके सुख का ध्यान रखता। लेकिन उन्होंने कठिन परिस्थितियों में चलते रहना चुना। उनका चलना क्या था? लोक और प्रकृति से जुड़ाव। वे अवतार थे, सीता हरण के बाद अपने या अपने ससुराल की राजकीय ताकतों से सीता को खोज सकते थे। लेकिन उन्होंने जंगल के जीवों और प्रकृति से सीता के बारे में पूछना जरूरी समझा, हे खग-मृग, हे मधुकर श्रेणी, तुम देखी सीता मृगनयनी। वे चाहते तो अपनी सेनाएं बुलाकर रावण के राज पर हमला कर सकते थे, लेकिन उन्होंने वानर, भालू, कील, किरात का साथ लेना जरूरी समझा। एक तरह से कह सकते हैं कि मर्यादापुरुषोत्तम राम लोकतांत्रिक भागीदारी के साथ अपना लक्ष्य हासिल करना चाहते थे। रोशनी के त्योहार दीपावली के बीच आज की राजनीति को राम से सीखना चाहिए। लेकिन वह राजनीति ही क्या, जो इससे सीख ले और सचमुच सर्वसमभाव के पथ पर आगे बढ़ सके। दीपावली प्रकाश का पर्व है और जैसे हालात हैं उसे देखते हुए यह उम्मीद करना कठिन है कि आज की राजनीति इस पर्व पर राम के वैचारिक आलोक को ग्रहण करने की कोशिश करेगी। इसकी पड़ताल करना हो तो हाल की राजनीति की कुछ घटनाओं को देखिए। वैसे तो देश के हर इलाके की अपनी विरासत है, उनकी अपनी संस्कृति है। लेकिन बिहार उनमें अलग है। वहां प्राचीन काल में नालंदा जैसा विश्वविद्यालय था, जहां ज्ञान की अलौकिक ज्योति जलती थी। उसी नालंदा से आते हैं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार। अव्वल तो उनसे उम्मीद रहती रही है कि वे बदजुबानी नहीं करेंगे। लेकिन बिहार विधानमंडल के मौजूदा शीतकालीन सत्र में जिस

तरह दो दिनों में उन्होंने बदजुबानी की, उससे समूचा देश हैरत में रह गया। संसद में जनसंख्या नियंत्रण के संदर्भ में एक तरह से उन्होंने कोकशास्त्रीय भाषा का इस्तेमाल किया। शब्द कर्म की दुनिया में कहा जाता है कि कोई भी विषय खराब नहीं होता, उसका ट्रीटमेंट उसे अच्छा या खराब बनाता है। रोशनी के त्योहार के ठीक पहले नीतीश कुमार ने गोपन अंधेरे वाले विषय का जैसा ट्रीटमेंट किया, उनकी जुबान उसमें सहभागी बनी, ऐसे में बवेला होना ही था। बात यहीं तक सीमित रहती तो एक पल के लिए उनके इस कृत्य को उनके अतीत की उपलब्धियों के चलते भुला दिया जाता। लेकिन इसके अगले ही दिन उन्होंने अपने ही पूर्व साथी और वरिष्ठ नेता जीतन राम मांझी के साथ जिस तरह से तू-तड़ाक की भाषा का इस्तेमाल किया, उसने उनकी अशोभन छवि बनाई। नालंदा विश्वविद्यालय की माटी से आने वाले अनुभवी राजनेता से ऐसी उम्मीद नहीं थी। लेकिन उन्होंने किया और एक तरह समाज में नई खाई ही बना दी। उनके शराबबंदी कानून के चलते उनकी मुतमईन रही महिलाएं अब उनसे अपसेट हैं। पिछड़ों में अति पिछड़ा और दलितों में अति दलित की उन्होंने श्रेणियां बनाईं, उससे इस वर्ग में उनके प्रति जो आदरबोध था, जीतनराम मांझी के साथ तू-तड़ाक करने से वह जैसे चकनाचूर हो गया। हमारे लोकतंत्र का प्रमुख हिस्सा चुनाव ऐसा बन गया है कि अगर चुनावी मैदान में पैंतरेबाजी ना हो तो जैसे सबकुछ सूना लगता है। अतीत में चुनाव ऐसे भी हुए हैं, जब प्रतिद्वंद्वी के पास पैसे नहीं होते थे वह अपने मजबूत प्रतिद्वंद्वी से मांग लेता था। 1980 के आम चुनाव में कमलापति त्रिपाठी के खिलाफ लोकदल की ओर से राजनारायण मैदान में थे। इसके तीन साल पहले उन्होंने इंदिरा गांधी को रायबरेली के मैदान में हराया था। उसके बाद देश के स्वास्थ्य मंत्री बने थे। लेकिन राजनारायण फक्कड़ थे। पैसे उनके पास नहीं रहते थे। एक बार चुनाव प्रचार के दौरान उनके काफिले का सामना पंडित कमलापति त्रिपाठी से हो गया। राजनारायण जी ने त्रिपाठी जी को घेर लिया, उनके पांव छुए और जीत का आशीर्वाद मांगा। कमलापति उनके प्रतिद्वंद्वी थे। लेकिन उन्होंने राजनारायण को जीत का आशीर्वाद दिया। फिर राजनारायण ने उनसे पैसे मांगे, क्योंकि उनके पास अपने साथियों को चाय पिलाने के लिए पैसे तक नहीं थे। पंडित जी ने उन्हें पैसे भी दिए।

1993 में दिल्ली विधानसभा का पहला चुनाव था। तब दिल्ली में जनता दल, कांग्रेस और भाजपा का दबदबा था। दिल्ली की नांगलोई विधानसभा सीट से जनता दल के प्रत्याशी थे डॉक्टर सतीश यादव, जबकि कांग्रेस प्रत्याशी थे राजकुमार चौहान और भाजपा के प्रत्याशी थे देवेंद्र शौकीन। तीनों ने एक-दूसरे के खिलाफ कुछ नहीं बोला। तब दिल्ली से छपने वाले अखबारों की सुर्खियां ये तीनों उम्मीदवार थे। लेकिन अब का चुनाव देखिए। छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव में राज्य बीजेपी के कद्दावर नेता बृजमोहन अग्रवाल पर सरेआम हमला किया गया। यह तब हुआ, जब प्रकाश का पर्व दीपावली नजदीक है।

जाति को ही लीजिए, सामाजिक रूप से जातियों के बीच आपसी संबंध पहले जैसे कठोर नहीं रहे। कस्बायी स्तर तक अंतरजातीय विवाह होने लगे है। तीन-चार दशक पहले की तरह अब अंतरजातीय विवाहों पर नांक भौं नहीं सिकोड़े जाते। लेकिन राजनीति हर बार इस जातीय विलयन की राह में बाधा बनकर आ जाती है। कभी आरक्षण को लेकर तो कभी आर्थिक हैसियत को लेकर तो कभी वोट बैंक को लेकर। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और सबसे कमजोर एवं पिछड़ा माने जाने वाले तबके मुसहर समाज से आने वाले जीतनराम मांझी की समधन ज्योति देवी गया जिले की टेकारी से विधायक हैं। नीतीश कुमार की बदजुबानी से मचे बवंडर के बीच उन्होंने जो कहा, उस पर गौर किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भगवान ने सिर्फ दो जाति बनाई है-औरत और मर्द। राजनीति को इसी हिसाब से सोचना चाहिए।

आज की भारतीय राजनीति मोटे तौर पर तीन वैचारिक आधारों के बीच बंटी है, समाजवादी धारा की राजनीति अपने को ज्यादा संतुलित होने का दावा करती है, तो मार्क्सवादी धारा की राजनीति वर्ग के हिसाब से चलती है, जबकि राष्ट्रवादी राजनीति भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा की बात करती है। तीनों की वैचारिकी के मूल में जाति नहीं, आर्थिक और सामाजिक बराबरी का भाव है। लेकिन जब तीनों ही राजनीति हकीकत की जमीन पर उतरती हैं तो उनका रूप बदल जाता है। तीनों ही जाति, कोटरी और सामाजिक खींचतान की बुनियाद पर अपना समर्थक आधार बनाने की कोशिश करती है।

सत्ता में वापसी की खातिर भाजपा ने किया उम्र सीमा से समझौता

सुरेंद्र जोशी

भाजपा ने कर्नाटक में युवा चेहरों को प्रत्याशी बनाकर जो हार झेली है, उससे मध्य प्रदेश चुनाव में सबक लिया है। पार्टी ने पांचवीं बार सत्ता में वापसी के लिए उम्रदराज नेताओं को भी बड़ी संख्या में मैदान में उतारा है। 14 नेताओं की उम्र तो 70 पार है। वहीं, कांग्रेस ने नौ प्रत्याशी 70 पार हैं। प्रदेश में 17 नवंबर को होने वाले मतदान में अब मात्र चार दिन शेष हैं और भाजपा इसमें जीत के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रही है। पीएम मोदी स्वयं जबर्दस्त दौरे और रोड शो के जरिए अपनी पार्टी को जीत दिलाने में जुटे हैं। पार्टी ने प्रदेश की 230 सीटों पर तीन केंद्रीय मंत्रियों समेत सात सांसदों और एक पार्टी महासचिव को मैदान में उतारा है, ताकि सत्ता विरोधी लहर का विफल किया जा सके। प्रदेश में पांचवीं बार सरकार बनाने के इरादे से पार्टी ने नई पीढ़ी को आगे लाने व बुजुर्ग नेताओं को रिटायर करने की अपनी नीति को भी इस बार थोड़ा शिथिल किया है, वहीं कांग्रेस भी सत्ता में वापसी के लिए जी जान से जुटी है और आक्रामक ढंग से प्रचार कर रही है। पार्टी के कई दिग्गज नेता प्रचार के अंतिम चरण में सघन दौरे कर रहे हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षकों के अनुसार भाजपा ने उम्र सीमा से समझौते का फैसला कर्नाटक चुनाव में पार्टी का मिली हार के कारण लिया है। कर्नाटक में वरिष्ठ व बुजुर्ग नेताओं के बजाए बूढे नेताओं को ज्यादा तवज्जो दी थी। यहां तक कि पार्टी ने पूर्व सीएम जगदीश शेट्टार (67) और पूर्व उप मुख्यमंत्री केएस ईश्वरप्पा (74) को भी टिकट नहीं दिया था। इसे पार्टी की पराजय का बड़ा कारण माना गया था। कर्नाटक जैसी गलती मप्र में न हो इसलिए भाजपा ने सतना जिले की नागौद सीट से पूर्व मंत्री नागेंद्र सिंह नागौद (80) को और रीवा जिले के गुढ़ सीट से नागेंद्र सिंह (79) को मैदान में उतारा है। गुढ़ सीट पर आप ने प्रखर प्रताप सिंह को टिकट दिया है, जो अमेरिका में बड़ी नौकरी छोड़कर चुनाव लड़ रहे हैं। 25 वर्ष के प्रखर प्रदेश चुनाव में सबसे युवा प्रत्याशी हैं। राजनीतिक पर्यवेक्षक जयराम शुक्ला का नागौद और नागेंद्र सिंह ने पांच माह पहले ही चुनाव लड़ने से इनकार कर दिया था, इसके बाद भी पार्टी ने उन्हें प्रत्याशी बनाया है। शुक्ला पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन की पत्रिका चरैवैति के पूर्व संपादक हैं। भाजपा ने मप्र के पूर्व वित्त मंत्री जयंत मलैया (76) को दमोह से और 75 साल के जगन्नाथ सिंह रघुवंशी को अशोक नगर जिले की चंदेरी सीट से टिकट दिया है। वहीं, पूर्व स्पीकर सीताशरण शर्मा (73) को नर्मदापुरम से प्रत्याशी बनाया है। जबकि 73 साल के बिसाहूलाल सिंह को अनूपपुर सीट से तो 73 साल की माया सिंह को ग्वालियर पूर्व से टिकट दिया है। बता दें, 2016 में भाजपा ने पूर्व केंद्रीय मंत्री व सांसद सरताज सिंह को उम्र ज्यादा होने के चलते ही शिवराज सरकार से बाहर का रास्ता दिखा दिया था। इतना ही नहीं 2018 के विधानसभा चुनाव में सिंह को टिकट से भी वंचित रखा था, तब वे 78 वर्ष के थे। हालांकि, इसके बाद उन्होंने भाजपा छोड़ दी और कांग्रेस में शामिल हो गए थे। वे होशंगाबाद सीट से चुनाव लड़े, लेकिन पराजित हो गए थे। भाजपा ने सरताज सिंह की तरह ही पूर्व मंत्री कुसुम मेहदले को भी टिकट नहीं दिया था। अब वे 80 साल की हैं। भाजपा कांग्रेस पर थके व बूढ़े ताओं को टिकट देने का आरोप लगा रही है, जबकि कांग्रेस ने सिर्फ 70 से ज्यादा उम्र के सिर्फ 9 प्रत्याशियों को टिकट दिया है। कांग्रेस के सबसे बुजुर्ग प्रत्याशी 77 वर्ष के हैं। पार्टी ने 77 वर्ष के नरेंद्र नाहटा को नीमच जिले की मनासा सीट से टिकट दिया है। दूसरे नंबर पर पूर्व सीएम व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ हैं, जो 76 वर्ष के होकर छिंदवाड़ा से मैदान में हैं। इसी तरह कांग्रेस ने धार जिले की बदनावर सीट से 73 साल के भंवरसिंह शेखावत, अमर पाटन से राजेंद्र कुमार सिंह, होशंगाबाद से 73 साल के गिरिजाशंकर शर्मा, 72 साल के गोविंद सिंह को भिंड के लहार से, इसी उम्र के बैजनाथ सिंह यादव को शिवपुरी के कोलारस से, 71 साल के सज्जन सिंह वर्मा को सोनकच्छ देवास से और उनके हम उम्र सुभाष सिंह सोजतिया को गरोठ से मैदान में उतारा है। मप्र चुनाव में भाजपा द्वारा बूढ़े नेताओं को टिकट देने से कई लोग हैरान हैं। याद रहे कि अप्रैल 2019 में तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने कहा था कि पार्टी ने फैसला किया है कि 75 साल से ज्यादा उम्र के नेताओं को लोकसभा टिकट नहीं दिया जाएगा। इसके बाद ही लालकृष्ण आडवाणी और डॉ. मुरली मनोहर जोशी को घर बिठा दिया गया था।

तेलंगाना की राजनीति में परिवारवाद हावी

नितिन गौतम

राजनीति में अक्सर परिवारवाद के आरोप लगते हैं लेकिन तेलंगाना की राजनीति में परिवारवाद चरम पर है। यहां एक ही परिवार के कई-कई सदस्य चुनाव मैदान में हैं। खास बात ये है कि तेलंगाना में हर पार्टी में परिवारवाद है लेकिन सत्ताधारी बीआरएस और कांग्रेस में यह कुछ ज्यादा है। सीएम केसीआर पर अक्सर परिवारवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगते हैं। बता दें कि तेलंगाना विधानसभा चुनाव में सीएम केसीआर खुद गजवेल और कामारेड्डी सीटों से चुनाव लड़ रहे हैं। वहीं उनके बेटे और बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव सिरसिला से चुनाव मैदान में हैं। सीएम केसीआर के

भतीजे और राज्य के स्वास्थ्य मंत्री टी हरीश राव सिद्दीपेट से फिर से चुनाव लड़ रहे हैं। केटी रामाराव को राजनीति में परिवारवाद को गलत ही नहीं मानते और इसे स्वभावित बताते हैं। वहीं कांग्रेस ने पार्टी के सांसद एन उत्तम कुमार रेड्डी को हुजूरनगर सीट से और साथ ही उनकी पत्नी एन पद्मावती को कोडाड सीट से टिकट दिया है। मौजूदा विधायक हनुमंत राव हैदराबाद की मलकाजगिरी सीट से और उनके बेटे रोहित राव मेडक सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। बता दें कि हनुमंत राव पहले बीआरएस में थे और पार्टी ने उन्हें फिर से मयनपल्ली सीट से टिकट दिया था लेकिन हनुमंत राव ने बीआरएस छोड़ दी। अब कांग्रेस ने हनुमंत राव के साथ ही उनके बेटे को भी टिकट दिया है। कांग्रेस के सांसद कोमाटीरेड्डी वेंकट रेड्डी के साथ ही उनके भाई राज गोपाल रेड्डी को भी टिकट दिया गया है। साथ ही जी विवेक को चेन्नूर से तो उनके भाई जी विनोद को बेल्लामपल्ले से टिकट दिया गया है। केटी रामाराव ने कांग्रेस पर अपने ही उदयपुर घोषणा पत्र का उल्लंघन करने का आरोप लगाया है। रामा राव ने कहा कांग्रेस ने उदयपुर घोषणा पत्र में एलान किया था कि एक परिवार से एक ही व्यक्ति को टिकट दिया जाएगा लेकिन तेलंगाना में एक ही परिवार के कितने सदस्यों को टिकट दिया जा रहा है? रामाराव ने कहा कि घोषणा पत्र जारी करने का क्या मतलब है जब आप उन घोषणा पत्र की बातों को गंभीरता से लागू ही नहीं कर सकते।

युवाओं और महिला मतदाताओं पर है सर्वाधिक दारोमदार

उमेश चतुर्वेदी

पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों का बिगुल बज चुका है। राजनीतिक दलों के सियासी जोड़-घटाव में जुड़ना स्वाभाविक है। लेकिन चुनाव आयोग के आंकड़ों पर भरोसा करें तो इन चुनावों में सबसे अहम भूमिका युवा मतदाताओं की होने जा रही है। माना जा रहा है कि जिन्होंने युवाओं को साध लिया, जीत उसके हाथ लगने की संभावना ज्यादा है। इसकी वजह है, इन राज्यों में नए वोटर बने कुल मतदाताओं की संख्या। पांचों राज्यों में पहली बार करीब साठ लाख वोटर मतदान करने वाले हैं। जाहिर हैं कि उनमें पहली बार वोट डालने का उत्साह है और वे अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग भी पूरे उत्साह से करेंगे। जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, उनमें जनसंख्या के लिहाज सबसे बड़ा राज्य मध्य प्रदेश है। यहां सबसे ज्यादा 22 लाख 36 हजार नए वोटर बने हैं। राज्य में 230 विधानसभा सीटें हैं। इस लिहाज से देखें तो औसतन हर सीट पर करीब 9722 नए वोटर होंगे। लेकिन प्रति सीट नए वोटर के लिहाज से राजस्थान की स्थिति मध्य प्रदेश से बेहतर है। राजस्थान विधानसभा चुनावों में पहली बार करीब 22 लाख चार हजार वोटर वोट डालने जा रहे हैं। राज्य की 200 विधानसभा सीटों के लिहाज से देखें तो हर सीट पर करीब 11020 नए वोटर होंगे। इसी तरह छत्तीसगढ़ में सात लाख 23 हजार नए वोटर बने हैं। जिनका प्रति सीट औसत आठ हजार 33 हो रहा है। नए वोटरों के रुझान और उससे पड़ने वाले सियासी प्रभावों के पहले तीनों राज्यों में महिला वोटरों की संख्या पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसकी वजह यह है कि पिछले कुछ चुनावों से महिलाओं के मतदान का रुझान अपने परिवारों से कुछ अलग नजर आया है। पहले माना जाता रहा कि परिवार के पुरुष मुखिया के वैचारिक रूझान के हिसाब से ही महिलाएं भी वोट देती रही हैं। लेकिन अब महिलाएं अपनी पसंद के हिसाब से वोट डालने लगी हैं। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में

मोदी की जीत के पीछे महिलाओं और युवा वोटरों का साथ माना गया था।

छत्तीसगढ़ ऐसा राज्य है, जहां पुरुष वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या ज्यादा है। यहां के एक करोड़ एक लाख पुरुष वोटरों की तुलना में महिला वोटरों की संख्या एक करोड़ दो लाख है। जाहिर है कि हर सीट पर करीब 1111 महिला वोटर पुरुष वोटरों की बनिस्बत ज्यादा हैं। हालांकि मध्य प्रदेश और राजस्थान में ऐसी स्थिति नहीं है। राजस्थान में दो करोड़ 74 लाख वोटरों के सामने करीब दो करोड़ 52 लाख ही महिला वोटर हैं। इसी तरह मध्य प्रदेश के दो करोड़ 88 लाख पुरुष वोटरों के अनुपात में महिला वोटरों की संख्या दो करोड़ 72 लाख ही है।

इन आंकड़ों पर फौरी तौर पर निगाह देने की जरूरत विगत के मतदान में में युवा और महिला वोटरों की भागीदारी का रुझान है। दोनों वर्गों के मतदाताओं ने जिसे चाहा, जीत उसे ही हासिल हुई। विगत के हिमाचल चुनावों में महिलाओं ने कांग्रेस को सबसे ज्यादा समर्थन दिया, जिसकी वजह से कांग्रेस को भाजपा के मुकाबले कुल 36 हजार से कुछ ज्यादा मत मिले और वह जीत हासिल करने में कामयाब रही। कुछ ऐसी ही स्थिति कर्नाटक में भी रही। वहां के स्थानीय मुद्दों खासकर पांच गारंटी और महंगाई ने महिलाओं और युवाओं को ज्यादा लुभाया। इस लिहाज से देखें तो राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनावों में

भी महिला और युवा वोटर बड़ी भूमिका निभाने जा रहे हैं। शायद यही वजह है कि तीनों ही राज्यों के दोनों प्रमुख प्रतिद्वंद्वी दलों की कोशिश महिलाओं और युवाओं को रिझाने की है। महिला सम्मान निधि और युवाओं को बेरोजगारी भत्ता आदि देने के जो दनादन वायदे किये जाते रहे, उसकी वजह यही रही। साल 1989 के चुनावों के पहले तत्कालीन राजीव सरकार ने युवाओं के मतदान के लिए उम्र सीमा को 21 से घटाकर 18 साल कर दिया था। राजीव को उम्मीद थी कि उन्हें युवाओं का साथ मिलेगा। साल 2014 के ठीक पहले सचिन तेंदुलकर को भारत रत्न देने के पीछे तत्कालीन कांग्रेस सरकार की सोच सचिन को सम्मानित करने के साथ ही इसके जरिए युवाओं में पैठ बनाने की थी। यह बात और है कि दोनों ही बार कांग्रेस का दांव नाकाम रहा। चुनावी पंडित मानते हैं कि राजीव की हार में नए बने करोड़ों वोटरों ने बड़ी भूमिका निभाई थी। हाल के वर्षों में महिलाओं ने जिस तरह खुलकर अपनी पसंद के हिसाब से मतदान करना और राजनीति उम्मीदवार को चुनना शुरू किया है, वह अब छुपा नहीं है। 2020 के बिहार विधानसभा चुनावों में विपरीत हालात के बाद नीतीश को जीत मिली, उसकी बड़ी वजह महिलाओं का समर्थन रहा। इसी तरह 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में योगी सरकार को महिलाओं ने खूब समर्थन दिया। पश्चिम बंगाल में ममता के साथ महिला वोटर पूरे दम के साथ खड़ी रहीं। इन चुनावों के नतीजे सामने हैं। इस लिहाज से देखें तो राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनावी नतीजों पर बड़ा दारोमदार महिलाओं पर ही होगा। छत्तीसगढ़ में तो महिलाएं पुरूषों के मुकाबले ज्यादा ही हैं, इसलिए वहां तो यह साफ लग रहा है कि जिधर महिलाएं गईं, उसी के नेता के सिर ताज होगा। उनके वोटों में अगर युवाओं का साथ मिल गया तो उस दल के लिए वह सोने पर सुहागा ही होगा। अभी तीनों राज्यों में चुनावी तापमान धीरे-धीरे बढ़ रहा है।

राजस्थान में ओबीसी जिधर जाएगा, वही सरकार बनायेगा

निरंजन परिहार

राजस्थान में कांग्रेस, बीजेपी और सभी पार्टियों का सारा दारोमदार अब सीधे ओबीसी वोटरों पर है। बीजेपी की कोशिश है कि ओबीसी वोटर उसके साथ जुड़ा रहे, तो विधानसभा चुनाव के बाद लोकसभा चुनाव में भी उसे सीधा लाभ होगा इसीलिए राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस भी मोदी और बीजेपी दोनों की काट में ओबीसी को अपने साथ जोड़े रखने पर पूरा फोकस किए हुए हैं।

कांग्रेस में अशोक गहलोत और सचिन पायलट सबसे बड़े ओबीसी चेहरे हैं, तो क्षेत्रिय दल राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल के हनुमान बेनीवाल भी अपने ओबीसी होने को ही फोकस कर रहे हैं। राजस्थान की आबादी में ओबीसी मतदाता सर्वाधिक लगभग 48 फीसदी होने और 200 विधानसभा सीटों में से सीधे सीधे 150 सीटों पर निर्णायक होने के बावजूद ओबीसी को सामान्य वर्ग में ही गिना जाता हैं, क्योंकि विधानसभा सीटों में आरक्षण केवल अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए ही हैं। राजस्थान में एससी 18 फीसदी और एसटी 14 फीसदी हैं, जबकि ओबीसी सबसे ज्यादा 48 फीसदी हैं। ओबीसी वर्ग में तीन सबसे बड़ी जातियां जाट, गुर्जर व माली-सैनी ओबीसी के ताकतवर समुदाय गिने जाते हैं। ओबीसी में जाटों की हिस्सेदारी लगभग 10 फीसदी है, गुर्जर 7.5 फीसदी और माली-सैनी 6.5 फीसदी के आसपास हैं। हालांकि, राजस्थान में जाटों और दलितों की दोस्ती का बीजेपी पर असर क्या होगा, इसकी तस्वीर फिलहाल साफ नहीं है, मगर कांग्रेस को सीधा नुकसान और बीजेपी को लाभ जरूर होगा, यह दिख रहा है।

जाट, गुर्जर व माली-सैनी, ये तीनों जातियां ताकतवर होने व सबसे ज्यादा होने के बावजूद सन 2018 के विधानसभा चुनाव में 200 सीटों में से 38 सीटों पर जाट विधायक जीते, गुर्जर 8 और माली-सैनी केवल 2 ही विधायक जीते। माली-सैनी विधायक सबसे कम होने का सबसे बड़ा कारण है कि इस समाज ने अपनी ताकत की राजनीतिक एकजुटता कभी नहीं दिखाई और ज्यादातर लोग भले ही वोट बीजेपी को भी देते रहे, मगर समाज ने अपनी सारी ताकत तीन बार मुख्यमंत्री रहे अशोक गहलोत में निहित मान ली है, क्योंकि वे ही माली-सैनी के सबसे बड़े नेता भी हैं।

जाटों में कई नेता हैं, लेकिन जाट राजघराने धौलपुर रिसायत की पूर्व महारानी होने के कारण वसुंधरा राजे जाटों की भी सबसे बड़ी नेता हैं और इन दिनों राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) जैसे क्षेत्रिय दल के मुखिया के रूप में जाट नेता हनुमान बेनीवाल भी सुर्खियां बटोर रहे हैं, तो गुर्जरों में सचिन पायलट कद्दावर नेता गिने जाते हैं। जाट समुदाय के लोग राजस्थान में कम से कम 65 विधानसभा सीटों पर हार जीत को प्रभावित करते हैं, इसी कारण दोनों पार्टियों में कुल मिलाकर लगभग 20 फीसदी विधायक पदों पर जाट जीतते हैं।

राजस्थान विधानसभा की कुल 200 सीट में से 33 सीटें अनुसूचित जाति और 25 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। बाकी बची 142 सीटें सामान्य वर्ग के लिए है, जिसके लिए बहुत गहराई से अध्ययन करने के बाद ही आरएलपी के मुखिया हनुमान बेनीवाल ने 10 फीसदी जाटों और 18 फीसदी एससी को मिलाकर

दलित - जाट मतदाता का गठबंधन बनाया है। इसका अगर सही और सीधा असर रहा, तो माना जा रहा है कि यह आने वाले विधानसभा के चुनावी समीकरण बदलने में जबरदस्त सफल रहेगा। बेनीवाल ने आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के मुखिया चंद्रशेखर आजाद से भी राजस्थान में हाथ मिलाया है।

बीजेपी जान रही थी कि इस गठबंधन के कारण ओबीसी को साधने का उसका निशाना चूक सकता है, इसी वजह से बीजेपी हनुमान बेनीवाल का निशाना असफल बनाने की कोशिश में बेहद सधे हुए कदमों से अपनी चाल चल रही है। बीजेपी ने अपने कद्दावर जाट नेताओं के सामने आरएलपी - दलित गठबंधन के कमजोर उम्मीदवार देने के मामले में बेनीवाल को मना लिया है, ऐसा साफ लग रहा है। पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब राजस्थान आए थे, तो उन्होंने ओबीसी वर्ग को बीजेपी द्वारा दिए गए फायदों को गिनाते हुए कहा कि उनकी पार्टी सभी वर्गों का विशेष ध्यान रखती है, खासतौर पर वंचित वर्ग का। मोदी जब यह कह रहे थे, तो उनके दिमाग में स्पष्ट तौर पर यही था कि राजस्थान में ओबीसी से बड़ा वंचित वर्ग और कोई नहीं है।

साफ दिख रहा है कि राजस्थान विधानसभा चुनाव में बीजेपी ओबीसी के सबसे बड़े वर्ग जाटों को साथ रखे रहने की पूरी कोशिश में है, तो गुर्जर वोट भी बड़े पैमाने पर बीजेपी के साथ तेजी से जुड़ रहा है, जो कि पिछली बार नहीं था। इसका सीधा फायदा बीजेपी की सीटों में इजाफा करेगा। राजस्थान में बीजेपी जान रही है कि ओबीसी वर्ग के वोटरों का सबसे बड़ा हिस्सा उसी के पास है। अशोक गहलोत ओबीसी वर्ग से होने और लगातार 5 साल तक मुख्यमंत्री रहने के बावजूद ओबीसी को कांग्रेस के साथ जोड़ने में कोई खास सफल नहीं रहे हैं।

राजनीति के जानकार मानते हैं कि अशोक गहलोत को इस बार के मुख्यमंत्री काल में फ्री हैंड तो मिला, मगर कांग्रेस के अंदरूनी राजनीतिक हालातों और सचिन पायलट द्वारा हर कुछ माह में कुर्सी हड़पने की कोशिशों के कारण वे पूरे पांच साल अपनी मुख्यमंत्री की कुर्सी बचाने में ही लगे रहे। इसके कारण वे ओबीसी को अपने साथ नहीं जोड़ सके। गहलोत जाति से सैनी (माली) हैं मगर उनकी अपनी ही जाति के वोट उनके विधानसभा क्षेत्र सरदारपुरा (जोधपुर) को छोड़कर लगभग 70 फीसदी से ज्यादा पूरे राजस्थान में बीजेपी को मिलते हैं।

राजस्थान में कांग्रेस के दूसरे सबसे बड़े नेता सचिन पायलट भी गुर्जर होने के कारण होने को तो ओबीसी ही हैं, मगर वे गुर्जर या ओबीसी नेता के रूप में स्वयं को स्थापित करने से बचते रहे। अपने समुदाय में उनका जबरदस्त प्रभाव है। गुर्जर बीजेपी का परंपरागत वोटर रहा है, लेकिन 2018 के चुनाव में पायलट के मुख्यमंत्री बनने की आस में गुर्जर मतदाता कांग्रेस के साथ खड़ा हो गया था। पायलट के नेतृत्व में कांग्रेस सत्ता के करीब तो पहुंची, मगर बहुमत 200 में से 100 सीटों पर ही होने की वजह से सरकार के कभी भी गिरने की संभावना में गहलोत ही सबसे सही नेता होने के कारण कांग्रेस ने पायलट को किनारे कर दिया और गहलोत मुख्यमंत्री बन गए, तो गुर्जर भी कांग्रेस से बिदक गया। इस चुनाव में पायलट शांत शांत से हैं और गुर्जर कांग्रेस को मजा चखाने की फिराक में फिर से बीजेपी की तरफ शिफ्ट कर रहा है।

इसलिए राजस्थान में इतना कहा जा सकता है कि ओबीसी कांग्रेस से अधिक बीजेपी की ओर झुका हुआ दिखाई दे रहा है और यही उसके लिए उम्मीद की किरण भी है। जहां तक कांग्रेस का सवाल है तो उसके पास भी राजस्थान में ओबीसी समुदाय से आनेवाला अशोक गहलोत जैसा कद्दावर नेता है। बाकी चुनाव परिणाम बतायेगा कि ओबीसी को कौन पसंद आया। जो पसंद आयेगा, राजस्थान में वही सरकार बनायेगा।

बजरंगबली के 12 नामों में है असीम शक्ति

बजरंगबली के 12 नाम का स्मरण करने से ना सिर्फ उम्र में वृद्धि होती है बल्कि समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति भी होती है। 12 नामों का निरंतर जप करने वाले व्यक्ति की श्री हनुमानजी महाराज दसों दिशाओं एवं आकाश-पाताल से रक्षा करते हैं।

1. ऊँ हनुमान
2. ऊँ अंजनी सुत
3. ऊँ वायु पुत्र
4. ऊँ महाबल
5. ऊँ रामेष्ठ
6. ऊँ फाल्गुण सखा
7. ऊँ पिंगाक्ष
8. ऊँ अमित विक्रम
9. ऊँ उदधिक्रमण
10. ऊँ सीता शोक विनाशन
11. ऊँ लक्ष्मण प्राण दाता
12. ऊँ दशग्रीव दर्पहा

12 नामों से होने वाले लाभ

1. प्रातःकाल सो कर उठते ही जिस अवस्था में भी हो बारह नामों को 11 बार लेने वाला व्यक्ति दीर्घायु होता है।

2. नित्य नियम के समय नाम लेने से इष्ट की प्राप्ति होती है।

3. दोपहर में नाम लेने वाला व्यक्ति धनवान होता है। संध्या के समय नाम लेने वाला व्यक्ति पारिवारिक सुखों से तृप्त होता है।

4. रात्रि को सोते समय नाम लेने वाले व्यक्ति की शत्रु से जीत होती है।

5. उपरोक्त समय के अतिरिक्त इन बारह नामों का निरंतर जप करने वाले व्यक्ति की श्री हनुमानजी महाराज दसों दिशाओं एवं आकाश पाताल से रक्षा करते हैं।

अस्त ग्रह के अशुभ परिणाम क्या होते हैं ?

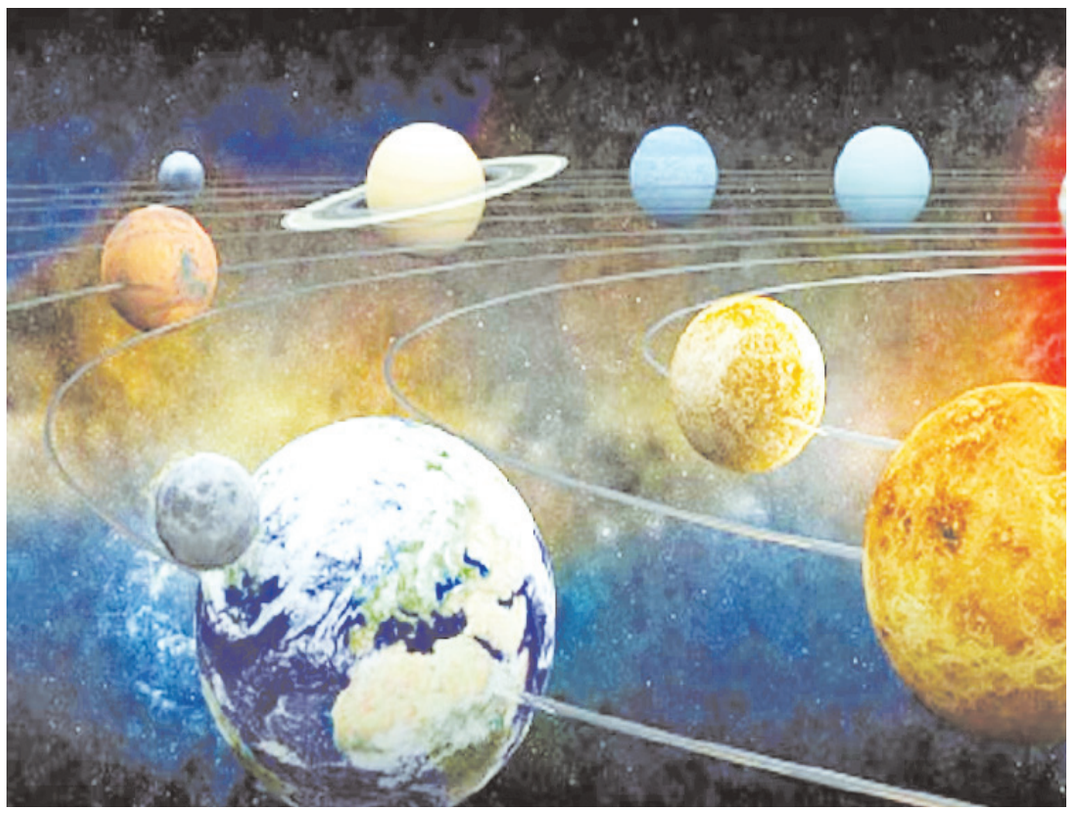

सूर्य ग्रहों के राजा हैं और सूर्य को सबसे शक्तिशाली ग्रह की संज्ञा प्राप्त है और उसका कारण सूर्य का तेज होता है। वैदिक ज्योतिष के कई महत्वपूर्ण सूत्र है और अस्त ग्रहों के बारे में भी विस्तार से बताया गया है। दरअसल कोई ग्रह जब सूर्य के इतना निकट चला जाए की वो सूर्य के तेज और ओज से प्रभावहीन हो जाए तो ऐसे ग्रह को अस्त ग्रह कहा जाता है। माना जाता है कि वो शुभ फल नहीं देता हैं। ऐसे ग्रह कुपित ग्रह कहलाते हैं और माना जाता है कि इनकी दशा अंतर्दशा में इनका शुभ फल प्राप्त नहीं होता है। सूर्य के अलावा बाकी सभी ग्रहों के अस्त होने का दोष लगता है जिनकी जानकारी निम्नलिखित है।

कोई भी ग्रह कब अस्त होगा ?

चन्द्रमा 12 अंश पर, मंगल 7 अंश पर, बुध 13 अंश पर, गुरु 11 अंश पर, शुक्र 9 अंश पर और शनि 15 अंश पर अस्त होते हैं यानी कि अगर कोई भी ग्रह सूर्य की परिधि में इतने अंश तक आ गया तो वो अस्त हो जाता है। जैसे शुक्र 8 डिग्री का और सूर्य 14 डिग्री का एक ही भाव में हो तो दोनों में सिर्फ 6 डिग्री का अंतर आया यानी कि वो अब अस्त ग्रह हो गया। अब ऐसा ग्रह अपने कारक का शुभ फल प्रकट नहीं कर पाता है। हालांकि बुध सदैव सूर्य के समीप ही रहता है इसलिए कहा जाता है कि बुध के लिए 3 डिग्री को माना जाना चाहिए। अगर कोई भी ग्रह सूर्य के साथ है और उससे 15 डिग्री के फासले पर है तो वो पूर्ण उदित हुआ और अगर फासला सिर्फ 8 डिग्री का है तो वो मध्यम हुआ और अगर फासला 7 डिग्री से कम है तो ऐसा ग्रह बुध को छोड़कर पूर्ण अस्त कहा जाता है।

अस्त ग्रह का फल क्या होता है ?

चन्द्रमा - ऐसा सिर्फ अमावस के समय ही होगा। अगर चन्द्रमा अस्त हुआ तो जातक को मां के सुख में कमी और संपत्ति मिलने में देरी होगी।

मंगल - अगर मंगल सूर्य से अस्त हुआ तो साहस में कमी और प्रॉपर्टी से फायदा नहीं होगा। जिस भी धंधे में जायेगा नुकसान ही होगा।

बुध - इस ग्रह को अस्त होने का दोष नहीं होगा फिर भी ये देखा गया है कि अस्त होने के बाद यह ग्रह कोई खास लाभ नहीं देता है। त्वचा विकार और सम्मान की हानि होती है।

गुरु - अगर गुरु सूर्य से अस्त हो जाए ता चारत्र पर लाछन लगत ह। एसा व्यक्ति स्वयं को सदैव सच्चा साबित करने की कोशिश करता रहता है। ज्ञानी होने के बाद भी उच्च पद नहीं मिलता है।

शुक्र- अगर कुंडली में शुक्र अस्त हुआ तो काम पूरे होने में बाधा आती है। पत्नी सुख में कमी और यौन रोग की सम्भावना होगी। ऐसा व्यक्ति लम्पट होता है।

शनि - अगर किसी जातक की कुंडली में शनि अस्त हो तो सरकारी कार्यो में बाधाएं आती हैं। जितना पैसा आएगा उससे अधिक चला जाएगा। सदैव सम्मान की कमी महसूस होगी।

क्या अस्त ग्रह शुभ फल देते है ?

जी हां ! शोध यह कहता है कि अगर किसी जातक की कुंडली के छठे, आठवे और द्वादश भाव के स्वामी अस्त हो तो जातक को शुभ परिणाम मिलता है। यानी की वो प्रभावहीन होकर उस भाव के अशुभ फल प्रकट नहीं करता है। जैसे अगर गुरु शुभ भाव का स्वामी हो और अस्त हो वो अपने कारक यानी पुत्र, धन, स्वर्ण प्राप्ति में समस्या देगा लेकिन वही गुरु अगर अशुभ भाव का स्वामी होकर अस्त हुए तो जातक को उस भाव के अशुभ परिणाम नहीं देंगे और जातक को आसानी से उस भाव से जुडी अच्छी चीजें मिल जायेगी। एक तरह से यह विपरीत राजयोग जैसा फल हो जाता है।

सफलता के लिए बहुत ज्यादा संघर्ष करते हैं ये लोग

सामान्य स्थितियों में व्यक्तियों के हाथ में केवल एक ही सूर्य रेखा मिलती है, लेकिन बहुत कम हाथों में एक से अधिक सूर्य रेखाएं भी मिलती हैं। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार यदि हाथ में एक ही सूर्य रेखा है और यह हृदय रेखा को काटते हुए मस्तिष्क रेखा तक पहुंचे तो यह सरकारी नौकरी का योग बताती है। यदि सूर्य रेखा छोटी हो और हृदय रेखा से पहले ही रुक जाए तो मनचाही नौकरी पाने में सफलता मिलने की गुंजाइश कम हो जाती है। यह स्थिति असफलता का संकेत देती है। यदि सूर्य पर्वत पर दो समानान्तर सूर्य रेखाएं हैं तो ऐसे लोगों के जीवन में आय के दो स्रोत होते हैं। इस स्थिति में ज्यादातर लोग जॉब के साथ बिजनेस करते हैं।

यदि सूर्य पर्वत पर तीन या चार रेखाएं हैं अथवा ये सभी आपस में उलझी हुई हैं तो यह व्यक्ति को असमंजस में डालती हैं। ऐसे लोग कोई काम शुरू करते हैं और जल्द ही इनका मन उस काम से उचट जाता है। ज्यादा उलझी हुई सूर्य रेखाएं कॅरियर में मुश्किलों को बढ़ाती हैं। ऐसे लोगों को सफलता के लिए बहुत अधिक संघर्ष करना पड़ता है। इस तरह के लोगों को सोच समझकर किसी काम में हाथ डालना चाहिए। यदि हाथ में एक लंबी सूर्य रेखा हो, साथ ही सूर्य और शनि की उंगली के बीच से कोई रेखा निकलते तो वे राजनीति में सफलता हासिल करते हैं।

जानें इसे लगाने के सही वास्तु नियम

इंसान के जीवन में घड़ी का बहुत ज्यादा महत्व होता है। घड़ी न सिर्फ हमें समय बताती है, बल्कि हमारे अच्छे-बुरे समय में भी योगदान देती है। वास्तु शास्त्र में भी घड़ी को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। वास्तु जानकारों के अनुसार यदि घर में सही दिशा में घड़ी न लगी हो या फिर खराब पड़ी हो तो व्यक्ति को जीवन में कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। साथ ही तमाम कोशिशों के बावजूद काम नहीं बनते हैं और प्रत्येक काम में बाधा आती है। वहीं जब आप वास्तु शास्त्र के नियम के अनुसार घर की दीवार पर सही दिशा में घड़ी लगाते हैं तो आपको सकारात्मक ऊर्जा मिलती है और अटके कार्य भी पूरे होने लगते हैं। ऐसे में आइए जानते हैं घड़ी से जुड़े सही वास्तु नियम...

घर में भूलकर भी न रखें ऐसी घड़ी

वास्तु के अनुसार घर में कभी भी खराब या बंद घड़ी न रखें। साथ ही ऐसी घड़ी भी दीवार पर न लगाएं, जिसका शीशा टूटा हुआ हो। टूटी या बंद घड़ी को घर में रखने से परिवार के सदस्यों पर नकारात्मक असर पड़ता है। कहा जाता है कि रुकी हुई घड़ी की तरह परिवार के सदस्यों की प्रगति भी रुक जाती है, इसलिए यदि घड़ी की बैटरी खत्म हो गई हो तो उसे तुरंत बदल दें।

किस दिशा में लगाएं घड़ी?

अक्सर लोग घड़ी को अपनी सुविधा के अनुसार घर की किसी भी दीवार में टांग देते हैं, जबकि ऐसा करना सही नहीं होता है। कुछ खास स्थान और दिशा हैं, जहां घड़ी लगाने से शुभ परिणाम मिलते हैं। वास्तु जानकारों की मानें तो उत्तर और पूर्व दिशा को वृद्धि की दिशा माना गया है। ऐसे में घर की इन्हीं दिशाओं की दीवार पर घड़ी लगाएं।

इस दिशा में भूलकर भी न लगाएं घड़ी

वास्तु शास्त्र के अनुसार दक्षिण दिशा की दीवार पर घड़ी को नहीं लगाना चाहिए। दक्षिण दिशा की ओर से नकारात्मक ऊर्जा आती है। ऐसे में यदि आप इस दिशा में कोई घड़ी लगाते हैं तो समय देखने के लिए बार-बार आपका ध्यान दक्षिण दिशा की ओर जाएगा, जो कि शुभ नहीं माना जाता है।

कैसी हो घड़ी की आवाज?

अक्सर आपने देखा होगा कि कुछ घड़ियों की आवाज कर्कश होती है, जो तनाव देने वाली होती है। आपके घर में सुख-शांति और सकारात्मक ऊर्जा कायम रहे इसके लिए हमेशा मधुर ध्वनि वाली घड़ी ही लगाएं।

घर की इस दिशा में भूल से भी न लगाएं घड़ी

[भविष्यफल]

मेष
आज आपके पास पर्याप्त समय होने पर भी व्यस्त ही रहेंगे। योगा, प्राणायाम अवश्य करें। लंबित बिल और उधार चुका सकेंगे।

वृष
आप आज खुद को रोज़ाना की अपेक्षा कम ऊर्जावान महसूस करेंगे। स्वयं को ज़रूरत से ज़्यादा काम के नीचे न दबाएँ, थोड़ा आराम करें।

मिथुन
आप भावनात्मक तौर पर बहुत संवेदनशील हैं, इसलिए ऐसे हालात से बचें जो आपको चोट पहुँचा सकते हों। आपके द्वारा धन को बचाने के प्रयास आज असफल हो सकते हैं।

कर्क
घर की जरुरतों को देखते हुए आज आप अपने जीवनसाथी के साथ कोई कीमती सामान खरीद सकते हैं जिससे आर्थिक हालात थोड़े तंग हो सकते हैं।

सिंह
अपने शरीर की थकान मिटाने और ऊर्जा-स्तर को बढ़ाने के लिए आपको पूरे आराम की ज़रूरत है, नहीं तो शरीर की थकावट को जन्म दे सकती है।

कन्या
आज आपका दिन मनोनुकूल रहेगख। शारीरक लाभ मिलेगा। अनुभवी लोगों से जुड़कर जानने की कोशिश करें कि उनका क्या कहना है।

तुला
आज का दिन फ़ायदेमंद साबित होगा, क्योंकि ऐसा लगता है कि चीज़ें आपके पक्ष में जाएंगी और आप हर काम में अव्वल रहेंगे। धार्मिक रूचि बढेगी।

वृश्चिक
आज आपका ऊर्जा से भरपूर, ज़िंदादिल और गर्मजोशी से भरा व्यवहार आपके आस-पास के लोगों को खुश कर देगा।

धनु
मौज-मस्ती और मनपसंद काम करने का दिन है। जो लोग शादीशुदा हैं उन्हें आज अपने बच्चों की पढ़ाई पर अच्छा खासा धन खर्च करना पड़ सकता है।

मकर
आज का दिन आपके लिए मिला जुला रहेगा। अगर आप यात्रा पर जाने वाले हैं तो अपने कीमती सामान का ध्यान रखें। खुद के लिए समय निकालें।

कुंभ
आज आपको लाभ मिलेगा, क्योंकि परिवार के सदस्य आपके सकारात्मक रुख़ से प्रभावित होंगे और उसे सराहेंगे।

मीन
अपनी शारीरिक चुस्ती-फ़ुर्ती को बनाए रखने के लिए आप आज का दिन खेलने में व्यतीत कर सकते हैं।

आर्थिक तंगी और पारिवारिक कलह का कारण

घर की छत पर भूलकर भी न रखें यह सामान

जीवन में तरक्की और उन्नति के लिए वास्तु नियम का पालन जरूरी है। लापरवाही बरतने से जीवन में कई परेशानियों का समाना करना पड़ता है। इसके लिए लोग गृह निर्माण से लेकर प्रवेश तक वास्तु नियमों का पालन करते हैं। साथ ही वास्तु के अनुसार, घर की चीजों को उचित स्थान पर रखते हैं। हालांकि, जब बात छत की आती है, तो लोग भूल जाते हैं। लेकिन क्या आपको पता है कि छत पर अनावश्यक चीजों को रखने से वास्तु दोष लगता है। यदि आप अपने घर परिवार की सुख समृद्धि के साथ घर से कलह को दूर रखना चाहते हैं तो वास्तु शास्त्र के अनुसार बताए गए उपायों को करते हुए घर की छत को पूरी तरह से साफ-सुथरा रखें। वैसे भी बुजुर्ग लोगों व धर्माचार्यों का कहना है कि घर की छत को हमेशा साफ सुथरा रखना चाहिए, माना जाता है कि रात के वक्त देव गण पृथ्वी पर विचरण करते हैं, जिससे वे उसी छत पर उतरते हैं जहाँ पर साफ सफाई होती है। आप भी घर की सुख और समृद्धि को बरकरार रखना चाहते हैं, घर में शांति चाहते हैं तो तो घर की छत पर गलती से भी ये सामान न रखें-

छत पर न रखें झाड़ू

अक्सर लोग घर की साफ सफाई करते हैं। आसान शब्दों में कहें तो लोग घर को साफ रखते हैं, लेकिन छत की साफ-सफाई करना भूल जाते हैं। कई लोग गलती से घर के छत पर झाड़ू रख देते हैं। अगर आप भी घर के छत पर रखते हैं, तो ऐसा बिल्कुल न करें। इससे आर्थिक तंगी आती है।

रस्सी का बंडल न रखें

अक्सर लोग छत पर कपड़े सुखाने के लिए रस्सी बांधते हैं। हालांकि, छत पर रस्सी रखने से वास्तु दोष लगता है। इसके लिए छत पर रस्सी का बंडल न रखें। हां, कपड़े सुखाने के लिए रस्सी बांध सकते हैं।

छत पर न रखें बाँस

वास्तु शास्त्र में छत पर बांस रखना शुभ नहीं होता है। इसके लिए छत पर बांस न रखें। अगर छत पर बांस रखते हैं, तो घर की सुख और समृद्धि गायब हो जाती है।

जमा न होने दें कचरा

कई लोगों के घर के आसपास पेड़ होते हैं। इनसे पत्ते गिरकर छत पर जमा होने लगते हैं। इसके लिए नियमित अंतराल पर छत की सफाई करें। छत पर कचरा जमा रहने से वास्तु दोष लगता है।

टूटे गमले व मटके न रखें

कुछ लोगों को टूटे गमले या मटके को छत पर रखने की आदत होती है। ऐसा करने से घर में वास्तु दोष लगता है। इसके लिए कचरे को कभी छत पर न करें।

टूटे फूटे सामान, रद्दी, पुराने अखबार से दूर रहें

इसके अलावा, घर के छत पर रद्दी, पुराने अखबार, जंग लगा सामान, लकड़ी के टूटे फर्नीचर आदि चीजें न रखें। इन चीजों को छत पर रखना शुभ नहीं होता है। अगर आप भी घर की सुख और समृद्धि को बरकरार रखना चाहते हैं, तो वास्तु के इन नियमों का जरूर पालन करें।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

पीएम मोदी कार्यक्रम के एक दिन पहले ही पहुंच रहे झारखंड

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'जनजातीय गौरव दिवस' पर भगवान बिरसा मुंडा की धरती पर होंगे। इसके लिए पीएम अपने प्रस्तावित कार्यक्रम से एक दिन पहले ही झारखंड आ जाएंगे। पहले जहां पीएम जनजातीय गौरव दिवस यानी 15 नवंबर को झारखंड पहुंचने वाले थे। वहीं अब खबर है कि पीएम 14 नवंबर की शाम को ही रांची के बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पहुंच जाएंगे। जिसके बाद पीएम रांची में रोड शो करेंगे। रोड शो के दौरान पीएम रांची एयरपोर्ट से राजभवन तक जाएगे। रात में वे राजभवन में विश्राम करेंगे। 15 नवंबर की सुबह वे सबसे पहले रांची के जेल चौक स्थित भगवान बिरसा मुंडा स्मृति उद्यान सह स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय जाएंगे। इसके बाद वे रांची एयरपोर्ट पहुंचेगे और हेलीकॉप्टर से खूंटी के लिए रवाना होंगे। फिर पीएम खूंटी के बिरसा कॉलेज मैदान में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने के लिए कार्यक्रम स्थल पहुंचेंगे। इसके बाद पीएम भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली खूंटी जिला स्थित उलिहातू के लिए रवाना होंगे। उलिहातू में प्रधानमंत्री भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे।

रिश्वत कांड में फंसी महुआ को टीएमसी ने दी नई जिम्मेदारी

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा को कृष्णानगर (नादिया उत्तर) का पार्टी जिला अध्यक्ष नियुक्त किया गया। अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस की ओर से यह जानकारी दी गई है। दरअसल, महुआ इन दिनों रिश्वत लेकर संसद में सवाल पूछने के मामले में मुश्किलों का सामना कर रही हैं। ऐसे में उनकी पार्टी ने उन्हें यह नई जिम्मेदारी सौंप दी है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी ने मोइत्रा को कृष्णानगर (नदिया नॉर्थ) जिले का पार्टी अध्यक्ष नियुक्त किया है। इस पर महुआ ने ममता बनर्जी का शुक्रिया अदा किया। उन्होंने कहा कि मुझे कृष्णानगर (नादिया उत्तर) का जिला अध्यक्ष नियुक्त करने के लिए ममता दीदी और तृणमूल कांग्रेस को धन्यवाद। मैं कृष्णानगर के लोगों के लिए पार्टी के साथ हमेशा काम करूंगी। इससे पहले भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने 15 अक्तूबर को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को चिट्ठी लिखकर महुआ पर गंभीर आरोप लगाए थे।

शिवराज सिंह ने साधा कांग्रेस पर निशाना

शिवपुरी। मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा और कांग्रेस में सत्ता पाने की होड़ मची हुई है। इसी क्रम में दोनों दल एक-दूसरे को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी कांग्रेस पार्टी और साथ में राहुल गांधी पर निशाना साधा है। सूत्रों के अनुसार मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने राहुल गांधी पर व्यंग्यभरे लहजे में हमला किया और कहा कि इंडिया गठबंधन में जब-जब सनातन धर्म, महिलाओं और दलितों का अपमान हुआ, राहुल गांधी हमेशा खामोश रहे। वो बताएं कि क्या अपमान में उनकी भी मौन स्वीकृति है? मुख्यमंत्री शिवराज ने सोमवार को शिवपुरी में पत्रकारों से बात करते हुए कहा, राहुल गांधी आज फिर मध्य प्रदेश आ रहे हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि जब इंडिया गठबंधन ने सनातन का अपमान किया तो राहुल गांधी क्यों चुप रहे। क्या अपमान में उनकी भी मौन स्वीकृति है?

भाजपा ने हमारा घोषणापत्र चुरा लिया है : दिग्विजय सिंह

भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव की तारीख जैसे-जैसे करीब आ रही है, विपक्षी दल कांग्रेस और सत्तदारी भाजपा के बीच आरोप-प्रत्यारोप की सिलसिला तेज होता जा रहा है। इसी क्रम में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और सूब के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने सोमवार को प्रतिद्वंदी पार्टी भाजपा पर बेहद संगीन आरोप लगाया। सूत्रों के मुताबिक राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने सत्ताधारी भाजपा पर तीखा हमला करते हुए आरोप लगाया कि वो विधानसभा चुनावों के लिए जारी किये गये कांग्रेस का चुनावी घोषणा पत्र चुरा रही है। पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने भाजपा और कांग्रेस के घोषणापत्र के बीच समानता के सवाल पर कहा, यह भाजपा के लोगों से पूछें, जिन्होंने हमारा घोषणापत्र चुरा लिया है और उसे अपने घोषणापत्र में डाल लिया है। दरअसल यह विवाद इसी सप्ताह 11 नवंबर को भाजपा द्वारा विधानसभा चुनावों के लिए जारी किये गये चुनावी घोषणा पत्र के बाद से उठ रहा है।

अजित से लड़ाई विचारधारा की है न कि व्यक्तिगतः सुप्रिया

बारामती। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) की वरिष्ठ नेता सुप्रिया सुले ने कहा कि उनका और उनकी पार्टी के नेताओं का अपने भाई और डिप्टी सीएम अजीत पवार के साथ कोई व्यक्तिगत मतभेद नहीं है। लोकसभा सांसद सुप्रीया सुले ने शरद पवार की अजित पवार से मुलाकात पर कहा, हमारा मानना है कि रिश्ते कभी भी राजनीति के बीच नहीं आने चाहिए और वैसे भी एनसीपी और अजित पवार के बीच लड़ाई व्यक्तिगत नहीं, बल्कि विचारधारा की है। सूत्रों के मुताबिक शरद पवर की बेटी सुले ने कहा, भारतीय जनता पार्टी में कई ऐसे परिवार हैं, जिनके साथ पवार परिवार के दशकों पुराने रिश्ते हैं। उदाहरण के लिए प्रमोद महाजन, गोपीनाथ मुंडे, सुषमा स्वराज और राजनाथ सिंह का नाम शामिल है। निश्चित रूप से हमारे बीच राजनीतिक मतभेद हैं, लेकिन कभी भी, किसी भी परिवार के साथ कोई व्यक्तिगत मतभेद नहीं रहा।

भाजपा की सरकार बनी तो राज्य के लोगों के लिए अयोध्या यात्रा की व्यवस्था करेंगेः शाह

भोपाल। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को कहा कि अगर भाजपा मध्य प्रदेश में सत्ता बरकरार रखती है तो उनकी सरकार राज्य के लोगों के लिए अयोध्या में राम मंदिर में दर्शन की व्यवस्था करेगी। विदिशा जिले की सिरोंज विधानसभा सीट पर एक रैली को संबोधित करते हुए शाह ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता अपने बेटे-बेटियों के कल्याण के लिए राजनीति में हैं। शाह ने कहा कि जब वह भाजपा अध्यक्ष थे तो कांग्रेस नेता राहुल गांधी राम मंदिर निर्माण की तारीख पूछते थे। उन्होंने कहा, ''मैं कह रहा हूं कि 22 जनवरी 2024 को अयोध्या (उत्तर प्रदेश) में भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा होगी।'' वरिष्ठ भाजपा नेता ने रैली में एकत्र लोगों से पूछा कि क्या वे भगवान राम के नवनिर्मित मंदिर में पूजा करने के वास्ते अयोध्या जाने के लिए पैसे खर्च करेंगे? उन्होंने कहा ''इसके लिए पैसे खर्च मत करो। यदि मध्य प्रदेश में भाजपा की सरकार बनी तो वह धीरे-धीरे प्रदेश की जनता के लिए अयोध्या में भगवान राम के दर्शन की व्यवस्था करेगी।''

उन्होंने कहा कि यह बात उनकी पार्टी के घोषणा पत्र में भी शामिल है। मध्यप्रदेश में 17 नवंबर को विधानसभा चुनाव होने हैं। विपक्षी कांग्रेस द्वारा घोषित गारंटी के बारे में शाह ने कहा, उन लोगों की क्या गारंटी है जिनके पास अपनी गारंटी नहीं है? उन्होंने कहा कि मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती संप्रग सरकार ने अपने 10 साल के कार्यकाल में मध्य प्रदेश के लिए दो लाख करोड़ रुपये दिये जबकि मोदी सरकार ने नौ वर्षों में मध्य प्रदेश के लिए 6.35 लाख करोड़ रुपये प्रदान किए, इसके अलावा विभिन्न योजनाओं के तहत पांच लाख करोड़ रुपये भी प्रदान किए गए। शाह ने कहा कि कांग्रेस ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया, लेकिन इसके बजाय उन्होंने गरीबों को हटा दिया।

उन्होंने कहा, ''मध्य प्रदेश में, 93 लाख किसानों के बैंक खातों में 6,000 रुपये प्रति वर्ष की दर से 21,000 करोड़ रुपये जमा किए गए। मैं आज आपको भाजपा सरकार चुनने के लिए कह रहा हूं... यह डबल इंजन सरकार (केंद्र और भाजपा की) राज्य में इसे 6,000 रुपये से 12,000 रुपये तक करने जा रही है।''

शाह ने यह भी कहा कि राज्य में पांच लाख रुपये तक का इलाज मुफ्त है और भाजपा के सत्ता में पुन- आने पर इसे बढ़ाकर 10 लाख रुपये तक किया जाएगा। उन्होंने कहा, ''जहां एक तरफ वंशवादी पार्टी कांग्रेस है, वहीं दूसरी तरफ देश की रक्षा के लिए नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि 2003 में भाजपा सरकार के गठन से पहले, मध्य प्रदेश का नेतृत्व 'श्री बंटाधार' दिग्विजय सिंह के पास था, जिन्होंने अपने 10 साल के शासन के दौरान मध्य प्रदेश को बीमारू राज्य में बदल दिया। उन्होंने कहा, ''भाजपा ने मप्र में सत्ता में रहने के 18 वर्षों में राज्य को बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर निकाला है और इसे बेमिसाल (अद्वितीय) मध्य प्रदेश बना दिया है।''

उन्होंने कहा कि अगले पांच साल में भाजपा मध्य प्रदेश को बेमिसाल से सर्वोत्तम बनाएगी। शाह ने दावा किया कि मप्र कांग्रेस अध्यक्ष कमल नाथ और राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह चाहते थे कि उनके बेटे राज्य के मुख्यमंत्री बनें, जबकि (पूर्व कांग्रेस प्रमुख) सोनिया गांधी चाहती हैं कि उनके बेटे राहुल बाबा प्रधानमंत्री बनें। उन्होंने कहा, क्या जो लोग अपने बेटे-बेटियों के लिए राजनीति में हैं, वे मध्य प्रदेश या देश का भला कर सकते हैं? यह केवल मोदी की भाजपा और उनके देशभक्तों के समूह द्वारा किया जा सकता है। शाह ने आगे कहा कि जब कांग्रेस सत्ता से बाहर हुई, तो मध्य प्रदेश का बजट (आकार) 23,000 करोड़ रुपये था, जिसे भाजपा सरकार ने बढ़ाकर 3.14 लाख करोड़ रुपये कर दिया।

शाह ने उपस्थित लोगों से पूछा कि क्या जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाना सही कदम था या नहीं? उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने यह दावा करते हुए इसका विरोध किया था कि इसके परिणामस्वरूप कश्मीर में रक्त स्नान हो जाएगा, लेकिन पिछले चार वर्षों से (उस तरह का) कुछ भी नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश को दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल किया।

सरकार और भाजपा युवाओं के सपनों को कुचल रही हैं : खरगे

कांग्रेस अध्यक्ष ने केंद्र सरकार पर साधा निशाना

हैदराबाद। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बेरोजगारी और महंगाई के मुद्दों को लेकर सोमवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधा और आरोप लगाया कि सरकार तथा भारतीय जनता पार्टी देश युवाओं के सपनों को कुचल रही हैं।

खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया, जब प्रधानमंत्री तेलंगाना में (जनसभा में) बोल रहे थे, तो उस समय एक बहुत ही परेशान करने वाला दृश्य सामने आया। एक लड़की देश के सामने मौजूद वास्तविक मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए बिजली के खंभे पर चढ़ गई। उन्होंने दावा किया, युवा भारत मोदी सरकार के विश्वासघात से तंग आ चुका है। उन्होंने नौकरियों की आकांक्षा की, लेकिन बदले में उन्हें 45 साल की सबसे ऊंची बेरोजगारी दर मिली। वे आर्थिक सशक्तीकरण चाहते थे, लेकिन बदले में भाजपा ने कमरतोड़ महंगाई दी, जिससे उनकी बचत 47 साल के निचले स्तर पर आ गई है। खरगे ने कहा, युवा सामाजिक और आर्थिक न्याय के लिए उम्मीद कर रहे थे, लेकिन बदले में मोदी सरकार ने उन्हें लगातार बढ़ती आर्थिक असमानता दी। सबसे अमीर पांच प्रतिशत भारतीय नागरिकों के पास भारत की 60 प्रतिशत से अधिक संपत्ति है, जबकि मध्यम वर्ग और गरीब पीड़ित हैं। उन्होंने दावा किया कि मोदी सरकार में महिलाओं, बच्चों, दलितों, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के खिलाफ अपराध कई गुना बढ़ गए हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया, युवा देश में एकता और सद्भाव चाहते थे, लेकिन उन्हें नफरत और विभाजन मिला। मोदी सरकार और भाजपा भारत के युवाओं के सपनों और आकांक्षाओं को कुचल रही है।

इस्राइल-हमास संघर्ष के बीच मोदी सरकार पर बरसीं प्रियंका गांधी

नई दिल्ली। हमास और इस्राइल के बीच भीषण युद्ध जारी है। इस्राइल लगातार गाजा स्थित आतंकी समूह हमास के ठिकानों पर हमला कर रहा है। जिसको लेकर तमाम देशों की अलग-अलग प्रतिक्रियाएं सामने आ रही है। इसी बीच कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी द्वारा इस्राइल-हमास युद्ध पर दिए बयान ने राजनीतिक हलचल मचा दी है। प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया पोस्ट पर लिखा, इस विनाश का समर्थन करने वाली सरकारों को शर्म आनी चाहिए। मोदी सरकार पर परोक्ष रूप से हमला करते हुए प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए लिखा, नरसंहार का मसर्थन करने वालों की अंतरात्मा कोई झटका नहीं लगा है। गाजा में 10 हजार से अधिक लोगों की हत्या हुई, जिसमें लगभग आधे बच्चे ही हैं। जो निंदनीय और अपमानजनक है। इस विनाश का समर्थन करने वालों को शर्म आनी चाहिए। अपने पोस्ट में लिखते हुए प्रियंका गांधी ने कहा, डब्ल्यूएचओ के मुताबिक, हर दस मिनट में एक बच्चा मारा जा रहा है। ऑक्सीजन की कमी के कारण उनकी मौत हो रही है। उन्होंने कहा, फिर भी नरसंहार का समर्थन करने वालों की अंतरात्मा को कोई झटका नहीं, कोई युद्धविराम नहीं, बस अधिक बम, अधिक हिंसा, अधिक हत्याएं और अधिक पीड़ा।

खेल
प्रमुख समाचार

पहला सेमीफाइनल भारत बनाम न्यूजीलैंड के बीच 15 को

नईदिल्ली। आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप अपने समापन की ओर बढ़ रहा है। अब केवल तीन मैच शेष बचे हैं, जिनमें दो मैच सेमीफाइनल के हैं तो एक मैच फाइनल का बचा है। पहला सेमीफाइनल मुकाबला भारत बनाम न्यूजीलैंड के बीच 15 नवंबर को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला जाएगा। जबकि दूसरा सेमीफाइन 16 अक्टूबर को कोलकाता के ईडन गार्डन्स में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के बीच होगा। हालांकि इस मैच पर संकट के बादल छाए हुए हैं। मौसम विभाग के द्वारा इस दिन कोलकाता में बारिश की संभावना जताई जा रही है।

बेशक, जब बारिश की बात आती है तो दक्षिण अफ्रीका का अतीत उतार-चढ़ाव भरा रहा है। 1992 में अपने पहले विश्व कप में दक्षिण अफ्रीका फाइनल में पहुंचने की कगार पर था, जब बारिश के कारण खेल रुका, इंग्लैंड के खिलाफ जीत के लिए 13 गेंदों में 22 रनों की जरूरत थी। लेकिन, केवल 12 मिनट बाद जब बारिश रुकी, तो बारिश से प्रभावित मैचों को नियंत्रित करने वाले तत्कालीन नियमों के तहत समीकरण में एक गेंद पर असंभव 22 रन बने।

इस विश्व कप में पहले बल्लेबाजी करने वाली दोनों टीमों के आंकड़े इस विश्वास की पुष्टि करते हैं। दक्षिण अफ्रीका ने कुल चार बार 350 से अधिक का स्कोर बनाया है- 428/5 बनाम श्रीलंका, 399/7 बनाम इंग्लैंड, 382/5 बनाम बांग्लादेश, और 357/4 बनाम न्यूजीलैंड, जबकि ऑस्ट्रेलियाई टीम ने ऐसा तीन बार किया है - 367/9 बनाम पाकिस्तान, 399/8 बनाम नीदरलैंड, और 388 बनाम न्यूजीलैंड।

इस बीच, इस टूर्नामेंट में दक्षिण अफ्रीका की दो हार भारत और नीदरलैंड के खिलाफ दूसरे नंबर पर बल्लेबाजी करते हुए हुई है, और उसने केवल एक विकेट की मामूली जीत के साथ पाकिस्तान से हार टाली है। दूसरी ओर, ऑस्ट्रेलियाई टीम दो विपरीत परिस्थितियों में अफगानिस्तान और बांग्लादेश के खिलाफ दो बार लक्ष्य का पीछा करते हुए सेमीफाइनल में पहुंची।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 326 अंक टूटा निफ्टी 19,450 के करीब

नईदिल्ली। संवत 2080 के पहले सत्र में जोरदार बढ़त दर्ज करने के एक दिन बाद हफ्ते के पहले कारोबारी दिन यानी सोमवार को घरेलू शेयर बाजार लाल निशान पर बंद हुए। मुद्रास्फीति के आंकड़े जारी होने से पहले निवेशकों के सतर्क रुख के बीच आईटी, टिकाऊ उपभोक्ता और वित्तीय कंपनियों के शेयरों में बिकवाली दबाव रहा। इस दौरान ग्लोबल मार्केट में मिले-जुले रुझान देखे गए। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 326 अंक कमजोर हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 82 अंक की गिरावट दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में ब्रस्थ मिडकैप सूचकांक में 0.10 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई। वहीं, दूसरी तरफ, बीएसई स्मॉलकैप सूचकांक 0.01 प्रतिशत नीचे रहा। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 325.58 अंक यानी 0.50 फीसदी की गिरावट के साथ 64,933.87 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 65,176.96 की ऊंचाई तक गया।

ओएनजीसी कृष्णा गोदावरी बेसिन में तेल उत्पादन करेगी

नईदिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) इस महीने बंगाल की खाड़ी में कृष्णा गोदावरी बेसिन में अपनी बहु-विलंबित गहरी समुद्री परियोजना से तेल उत्पादन शुरू कर देगा। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा। ओएनजीसी के निदेशक (उत्पादन) पंकज कुमार ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, हमारी योजना इस महीने केजी-डीब्ल्यूएन-98/2 ब्लॉक में क्लस्टर-2 परियोजना से उत्पादन शुरू करने और धीरे-धीरे बढ़ाने की है। क्लस्टर-2 से तेल उत्पादन नवंबर 2021 तक शुरू हो जाना चाहिए था, लेकिन वैश्विक महामारी के कारण इसमें देरी हुई। कुमार ने कहा कि ओएनजीसी की योजना शुरुआत में तीन से चार कुओं से उत्पादन शुरू करने और धीरे-धीरे अन्य को जोड़ने की है। उन्होंने कहा, शुरुआती उत्पादन 8,000 से 9,000 बैरल प्रति दिन हो सकता है।

प्रोटीन ईगव टेक्नोलॉजीज के फीकी एंट्री से निवेशक निराश

नईदिल्ली। दीवाली के अगले दिन यानी कि सोमवार को प्रोटीन ईगव टेक्नोलॉजीज के शेयरों की फीकी एंट्री हुई। सिटिजन-सेंट्रिंक और पॉपुलेशन-स्केल ई-गवर्नेंस सॉल्यूशंस डेवलपमेंट के कारोबार में शामिल इस कंपनी के आईपीओ को निवेशकों ने अच्छा रिस्पांस दिया था, यही कारण था कि ये आईपीओ ओवरऑल 23 गुना से अधिक सब्सक्राइब हुआ था। फीकी एंट्री के साथ आईपीओ के तहत 792 रुपये के भाव पर शेयर जारी हुए थे। आज बीएसई पर इसकी 792 रुपये के भाव पर ही एंट्री हुई यानी कि आईपीओ निवेशकों को कोई लिस्टिंग गेन नहीं मिला। हालांकि लिस्टिंग के बाद शेयर कुछ सुधरा और हल्की तेजी के साथ 810 रुपये के अपर सर्किट पर पहुंच गया है यानी कि अब आईपीओ निवेशक 2.27 फीसदी मुनाफे में हैं। हालांकि कंपनी के एंप्लॉयीज अधिक फायदे में हैं क्योंकि उन्हें हर शेयर 75 रुपये के डिस्काउंट पर मिला है।

सिग्नेचर ग्लोबल को बिक्री बुकिंग में 31% वृद्धि की उम्मीद

नईदिल्ली। रियल एस्टेट कंपनी सिग्नेचर ग्लोबल को आवास की बेहतर मांग के दम पर चालू वित्त वर्ष 2023-24 में अपनी बिक्री बुकिंग में 31 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि के साथ इसके 4,500 करोड़ रुपये रहने की उम्मीद है। गुरुग्राम स्थित सिग्नेचर ग्लोबल ने 2022-23 में 3,430.58 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग हासिल की थी, जो उसके पिछले वर्ष से 32 प्रतिशत अधिक थी। सिग्नेचर ग्लोबल के चेयरमैन प्रदीप अग्रवाल ने एक साक्षात्कार में कहा, '' हमने इस वित्त वर्ष के पहले छह महीनों में 1,861 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग (प्री-सेल्स) की है, जो पिछले साल की तुलना में 38 प्रतिशत अधिक है।'' पूरे वित्त वर्ष की बिक्री बुकिंग पर पूछे जाने पर उन्होंने कहा, '' हम पूरे वित्त वर्ष में 4,500 करोड़ रुपये की बिक्री बुकिंग की उम्मीद कर रहे हैं।''

संकट में अर्थव्यवस्था, सरकारी निवेश बनाम निजी निवेश और निर्यात

पी. चिदंबरम

हमारे यहां एक से एक अर्थशास्त्री हैं। बैंकों से जुड़े अर्थशास्त्री भी हैं। अगर इनमें से कुछ अर्थशास्त्रियों पर आप भरोसा करें, तो भारतीय अर्थव्यवस्था और इसके प्रबंधन में कुछ भी गलत नहीं है, बल्कि कभी भी गलत नहीं हो सकता। अगर आप बैंकों से जुड़े अर्थशास्त्रियों पर यकीन करें, तो भारतीय अर्थव्यवस्था शिखर पर है और सब कुछ ठीक है (जब तक कि रिजर्व बैंक इसके विपरीत कोई संकेत न दे)। काश, वे उतने ही सच्चे होते, जितने कि वे निष्ठावान हैं।

विगत एक अक्तूबर को हम इस सरकार के कार्यकाल के आखिरी छह महीने में पहुंच गए, जो 30 मई को केंद्र की सत्ता में अपने दस साल पूरे करेगी। आगामी अप्रैल और मई प्रशासनिक मोर्चे पर इस सरकार के लिए छुट्टियों की तरह होंगे। ऐसे में, देश की अर्थव्यवस्था की समीक्षा करने का यह एक अच्छा अवसर है।

भारत जैसे विकासशील देशों में दूसरे मानकों की तुलना में जीडीपी की वृद्धि दर देश के आर्थिक स्वास्थ्य को जांचने का सबसे बढ़िया पैमाना है। इसलिए मैं भाजपा के कार्यकाल के 10 साल की आर्थिक विकास दर से अपनी बात शुरू करता हूं। एनएसओ के आंकड़े के मुताबिक, इस सरकार के शुरुआती नौ साल में औसत आर्थिक विकास दर 5.7 फीसदी रही। वर्ष 2023-24 में सरकार का आकलन 6.5 प्रतिशत की आर्थिक वृद्धि दर का है, लिहाजा सरकार के दस काल की औसत आर्थिक विकास दर 5.8 फीसदी ठहरती है। इस वृद्धि दर की तुलना यूपीए-1 और यूपीए-2 के कार्यकाल में हासिल वृद्धि दर से करें।

यूपीए-1 में औसत आर्थिक विकास दर 8.5 फीसदी थी, जबकि दस साल की औसत

विकास दर 7.5 फीसदी थी। कुछ अर्थशास्त्री भाजपा के कार्यकाल के दस साल में औसत आर्थिक विकास दर में 1.8 प्रतिशत की गिरावट को नगण्य बताकर खारिज कर देंगे। लेकिन यह सरासर गलत होगा। वृद्धि दर में इस गिरावट का राष्ट्रीय सुरक्षा, ढांचागत खर्च, निवेश, रोजगार सृजन, कल्याणकारी कार्यक्रमों, प्रति परिवार उपभोग, बचत, गरीबी उन्मूलन तथा शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्रों में उन्नति के लिए उठाए जाने वाले कदमों पर भीषण असर पड़ता है।

लोगों के लिए जो दो मुख्य चिंताएं हैं, वे हैं महंगाई और बेरोजगारी। बढ़ती महंगाई के कारण देश के 10 फीसदी अमीरों को छोड़कर शेष जनता के लिए घर चलाना बहुत मुश्किल है। अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (नई श्रृंखला) जो 2013-14 में 112 थी, दिसंबर, 2022 में बढ़कर 174 हो चुकी थी। खाद्य मुद्रास्फीति 10 फीसदी के आसपास है। इसका तात्कालिक नतीजा है घरेलू उपभोग में कटौती। विभिन्न आय वर्गों के लोग या तो अपने खर्च घटा रहे हैं या फिर उनकी बचत में कमी आ रही है। परिवारों की कुल संपत्ति घटकर 5.1 फीसदी की तलहटी पर रह गई है। एफएमसीजी कंपनियों ने अपनी ब्रांड वैल्यू बरकरार रखने के लिए उत्पादों की कीमत न घटाकर वजन घटा दिए हैं। दोपहियों की बिक्री में कमी सबसे बड़ा उदाहरण है कि महंगाई के कारण लोगों के उपभोग में किस तरह कमी आई है। चिंता का दूसरा कारण है बेरोजगारी। दावों के विपरीत, पिछले दस साल में लाखों रोजगार का सृजन नहीं हुआ है, न ही दो करोड़ नौकरियां देने का वादा पूरा किया गया है (ऐसे में, इसे चुनावी जुमला ही माना गया)।

आंकड़े बताते हैं कि पिछले दस वर्ष के दौरान एक वर्ष को छोड़कर हर साल बेरोजगारी की दर सात प्रतिशत से अधिक रही। स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया, 2023 रिपोर्ट के मुताबिक, स्नातकों में बेरोजगारी की दर 42 फीसदी है। वर्ष 2022 में 15 से 24 साल के युवाओं में बेरोजगारी की दर 23.22 प्रतिशत थी। आज अधिकतर रोजगार स्व-रोजगार (57 फीसदी) है। दैनिक मजदूरी वाले कर्मचारियों का आंकड़ा 24 फीसदी से घटकर 21 प्रतिशत रह गया है। सीएमआईई (सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकनॉमी) का आंकड़ा बताता है कि मौजूदा सरकार के कार्यकाल (2015-23) में सरकारी नौकरियों में 22 फीसदी की कमी आई है।

भाजपा हमेशा से ही विकास की राजनीति करती है: बृजमोहन

बृजमोहन अग्रवाल ने सोमवार को अग्रवाल सभा द्वारा आयोजित दीपावली मिलन एवं विशेष सम्मान सभा कार्यक्रम में शिरकत की

रायपुर। कार्यक्रम में बृजमोहन अग्रवाल के साथ ही छत्तीसगढ़ भाजपा प्रभारी ओ पी माथुर, केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, रायपुर उत्तर से भाजपा प्रत्याशी पुरेंद्र मिश्रा भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का आयोजन अग्रवाल सभा रायपुर ने, अग्रसेन धाम, छोकरा नाला रायपुर में किया गया था। जिसमे आम सभा के साथ ही कार्यकारिणी के संशोधन को पारित किया गया। कार्यक्रम अग्रवाल सभा के संरक्षक जगदीश प्रसाद अग्रवाल, अध्यक्ष विजय अग्रवाल, सियाराम जी अग्रवाल, चतुर्भुज अग्रवाल, जेपी अग्रवाल उर्फ बालाजी, गोपाल अग्रवाल उर्फ वंदना, हरि बल्लभ अग्रवाल, कन्हैया अग्रवाल, कैलाश मुरारका, मनमोहन अग्रवाल, हनुमान प्रसाद अग्रवाल समेत बड़ी संख्या में अग्रवाल समाज के महिला और पुरुष शामिल हुए।

बृजमोहन अग्रवाल ने दीपावली की शुभकामनाएं दी। सभा को संबोधित करते हुए बृजमोहन ने कहा कि, भाजपा हमेशा से ही विकास की राजनीति करती है। भाजपा के लिए राष्ट्र प्रथम की भावना सर्वोपरी रही है। वैसे ही अग्रवाल समाज भी हमेशा से ही समाज और राष्ट्र की सेवा में आगे रहा है। बृजमोहन ने छत्तीसगढ़ को एक बार फिर से विकास की राह में आगे लाने के लिए। भाजपा को वोट देने की अपील की।बृजमोहन ने कहा की पिछले 5 साल के कांग्रेस के शासन काल में छत्तीसगढ़ बीमारू राज्य बन गया है। यहां अपराधियों और भ्रष्टाचारियों को बढ़ावा मिल रहा है जिससे आमजन से लेकर व्यापारियों तक का जीना मुश्किल हो गया है। घोटालेबाजी और कमीशनखोरी के कारण छोटे से लेकर बड़े व्यापारी सभी परेशान है।

बृजमोहन अग्रवाल ने राज्य को विनाश से विकास की तरफ ले जाने के लिए। स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा में छत्तीसगढ़ को नंबर वन बनाने के लिए भाजपा बहुमत से चुनने की अपील की।

बृजमोहन अग्रवाल ने बोहरा समाज के साथ की चाय पर चर्चा

रायपुर ।वरिष्ठ भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने रविवार को बोहरा समाज के साथ चाय पर चर्चा की। बैठक का आयोजन सदर बाजार में स्थान विशेष पर किया गया था। जहां बृजमोहन अग्रवाल का स्वागत किया गया।

समाज को संबोधित करते हुए बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि बोहरा समुदाय हर क्षेत्र में प्रगतिशील रहा है। चाहे वो व्यापार हो या उच्च शिक्षा या कोई दूसरा क्षेत्र। ऐसे प्रगतिशील समाज के लिए सबसे जरूरी है सुरक्षा, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, और अधोसंरचना का विकास। जो भाजपा सरकार ही दे सकती है। छत्तीसगढ़ में भाजपा के 15 सालों में जो विकास की गंगा बही थी। उसे भूपेश बघेल ने बर्बाद कर दिया और छत्तीसगढ़ को बीमारू और अपराधों का राज्य बना दिया। बृजमोहन ने राज्य को फिर से तेज़ी से विकसित करने के लिए भाजपा को बहुमत से जिताने की अपील की।कार्यक्रम का संचालन फिरोज भाई गांधी ने किया जबकि अब्बास नजमी ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में एडवोकेट फजल अब्बास फैजी, शेख शब्बीर भाई, हक्किम्मुददीन रेडिमेडवाला, हक्किम्मुददीन उर्फ पप्पू भाई समेत कई लोग मौजूद रहे।

14 नवंबर को करूंगा खुलासा: बृजमोहन

रायपुर। छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और 7 बार के विधायक, 3 बार के पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल इन दिनों काफी आहत हैं। रायपुर दक्षिण विस क्षेत्र के बैजनाथपारा में उनके साथ कुछ लोगों ने बदसलूकी की कोशिश की। लेकिन अग्रवाल उससे कहीं ज्यादा उस वारदात के बाद सीएम बघेल की टिप्पणियों से आहत हैं। आज जब वे मीडिया से मुखातिब हुए।बृजमोहन अग्रवाल ने साफतौर पर कहा कि, सीएम ने मेरे लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया, उससे मैं आहत हूं। उन्होंने कहा कि, रायपुर की जनता ने मुझ पर सात बार भरोसा किया है, मैं मुख्यमंत्री की कृपा से विधायक या मंत्री नहीं बना हूं। अग्रवाल ने कहा कि, मुझ पर हमला हुआ लेकिन फिर भी ष्टरू ने इस पर जो कहा, कोई भी सभ्य आदमी ऐसे शब्दों का उपयोग नहीं करता। अग्रवाल ने आरोप लगाया कि, ष्टरू पैसाखोर हो गए हैं, उन्हें पैसे की आदत लग गई है। जिनके ऊपर सट्टा चलाने के आरोप हैं, उन्हें अपने पास रखा है।मैंने पहली बार सुना है कि, चुनाव भी ठेके पर दिया जाता है। मैं 14 नवंबर को खुलासा करूंगा हमारे किन लोगों को धमकी दी गई। हमारे लोगों को पैसे में खरीदने की कोशिश होती है। लोग नहीं मानते तो उन्हें धमकी दी जाती है।

मेरी बात

✍ गिरीश पंकज

मतदाता जागरुक रहें

जैसे-जैसे मतदान के दिन करीब आ रहे हैं, वैसे-वैसे प्रमुख राजनीतिक दलों के नेताओं के बयानों को हम देखें, तो उनमें तरह-तरह के लोकलुभावन बवादों की भरमार नजर आ रही है। अब विचार जनता को करना है कि किसके वादों में कितनी सत्यता है। हमने सरकारों के पिछले वादों को भी देखा है। उसमें कितने पूरे हुए, कितने नहीं हुए; इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत है। वादे जब बाद में जुमले बन जाते हैं, तब दुख होता है। जनता ठगी की ठगी रह जाती है, जब वह किसी आकर्षक योजना के झाँसे में आकर किसी पार्टी को चुन लेती है ।लेकिन बाद में पछताती हैं कि उससे गलती हो गई। इसलिए अब भी समय है ।बहुत सोच-समझकर मतदान करना चाहिए । मतदाता को आत्म-मंथन करना चाहिए और नीर-छीर-विवेक के साथ निर्णय लेना चाहिए कि हमें किसके पक्ष में खड़ा होना है। क्या हम समाज को तोड़ने वाले लोगों के साथ खड़े हों या समाज को जोड़ने वाली ताकतों के साथ खड़े हों। इस समय सनातन भी एक बड़ा मुद्दा है। हमें अपने सनातन मूल्यों की भी चिंता करनी है । ये मूल्य बचे रहेंगे तो यह राष्ट्र बचा रहेगा। राष्ट्र सर्वप्रथम होना चाहिए। ईमानदारी के साथ जो लोग राष्ट्र की चिंता में लगे हुए हैं, कायदे से हमें उनके साथ खड़ा होना चाहिए। हो सकता है उनमें कुछ लोग नकली भी हों लेकिन अगर बहुतायत में उनमें राष्ट्रभक्ति की भावना है, तो हमें उनकी ओर देखना चाहिए। अभी मैं एक वीडियो देख रहा था, जिसमें एक राजनीतिक दल का नेता धर्म विशेष के मुट्ठी भर लोगों के साथ बैठकर उनसे कह रहा था कि आप हमारा साथ दीजिए हमारी सरकार आई तो आप जैसा चाहते हैं वैसा हो जाएगा। अगर कोई नेता किसी एक धर्म विशेष के लोगों के साथ अपना रिश्ता बनाना चाहता है, उनका वोट हासिल करने की कोशिश कर रहा है, तो समझ जाना चाहिए कि यह स्थिति कितनी खतरनाक है । किसी भी दल या पार्टी को सबके लिए समान रूप से काम करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से मुझे भारतीय जनता पार्टी की यह नीति बिल्कुल ठीक लगती है, जिसमें वह कहती है, सबका साथ, सबका विकास और सब का विश्वास। किसी भी लोकतंत्र के लिए यह मूल मंत्र है। इसमें दो राय नहीं कि जब इस पार्टी ने अपना यह नारा दिया तो ऐसा नहीं है कि उसने सिर्फ हिंदुओं का विकास किया। सबका विकास मतलब सबका विकास ।उसमें मुसलमान भी आते हैं। ईसाई भी आते हैं। अन्य धर्मावलंबी भी आते हैं । पिछले नौ वर्षों का मेरा अपना अनुभव यह रहा कि भाजपा की सरकार ने कोई भेद नहीं किया । भाजपा को लोग सांप्रदायिक पार्टी कहते हैं, दक्षिणपंथी कहते हैं लेकिन मैंने देखा है कि भाजपा के कार्यकाल में भी अनेक वामपंथी साहित्यकार तरह-तरह से लाभान्वित होते रहे हैं । गाय की बात करने वाले लेखक उपेक्षित रहे लेकिन भाजपा को गरियाने वाले लेखकों को भी सम्मान मिलता रहा । सरकार ऐसी होनी चाहिए जो समान रूप से सबका आदर करें। दलगत राजनीति से ऊपर उठकर साहित्यकारों, कलाकारों का सम्मान होना चाहिए । वैसे सरकार तो सरकार होती है। लेकिन देखना यह चाहिए कि कौन-सी सरकार कम बुरी है। पूरी तरह से तो महान सरकारें तो अब संभव नहीं, लेकिन जिनमें कुछ ईमानदारी नजर आती है, जो दल एकतरफा काम नहीं करते, ऐसे दलों को महत्व मिलना चाहिए। इस दृष्टि से मुझे लगता है, हमारे मतदाताओं को जागरुक होकर अपने वोट का उपयोग करना चाहिए।

पूर्व सीएम रमन सिंह ने भिलाई में ली चुनावी सभा

पाटन में सीएम की विदाई तय, दूसरे चरण के चुनाव में मिलेगा एक तिहाई बहुमत

दुर्ग। चुनाव की तारीख नजदीक आते ही सभी राजनीतक पार्टियों का चुनावी प्रचार तेज हो गई है. आज भिलाई नगर विधानसभा में पूर्व सीएम डॉ. रमन सिंह ने भाषण प्रत्याशी पूर्व मंत्री प्रेमप्रकाश पांडे के लिए जनता से समर्थन मांगा. औद्योगिक क्षेत्र छावनी में सभा करते हुए रमन सिंह ने एक ओर जहां कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा. वहीं उन्होंने भाजपा के 15 साल के कार्यकाल के दौरान किए गए विकास कार्यों को बताया.

भिलाई नगर विधानसभा में आमसभा को सम्बोधित करते हुए पूर्व सीएम डॉक्टर रमन सिंह ने कहा कि मैं पहले भी छावनी आया हूं और जब जब यहां आया हूं, प्रेमप्रकाश पांडेय को बहुमत मिला है. पूर्व सीएम ने कांग्रेस सरकार पर हमला बोलते हुए कहा, पहले चरण के चुनाव के बाद भूपेश बघेल फिर से घोषणा कर रहे हैं. चार पत्तों की घोषणा पत्र के बाद भी अब तक जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं. पूर्व सीएम रमन सिंह ने महादेव सट्टा एप को लेकर सीएम पर भी आरोप लगाया.

उन्होंने कहा, जहां-जहां भूपेश बघेल जा रहे हैं वहां उन्हें हार का सामना करना पड़ेगा. यहां भी आ रहे हैं तो यहां के देवेंद्र को भी हार का सामना करना पड़ेगा. डॉ. रमन सिंह ने कहा, पाटन में सीएम भूपेश बघेल की विदाई तय हो गई है. पहले चरण के चुनाव में भाजपा को अच्छी बढ़त मिली है. वहीं 17 नवम्बर को दूसरे चरण के चुनाव में भी एक तिहाई बहुमत मिलेगा. हार का डर कांग्रेस नेताओ में बौखलाहट है, जिसके चलते निर्वाचन आयोग से शिकायतें हो रही है. महतारी वंदन योजना के फॉर्म बांटे गए और भरे भी जा रहे हैं. इसमें जनता का समर्थन मिल रहा है. निर्वाचन आयोग के सवालों का जवाब दिया जाएगा. पाटन में विजय बघेल को अप्रत्याशित जीत मिलने वाली है.

चेंबर ऑफ कॉमर्स के दिवाली मिलन समारोह में शामिल हुए पुरदंर मिश्रा

रायपुर। रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा सोमवार को दिगम्बर जैन मंदिर फाफाडीह और छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स के दिवाली मिलन समारोह में शामिल हुए। दोनों ही स्थानों के अलावा रास्ते पर भी आमजनों ने उनका आत्मीय स्वागत किया। वहीं इस आत्मीयता के लिए श्री मिश्रा ने आभार जताया।

चुनाव प्रचार अभियान अंतर्गत भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों के साथ श्री मिश्रा सोमवार को स्टेट बैंक कॉलोनी, साहनी गली और स्पीकर हाउस के बाजू से छग चेंबर ऑफ कॉमर्स भवन पहुंचे। वहीं शाम को 5 बजे के बाद डब्लूआरएस कालोनी, आकाशवाणी बस्ती, शांति नगर, कुंदरा पारा और जगन्नाथ नगर में धुआंधार जनसंपर्क किया। डब्लूआरएस कालोनी में आयोजित सभा के बाद श्री मिश्रा राजातालाब पंडरी ईरानी डेरा के पास भाजपा अल्प संख्यक मोर्चा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भी शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा, क्षेत्र की जनता का स्नेह ही मेरी असली पूंजी है। उन्होंने आगे कहा, कांग्रेस की निकम्मी और भ्रष्ट कार्यशैली से जनता उब चुकी है, इसीलिए इस बार चारों ओर परिवर्तन की लहर दिखाई पड़ रही है। रायपुर उत्तर विधानसभा सभा क्षेत्र की जनता भी इस बार हर हाल में भाजपा की सरकार बनाने का मन मना चुकी है और यह समय नजदीक है। पूरा विश्वास है कि अब आने वाली 17 तारीख को जनता कमल छाप पर मुहर लगाकर भाजपा की सरकार बनाने का आदेश देगी। जनसंपर्क एवं दौरा कार्यक्रम में प्रमुख रुप से भाजपा नेता सचिदानंद उपासने, महामंत्री किशोर महानंद, गुंजन प्रजापति शामिल हुए।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

हमने केंद्र सरकार को काम करने का तरीका सिखाया है : सैलजा

रायपुर। छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रभारी कुमारी सैलजा ने दूसरे चरण के मतदान से पहले बड़ी बात कही है. उन्होंने कहा कि हम 75 के आंकड़े की ओर अग्रसर हैं. पहले चरण के चुनाव में कांग्रेस के पक्ष में माहौल दिखा. इस बार रमन सिंह की सीट भी खतरे में है.कुमारी सैलजा ने रायपुर में मीडिया से रू-ब-रू होते हुए कहा कि पहले चरण के मतदान के बाद बीजेपी को समझ आ चुका है. हमारी बात जमीनी हक़ीक़त पर भी नजर आ रही है. भाजपा के बड़े नेता रमन सिंह भी अपनी सीट से हार रहे हैं. रमन सिंह अपने विधानसभा से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं. हम सरकार बनाने के लिए आगे बढ़ रहे हैं. हमने अपने काम के बलबूते चुनावी मैदान में उतरकर वोट मांग रहे हैं.कुमारी सैलजा ने कहा कि अब छत्तीसगढ़ की तस्वीर बदल चुकी है. पिछले पांच सालों में हमने ग़रीबी से मजबूती से लड़ाई लड़ी है. हमने 40 लाख लोगों को ग़रीबी रेखा से ऊपर उठाया है. हमने केंद्र सरकार को काम करने का तरीक़ा सिखाया है. केंद्र सरकार ने 65 बार से अधिक पुरस्कार दिए हैं. कांग्रेस प्रभारी ने कहा कि महिलाओं के लिए हम शुरू से शुभचिंतक रहे हैं. भूपेश बघेल के नेतृत्व की सरकार ने महिलाओं को सशक्त किया है. हमारी सरकार ने महिलाओं के लिए अनेकों योजनाएं लाई है. राज्य महिला आयोग के बजट में पांच प्रतिशत की वृद्धि की है. हम महिला सशक्तिकरण के प्रति कमिटेड रहे हैं।

मोदी की गारंटी को भाजपाइयों ने फेंका कचरे में: धनंजय ठाकुर

रायपुर। भाजपा की महतारी वंदन योजना की फॉर्म कचरा में पड़े मिलने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि मोदी की गारंटी को भाजपाइयों ने कचरे के ढेर में फेंक दिया है। अभी मतदान हुआ नहीं है लेकिन भाजपा की धोखा बाजी का चरित्र का पर्दाफाश हो गया है। जैसे 10 साल से मोदी सरकार देश की जनता को धोखा दे रही है 15 साल तक पूर्व रमन सरकार ने छत्तीसगढ़ की जनता को धोखा दिया था। महिलाएं सावधान रहें। भाजपा कभी भी महतारियों का सम्मान नहीं करती है बल्कि उन्हें हमेशा धोखा देती है। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि मोदी की गारंटी के नाम से भाजपाइयों ने माता बहनों से फार्म में उनकी निजी जानकारी मोबाइल नम्बर, आधार कार्ड, कुछ फार्म में उनका एकाउंट नम्बर घर का पता लेकर उसे सड़कों और कचरे के ढेर में फेंककर महिलाओं की निजता का हनन किया है, उनके गृहस्थ जीवन को, मान सम्मान को खतरा में डाला है। महिलाओं के उक्त नम्बर और आधार कार्ड का दुरुपयोग असमाजिक तत्व कर सकते है।महिलाओं को सावधन रहने की आवश्यक्ता है। महिलायें भाजपा के नेता कार्यकर्ताओं के बहकावे में आकर अपनी निजी जानकारी उन्हें न दे। भाजपा का यह फार्म अवैधानिक है इसकी कोई गारंटी नही है। महिलाओं की निजी जानकारी भी सुरक्षित नहीं है।प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि भाजपा हमेशा वादा खिलाफी करती है, यह वही मोदी है।

कांग्रेस के पिच में भाजपा खेलने को मजबूर: शुक्ला

रायपुर। कांग्रेस ने कहा कि हमारे पिच पर भाजपा खेलने को मजबूर हो गयी है। प्रदेश कांग्रेस संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला ने कहा कि कांग्रेस ने किसानों को उनकी फसल की पूरी कीमत देने के लिये 3200 रू. धान की कीमत देने की घोषणा किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गरीबों के लिये चलाये जा रही योजना को मुफ्त की रेवड़ी बताते रहे है आज भाजपा अपने घोषणा पत्र में की जा रही योजनाओं को उन्हीं मोदी की गारंटी की दुहाई दे रही है। जो मोदी अपने उद्योगपति मित्रों का हजारों करोड़ का ऋण माफ कर रहे है उन्हें गरीबों के लिये चलाने वाली योजना मुफ्त की रेवड़ी लगती है। भाजपा के द्वारा अपने घोषणा पत्र को मोदी की गारंटी बताने का मतलब ही यही है कि भाजपा उसको पूरा नहीं करेगी इसकी गारंटी है। जो लोग धान पर बोनस देने का विरोध करते थे, जो लोग भूपेश सरकार के 2500 रू. देने का विरोध कर रहे थे, अब स्वयं धान की कीमत अपने घोषणा पत्र में घोषित करने को मजबूर हो गये है। कांग्रेस का मानना है कि प्रगति की दौड़ में पिछड़े वर्गों को विशेष रियायत देकर उनको बराबरी में लाकर खड़ा करना, हर लोकतांत्रिक सरकार का कर्तव्य है यही कारण है कि कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में सभी वर्गों को ध्यान में रखा है। कांग्रेस के घोषणा पत्र में शहरी और ग्रामीण दोनों का ध्यान रखा गया है।

दूसरे फेज में 1.63 करोड़ मतदाता करेंगे मतदान, 70 विधानसभा क्षेत्रों में डाले जाएंगे वोट

रायपुर। राज्य में विधानसभा की कुल 90 सीटें है, जिनमें से पहले चरण में 20 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान हो चुका है और दूसरे चरण में 70 विधानसभा क्षेत्रों में मतदान होने वाला है।इसके लिए सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक का समय निर्धारित किया गया है। केवल एक विधानसभा क्षेत्र बिन्द्रानवागढ़ के नौ मतदान केंद्रों कामरभौदी, आमामोरा, ओढ, बड़े गोबरा, गंवरगांव, गरीबा, नागेश, सहबीनकछार और कोदोमाली में सवेरे सात बजे से दोपहर तीन बजे तक मतदान होगा। इसके अलावा बिन्द्रानवागढ़ के शेष मतदान केंद्रों में अन्य 69 विधानसभा क्षेत्रों की तरह सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक वोट डाले जाएंगे।राज्य में विधानसभा आम निर्वाचन के लिए दूसरे चरण में मतदान वाले 70 विधानसभा क्षेत्रों में कुल 958 उम्मीदवार मैदान में हैं। दूसरे चरण में राज्य के कुल एक करोड़ 63 लाख 14 हजार 479 मतदाता अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगे। इनमें 81 लाख 41 हजार 624 पुरुष मतदाता, 81 लाख 72 हजार 171 महिला मतदाता तथा 684 तृतीय लिंग मतदाता शामिल हैं।

प्रत्यक्ष हार देख अब गुंडई करने लगे : केदार नाथ

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता केदारनाथ गुप्ता ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के लोग गृह लक्ष्मी और महतारी की महत्ता और गौरव को जानते हैं। अगर जानते तो क्या कांग्रेसी गृह लक्ष्मी से मारपीट करते? उन्होंने कांग्रेस प्रत्याशी अपनी प्रत्यक्ष हार को देखकर बौखला रहे हैं। आम जनता के साथ दुर्व्यहार करने के साथ ही मारपीट पर उतारु हो रहे हैं। भाजपा प्रवक्ता केदारनाथ गुप्ता ने कहा कि कांग्रेस के वर्तमान विधायक व कांग्रेस प्रत्याशी यूडी मिंज द्वारा कुनकुरी के जोकारी गांव की महिला मंजू भगत से दुर्व्यवहार कर मारपीट की घटना को रेखांकित करते हुए कहा कि उसका कसूर यही था कि उसने अपना घर कांग्रेस कार्यकर्ताओं को चुनाव कार्यालय के लिए देने से मना कर दिया। कांग्रेस प्रत्याशी यूडी मिंज ने महिला मंजू भगत को दोबारा विधायक बनने के बाद देख लेने की धमकी दी। इस घटना के दौरान महिला का पति रामेश्वर भगत घर पर नहीं थे। इस बीच मंजू वीडियो बनाने लगी तो कांग्रेस प्रत्याशी मिंज ने गस्से में आकर उसका मोबाइल पटक दिया और धक्का मुक्की करते मारपीट की। तुम भाजपा के लोग हो कहते हुए निकल गया। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। अब वे सफाई देते घूम रहे हैं। जबकि कांग्रेस प्रत्याशी यूडी मिंज महिला से बात करने के दौरान वीडियो बनाने पर उसे रोकते हुए दिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा यह मांग करती है।

राजभवन का दुरुपयोग कर रही है भाजपा: सीएम भूपेश

रायपुर। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आरक्षण विधेयक को राजभवन में रोके जाने को लेकर एक बार फिर बयान दिया है। मीडिया के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि ये प्रजातंत्र के लिए नुकसानदायक है।सीएम भूपेश से जब विधेयक को रोकने पर चीफ जस्टिस की टिपण्णी से जुड़ा एक सवाल किया गया था। जिसके जवाब में मुख्यमंत्री बघेल ने कहा कि विधेयक को रोकने पर चीफ जस्टिस ने जो टिप्पणी की है वो बहुत गंभीर है।

पंजाब, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ में भी एक दर्जन बिल अटके पड़े है।ये राजभवन में अटका हुआ है, भारतीय जनता पार्टी राज्यपाल राजभवन के माध्यम से सब कुछ कंट्रोल करना चाहती है, ये प्रजातंत्र के लिए नुकसानदायक है।

दरअसल मुख्यमंत्री भूपेश बघेल आज अपने दौरे पर रवाना होने से पहले मीडिया से चर्चा के दौरान कई मुद्दों में बात की। उन्होंने कहा कि आज बिंद्रानवागढ़, राजिम, नगरी, सिहावा, उसके बाद धमतरी कुरुद विधानसभा का दौरा है। कल सभी विधानसभा में लोगों में जबरदस्त उत्साह था, सभी लोग कांग्रेस के पक्ष में मतदान करने के लिए तैयार बैठे है।सीएम भूपेश बघेल ने अमित शाह द्वारा रोड शो में दिए बयान को लेकर कहा कि विष्णुदेव साय आदिवासी नेता है, उसको आदिवासी दिवस के दिन पद से मुक्त किये थे, उनका कद उसी दिन जीरो कर दिए थे। ऐसे में इनकी बातों पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि अमित शाह ने कहा नगरनार नहीं बेचेंगें इसकी क्या गारंटी है ? नगरनार बेचने वाली सूची में है, ये सब चुनाव के लिए जुमलेबाजी है, और क्क्ष्क्क में जुमले बाज लोग है। इनकी बातों पर छत्तीसगढ़ की जनता विश्वास नहीं करती है।

बैकुंठपुर में सीएम भूपेश बघेल ने ली चुनावी सभा

कोरिया. सीएम भूपेश बघेल कांग्रेस प्रत्याशियों के पक्ष में लगातार धुंआधार प्रचार कर रहे. सीएम बघेल ने आज बैकुंठपुर विधानसभा क्षेत्र में चुनावी सभा ली. इस दौरान उन्होंने छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में जीत के बाद रायगढ़ और कोरिया को 2 नए संभाग बनाने की घोषणा की>

पूर्व सीएम डॉ. रमन और असम के सीएम हिमंता बिस्वा शर्मा करेंगे सभा

रायपुर। भाजपा का गढ़ माने जाने वाले बिंद्रा नवागढ़ में बीजेपी के दो स्टार प्रचारक नेता कल आमसभा को संबोधित करेंगे. पूर्व सीएम रमन सिंह झाखरपारा में तो असम के सीएम हिमंता बिस्वा शर्मा गुरुजी भांटा में गोवर्धन मांझी के पक्ष में वोट करने के लिए लोगो से अपील करेंगे.

बता दें कि रमन सिंह झाखरपारा में ठीक उसी जगह पर सभा लेंगे जहां दो दिन पहले सीएम भूपेश बघेल ने सभा की थी. असम के सीएम हिमंता बिस्वा शर्मा के बेबाक अंदाज से कायल कई समर्थक ऐसे भी हैं जो उन्हें सुनने के लिए बेताब है. कट्टर हिंदूवादी नेताओं में सुमार विश्व शर्मा को सुनने भारी भिड़ जुट सकती है.

सत्ता में रहने वाले कांग्रेस के पक्ष में बह रही हवा इस बार बिंद्रानवागढ़ में मुकाबला टक्कर का कर दिया है. बिंद्रा नवागढ़ में पिछले तीन बार लगातार भाजपा जीत दर्ज कराई है. कूल 13 चुनाव में शानदार 9 बार अपना विधायक बना कर बिंद्रा नवागढ़ को अपना गढ़ बना लिया है. कांग्रेस जहा गढ़ जितने जोर आजमाइश कर रही है, वहीं भाजपा भी गढ़ बचाने कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती. इसलिए सीएम के कार्यक्रम के बाद उसी ओहदे के दो स्टार प्रचारक का कार्यक्रम भाजपा ने तय किया है.

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.